श्री जिनसहस्रनाम विधान

(वृहद् आदिनाथ विधान)

श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार
आचार्य गुप्तिनंदी

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
C/o धर्मराजश्री तपोभूमि दिगम्बर जैन ट्रस्ट, धर्मतीर्थ
पोस्ट-धर्मतीर्थ मार्ग, कचनेर अतिशय क्षेत्र के पास
तालुका, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
www.jainacharyaguptinandiji.org
E-mail : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम : श्री जिनसहस्त्रनाम विधान (वृहद् आदिनाथ विधान)
श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान

आशीर्वाद : गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
: वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

संघस्थ : मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी

विशेष सहयोग : आगमस्वरा आर्यिका आस्थाश्री माताजी

संघस्थ : क्षु. श्री धर्मगुप्तजी, क्षु. श्री शांतिगुप्तजी
क्षु. धन्यश्री माताजी, क्षु. तीर्थश्री माताजी, ब्र. केशर अम्माजी

सर्वाधिकार सुरक्षित : रचनाकाराधीन

प्रकाशन वर्ष : 2020

संस्करण : प्रथम 1000

प्रकाशक : श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Email : dharamrajshree@gmail.com

प्राप्ति स्थान
1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ
2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332
3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288
4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770
5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922
6. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर Mob. : 9829050791
Email : rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषय	रचयिता	पेज नं.
1.	आशीर्वाद	ग.ग. कुन्थुसागरजी	4
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें	वैज्ञानिक आचार्य कनकनन्दीजी	5
3.	आशीर्वाद	प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनंदीजी	7
4.	सब सुखकर्त्ता श्री जिननाम	आचार्य गुप्तिनंदीजी	8
5.	भक्ति मुक्ति का रास्ता है	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	11
6.	आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव का जीवन परिचय	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	13
7.	विधान मंडल		23
8.	विनय पाठ		24
9.	पूजा प्रारम्भ		25
10.	ऋद्धि मंत्र		30
11.	श्री नित्यमह पूजा		31
12.	श्री जिनसहस्रनाम पूजा विधान		35
13.	श्री लघु आदिनाथ विधान प्रारम्भ		40
14.	श्री जिनसहस्रनाम (वृहद् आदिनाथ) विधान प्रारम्भ		52
15.	जयमाला		172
16.	जिनसहस्रनाम मंत्र		174
17.	प्रशस्ति		194
18.	आरती		195
19.	सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान		196
20.	प्रशस्ति		208
21.	आरती		209
22.	श्री तीस चौबीसी विधान नाममंत्र		210
23.	श्री गणधर वलय विधान नाममंत्र		226
24.	श्री विद्याप्राप्ति विधान मंत्र		252
25.	अर्घावली		254
26.	आचार्य गुप्तिनंदी पूजा	आर्यिका आस्थाश्री	256
27.	हवन विधि		260
28.	समुच्चय अर्घ		269
29.	शांतिपाठ (हिन्दी), विसर्जन पाठ		270-271
30.	साहित्य सूची		272

आशीर्वाद

प्रसन्नता इस बात की है कि हमारे शिष्य **आचार्य गुप्तिनंदीजी** ने अनेक छोटे–बड़े विधान लिखे हैं एवं अनेक विधानों का संपादन किया है। **आचार्य गुप्तिनंदीजी** द्वारा अब **'श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान', 'लघु आदिनाथ विधान' (श्री जिन अष्टोत्तर शत विधान), 'वृहद् आदिनाथ विधान'** की रचना की गई है। विधान करने से महापुण्य बंधता है, कर्मों की निर्जरा होती है। आचार्यश्री ने यह कार्य बहुत ही अच्छा किया है। वे आगे और भी इसी तरह रचना करते रहें, आपका क्षयोपशम ज्ञान बढ़ता रहे, ऐसा मेरा आशीर्वाद है।

– ग.ग. आचार्य कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

(तर्ज - अजर-अमर....)

अरिहंताय नमो नमः,. अनन्ताय नमो नमः, तीर्थंकराय नमो नमः।
नमो नमः हे नमो नमः, सर्व जिनेन्द्राय नमो नमः, सर्वज्ञाय नमो नमः (धुन) ॥1॥
सर्वज्ञाय नमो नमः, शुद्धात्मने नमो नमः, परमेष्ठिने नमो नमः ॥2॥ नमो..
परमसुखाय नमो नमः, केवलिने नमो नमः, विरागाय नमो नमः ॥3॥ नमो..
शुद्धाय नमो नमः, बुद्धाय नमो नमः, चिन्मयाय नमो नमः ॥4॥ नमो..
कल्याणाय नमो नमः, मंगलाय नमो नमः, श्री शिवाय नमो नमः ॥5॥ नमो..
शंकराय नमो नमः, पावनाय नमो नमः, पवित्राय नमो नमः ॥6॥ नमो..
अजराय नमो नमः, अमृताय नमो नमः, शंभवाय नमो नमः ॥7॥ नमो..
शाश्वताय नमो नमः, क्षेत्रज्ञाय नमो नमः, स्थविराय नमो नमः ॥8॥ नमो..
वरिष्ठाय नमो नमः, गरिष्ठाय नमो नमः, सर्वात्माय नमो नमः ॥9॥ नमो..
निर्लेपाय नमो नमः, विमलाय नमो नमः, स्वतंत्राय नमो नमः ॥10॥ नमो..
पद्मेशाय नमो नमः, विशोकाय नमो नमः, पूजिताय नमो नमः ॥11॥ नमो..
विवेकाय नमो नमः, महेश्वराय नमो नमः, महासत्त्वाय नमो नमः ॥12॥ नमो..

महात्माय नमो नमः, शमात्माय नमो नमः, सुव्रताय नमो नमः ॥13॥ नमो..
सदोदयाय नमो नमः, सदातृप्ताय नमो नमः, सदाशिवाय नमो नमः ॥14॥ नमो..
पद्मगर्भाय नमो नमः, लोकेश्वराय नमो नमः, विशिष्टाय नमो नमः ॥15॥ नमो..
परात्मज्ञाय नमो नमः, परात्पराय नमो नमः, विशिष्टाय नमो नमः ॥16॥ नमो..
कलाधराय नमो नमः, जगन्नाथाय नमो नमः, गुढात्माय नमो नमः ॥17॥ नमो..
शान्ताय नमो नमः, भूतहिताय नमो नमः, प्रजाहिताय नमो नमः ॥18॥ नमो..
विश्वगुरुवे नमो नमः, परमेश्वराय नमो नमः, सुगताय नमो नमः ॥19॥ नमो..
प्रभामयाय नमो नमः, हितंकराय नमो नमः, वागीश्वराय नमो नमः ॥20॥ नमो..
लोकोत्तराय नमो नमः, जगद्धिताय नमो नमः, मोक्षपतये नमो नमः ॥21॥ नमो..
नमो नमो हे ! नमो नमः सर्व जिनेन्द्राय नमो नमः, सर्वज्ञाय नमो नमः।

हमारे संघस्थ **आचार्य गुप्तिनंदी** जब मेरे पास थे तब से पद्य-विधा में वे भी लिखते आ रहे हैं। अभी तीन विधानों की रचना आपके द्वारा हुई है। इसके माध्यम से भव्य जीव भगवान बने ऐसी शुभ-भावना है।

आचार्य गुप्तिनंदी को प्रति नमोऽस्तु सहित मेरी मंगल कामना है कि आप स्व-पर-विश्वकल्याण के लिए निस्पृह भाव से साधना रत रहें।

- आचार्य कनकनन्दी

आशीर्वाद

आचार्य गुप्तिनंदीजी की लेखनी से निःसृत रचनायें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज के लिये उपहार ही नहीं, वरदान हैं।

आपकी रचनाओं में जैनागम का सार, पौराणिक, ऐतिहासिक, धार्मिक कथाओं का समावेश एवं कर्म सिद्धान्त, पुण्य–पाप के फल का स्पष्ट दर्शन मिलता है।

जब हम आपके द्वारा रचित पूजा–विधान को आद्योपांत पढ़ते हैं तब हमें आपकी निष्पक्षता पूर्वक आर्षमार्ग से आप्लावित लेखनी का उल्लेख–आपकी रचनाओं में प्राप्त होता है।

धर्मतीर्थ के प्रणेता आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी की प्रेरणा से बन रहे श्रीधर्मतीर्थ का एवं अभिनव रचित गद्य–पद्यमय रचनाओं की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि होती रहे, ऐसा हमारा आशीर्वाद शुभकामनायें हैं।

–प्रज्ञाश्रमण आचार्य देवनन्दी

श्री णमोकार तीर्थ

सब सुखकर्त्ता श्री जिननाम

दोहा– सहस्र नाम विधान की, महिमा अपरम्पार।
नाम मात्र जिनदेव का, करे पाप परिहार।।

स्तोत्रों में सबसे वृहद् **'श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्र'** है। श्रीमद् आदिपुराणकर्त्ता श्री जिनसेनाचार्य जी के अनुसार स्वयं सौधर्म इन्द्र सभी तीर्थंकर जिनेन्द्र के सभी कल्याणकों में आकर बड़े ही भक्ति भाव से **'श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्र'** की स्वयं रचना करता है। उनका महास्तवन करके सातिशय पुण्य का संचय करता है। सौधर्म इन्द्र का यह विशेष पुण्य ही उसे एक भवावतारी बना देता है। इसलिए सम्पूर्ण जैन संस्कृति में 'श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्र' का विशेष महत्त्व है। अधिकतर आचार्य–मुनिगण–आर्यिकायें–क्षुल्लक–क्षुल्लिकायें–विद्वान–श्रावक–श्राविकायें इसका विशेष पाठ करते हैं। जिन्हें इसका उच्चारण नहीं आता है वे भी पूजा आरम्भ विधि में **'उदक–चंदन......जिननाम महंयजे'** अर्घ बोलकर इसका अर्घ अवश्य चढ़ाते हैं।

इसके महत्त्व को जानते समझते हुए हमारे संघ की 'शारदा सुता' ''आगमस्वरा'' आर्यिका आस्थाश्री माताजी' ने मुझसे यह विधान लिखने का निवेदन किया। वैसे माताजी स्वयं एक श्रेष्ठ कवियित्री हैं, मधुर कंठ की धनी हैं। उन्होंने अपने सभी गुरुओं के आशीर्वाद से छोटे–बड़े अनेक विधानों की व कथा साहित्य की रचनायें की हैं। फिर भी उन्होंने मुझे यह पुण्यार्जन करने अर्थात् ग्रन्थ सृजन के लिये प्रेरित किया। इस हेतु उन्हें हमारा विशेष आशीर्वाद है। उनकी लेखनी पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने तक अनवरत चलती रहे।

संघ सहित जब मैंने श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान के महामस्तकाभिषेक के लिए श्री धर्मतीर्थ क्षेत्र से श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला के लिये विहार किया। तब 12 वर्षों बाद श्री कुन्थुगिरी क्षेत्र में अपने भाग्य विधाता, दीक्षाप्रदाता प.पू. भारत गौरव गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव के दर्शन पाकर धन्य–

धन्य हो गया। वहीं अपने गुरु भ्राताओं से मिलकर उनके दर्शन पाकर आत्मिक आनंद की अनुभूति हुई। वहीं **सात दिगम्बर 2017** को कुन्थुगिरी में आचार्यश्री का आशीर्वाद लेकर उनके पादमूल में बैठकर **'श्री जिनसहस्रनाम विधान'** लिखना प्रारम्भ किया। श्री बाहुबली जिनेन्द्र के महामस्तकाभिषेक को साक्षात् देखने की तीव्र अभिलाषा ने पूज्य गुरुदेव के साथ अनेक-अनेक अतिसुन्दर, मनभावन, अतिशयकारी, प्राचीन तीर्थों के दर्शन करा दिये। इन्हीं के साथ लगभग 380 से अधिक पिच्छीधारी दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों, आचार्य संघों का वात्सल्य मिलन, महासम्मेलन में सम्मिलित होने का महासौभाग्य मिला। विहार में मार्गश्रम करते हुए भी निरन्तर विधान का सृजन कार्य चलता रहा। इस बीच **'श्री भैरव पद्मावती विधान'** का लेखन व **'श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान'** का सम्पादन भी किया और नागपुर शहर में ऐतिहासिक प्रभावना के साथ चातुर्मास भी सम्पन्न हुआ। इस बीच निरन्तर 'श्री जिनसहस्रनाम' अपर नाम 'वृहद् वृषभनाथ विधान' का सृजन कार्य भी चलता रहा। जब-जब भी इस विधान का लेखन कार्य करता था तब बड़ा ही आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त होता था। श्री वृषभनाथ भगवान के 108 और 1008 नामों का रहस्य पढ़ते लिखते हुए उनकी आध्यात्मिक शक्ति को समझा। प्रभु के प्रत्येक नाम बड़े ही आध्यात्मिक रहस्यों से भरे हुए हैं। हर एक नाम की अतिशय शक्ति अपार है। इसीलिए हमारे कवि ने बड़े विश्वास से कहा है-

नाथ तिहारे नाम से, अघ छिन माहि पलाय।
ज्यों दिनकर परकाश तें, अंधकार विनशाय॥

अर्थात् हे जिनेन्द्र ! देव तुम्हारा नाम लेने मात्र से सभी पाप क्षणभर में समाप्त हो जाते हैं। जैसे सूर्य के प्रकाश से अंधकार नष्ट हो जाता है। भगवान के नाम मंत्रों की अचिंत्य शक्ति है। जन्म से लेकर मृत्यु समाधि तक हर एक समस्या का निवारण इस विधान के माध्यम से हो सकता है। जीवन की हर समस्या का समाधान इस विधान में छिपा हुआ है। केवल उन मंत्रों के जाप और ध्यान लगाने की आवश्यकता है। विधान लिखते-लिखते धर्मतीर्थ क्षेत्र में गुड़ी

पाड़वा के दिन **6 अप्रैल 2019** को श्री इच्छापूरक श्री आदिनाथ भगवान के सामने ही यह विधान सम्पूर्ण हुआ। 16 महीनों में यह विधान का लेखन कार्य पूरा हो गया। यह हमारे दीक्षा प्रदाता आचार्य श्री कुन्थुसागर जी गुरुदेव व शिक्षाप्रदाता आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव का ही आशीर्वाद है। साथ में आर्यिका आस्थाश्री माताजी का विशेष सहयोग रहा है। सभी संघस्थ साधु साध्वियों का भी यथायोग्य सहयोग है। सभी को हमारा यथायोग्य आशीर्वाद।

प्रस्तुत विधान में एक साथ ही (1) तैंतिस अर्घ का **'सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान'** (2) 108 अर्घ का छोटा **'लघु आदिनाथ विधान'** (श्री जिन अष्टोत्तर शतक विधान) और 1008 अर्घों का **'वृहद् आदिनाथ विधान' (महामृत्युंजय विधान)** मूल नाम **'श्री जिनसहस्रनाम विधान'** दिये हैं। तीनों ही विधान सरल, सुरुचिकर व अतिशय प्रभावशाली हैं। इस विधान से अंतराय कर्म सहित सभी कर्मों का बंधन समाप्त होता है। विशेषकर अपमृत्यु का विनाश होता है। क्रम से मृत्यु पर विजय प्राप्त होती है।

इनके सुनने मात्र से सभी कठिन से कठिन कार्य भी सरल सहज सिद्ध होते हैं।

इनके व्रत में विधी सहित जघन्य से 10 और उत्कृष्ट रूप से 1008 उपवास आदि करने चाहिए और उपवास के दिन षड़ांग जिन पूजा, महाभिषेक करना चाहिए। इसकी साधना से अन्तराय कर्म का निवारण होता है और आगे अरिहंत सिद्ध पद की प्राप्ति होती है। विशेष उत्साह से करने पर तीर्थंकर पद की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः जीवन में अधिक से अधिक यह विधान अवश्य करें।

इस विधान के प्रेरक, पुण्यार्जक, पाठक, व्रतिक, प्रेक्षक, प्रकाशक, मुद्रक व आम भक्त समुदाय सभी को हमारा आशीर्वाद।

वंदे तद्गुण लब्धये, जिनगुण सम्पत्ति होउ मज्झं।

–आचार्य गुप्तिनंदी

धर्मतीर्थ

भक्ति मुक्ति का रास्ता है

अनंत गुणों के भंडार होते हैं तीर्थंकर भगवान। अनंत गुणों के धारी भगवान का जब धरती पर जन्म होता है। तब सौधर्म इन्द्र उनका जन्माभिषेक करने के पश्चात् 1008 नामों से उनकी स्तुति करता है। भगवान के जो नाम हैं वैसे ही उनके गुण हैं। हरेक नाम को भगवान सार्थक कर देते हैं। सौधर्म इन्द्र हर कल्याणक में 1008 नाम से ही स्तुति भक्ति करता है।

भगवान के एक-एक नाम में बहुत बड़ी अतिशय शक्ति है। जिसका वर्णन हमारे आचार्यों ने ग्रंथों में किया है। प्रभु के नाम मंत्र का जाप करने से हमारे भव-भव के कर्मों के बंधन ढ़ीले पड़ जाते हैं, दुःख संकट से मुक्ति मिल जाती है।

यदि भगवान के एक नाम में इतनी शक्ति है फिर जब एक साथ ये 1008 नाम का जाप किया जाय, पाठ किया जाय या विधान किया जाय तो वह क्या फल देगा, उसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। हर दिन भगवान के जिनसहस्रनाम स्तोत्र को भक्ति से पढ़ना चाहिये। जो भक्त हर दिन पाठ नहीं भी पढ़ते हैं तो उनके नाम का अर्घ तो अवश्य चढ़ाते हैं। साधु हो या श्रावक सभी सहस्रनाम पाठ को बड़ी भक्ति से पढ़ते हैं। भगवान के 1008 नामों पर **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव** ने बहुत ही सुन्दर विधान लिखा है। गुरुदेव ने इसके पहले भी अनेक विधानों की रचना की है परन्तु ये विधान उन सब विधानों से हटकर है। अलग है। भगवान के हर नाम का क्या अर्थ है, उन नामों के अर्थ को छंदोबद्ध किया है। सब भक्त इस विधान से भगवान के सहस्रनाम पाठ के अर्थ को समझ सकेंगे।

गुरुदेव ने अपनी पहचान एक श्रमण कवि के रूप में बनाई है। जो अपने शब्दों को छंद, मात्रा, शब्द, अर्थ आदि को ध्यान में रखते हुये रचना करता है। वही वास्तविक कवि कहलाता है। यह प्रतिभा गुरुदेव में विशेष रूप से है। वे हर लाईन में मात्रा का विशेष ध्यान देते हैं।

प्रस्तुत **श्री जिनसहस्रनाम विधान** में **'एक पर दो फ्री'** की नीति को अपनाते हुए आचार्यश्री ने इसके साथ ही **(1) 'श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान' (2) लघु आदिनाथ विधान** भी लिखा है और ये तीनों एक साथ ही प्रकाशित हो रहे हैं। विशेषकर ये तीनों ही विधान दक्षिण भारत के प्रतिष्ठाचार्यों की प्रार्थना पर आचार्यश्री ने लिखे हैं। हर शब्द का अर्थ सरलता से भक्तों को समझ में आ सके, कोई भी व्यक्ति आराम से गा सके। ऐसे विशेष शब्दों को सुन्दर ढंग से गुरुदेव ने तीनों विधान में प्रस्तुत किया है। उनके जैसी कला, उनके समान सरलता, समता, ज्ञान आदि गुण मेरे अन्दर भी प्रगट हो, इन्हीं शब्दों के साथ आचार्य भगवन् श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमोस्तु करती हूँ।

प्रभु से प्रार्थना करती हूँ, आपकी लेखनी अनवरत रूप से भगवान की भक्ति में चलती रहे। आपको आदिनाथ भगवान के समान जिनपद की प्राप्ति हो। सभी भक्त इस विधान को करके तीर्थंकर जैसे महापद के अधिकारी बने।

पूजक, पाठक, प्रकाशक, मुद्रक सभी को आशीर्वाद।

-आर्यिका आस्थाश्री माताजी

(संघस्थ आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव)

धर्मतीर्थ

आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव का जीवन परिचय

आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव के जीवन चारित्र पर कुछ शब्द समर्पित करती हूँ। किसी भी गुरु के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालना यानि सूरज को दीपक दिखाने के समान है। फिर भी मैं आप सबके लिए संक्षिप्त में उनका परिचय लिख रही हूँ।

आचार्यश्री का जन्म मध्य प्रदेश की राजधानी झीलों की नगरी भोपाल में 1 अगस्त 1972 को हुआ। आपकी माता का नाम त्रिवेणी देवी और पिता का नाम श्री कोमलचंद था। आपके गृहस्थ जीवन में बड़े और छोटे दो भाई थे। दो बहिने थी, भरा पूरा परिवार था। आपके माता-पिता बड़े ही धर्मात्मा थे, हर दिन मंदिर जाते थे। सभी बच्चों को भी हर दिन मंदिर और पाठशाला में भेजते थे। आपके घर पर गुरुओं की सेवा, वैयावृत्ति, आहारदान आदि होता था।

जब आप छोटे थे तब आपके यहाँ आचार्य सन्मतिसागरजी क्षुल्लक अवस्था में आये, आपके घर पर एक क्षुल्लक जी का आहार हुआ। आपके बड़े भैया क्षुल्लक जी का कमंडल लेकर घर के बाहर खड़े थे। उनसे आपने बोला भैया आपने तो आहार दिया है। आप कमंडल मेरे को दे दो। उन्होंने कमण्डल देने से मना कर दिया। आपने कहा कोई बात नहीं तुम कमंडल ले लो। मैं क्षुल्लक जी की पिच्छी ले लेता हूँ। आपने ऐसा बोलकर खिड़की में रखी हुई पिच्छी को बाहर से उठा लिया और गली से बाहर आ गये।

जब क्षुल्लक जी का आहार हो गया, उनको पिच्छी देने का समय आया तो वहाँ पिच्छी नहीं दिखाई दी, सब लोग अन्दर ही पिच्छी ढूँढ़ रहे थे। बाहर से आपके बड़े भाई ने आवाज दी। क्षुल्लक जी की पिच्छी तो राजेन्द्र के पास है। तब बड़े मुश्किल से आपको समझा कर पिच्छी ली और क्षुल्लक जी को दी गयी, क्षुल्लकजी ने कहा- ये आगे जाकर बहुत बड़ा संत बनेगा। उस समय आप बारह साल के थे तब आप क्षुल्लक जी के साथ में बैरागढ़ तक चले गये थे। लेकिन आपके पिताजी आपको समझा कर पुनः घर लेकर आ गये।

उसके बाद बाल्यावस्था से ही आप भगवान का अभिषेक पूजा करने को जिन मन्दिर जाने लगे, जिन भक्ति में आपकी विशेष रूचि प्रगट हो गई। दशलक्षण

पर्व के समय भजन कविता मंदिर में बोलते थे। हर कार्यक्रम में भाग लेते थे और पुरस्कार प्राप्त करते थे। साथ ही आपने एन.सी.सी. में सैनिक छात्र बनकर युद्धाभ्यास किया। आपने महाविद्यालय तक पढ़ाई की। 17 साल की उम्र में आपको पुनः उन्हीं क्षुल्लकजी के आचार्य के रूप में दर्शन हुये।

उस वर्ष विद्याभूषण आचार्य श्री सन्मतिसागरजी का भोपाल में चातुर्मास सम्पन्न हुआ। पूरे चातुर्मास में आप एक बार भी उनके दर्शन करने नहीं गये। चातुर्मास के अन्त में जब घर पर चौका लगा, तब आपने भी आचार्यश्री का पड़गाहन किया। आपके तीव्र पुण्योदय से उस दिन आचार्यश्री को आपने ही पड़गाहन किया। आप बहुत प्रसन्न हुये। आपने भक्ति से पाद-प्रक्षालन पूजन आदि किया, आचार्यश्री का आहार शुरू हुआ। लेकिन किसी के हाथ में नेलपालिश देखकर आचार्यश्री ने अंतराय कर दिया। आपको बहुत दुःख हुआ। सभी घर वाले भी बहुत दुःखी हुये।

उस दिन जब आप आचार्यश्री का कमंडल लेकर उन्हें छोड़ने गये तो फिर घर पर वापस नहीं आये। आपकी दृढ़ता देख माता-पिता ने भी बड़े दुःखी मन से आपको विदाई दी।

आपने गृहत्याग के साथ ही दो प्रतिमा के व्रत ग्रहण कर लिये। 5 माह तक आचार्यश्री के साथ ब्रह्मचारी बनकर विहार किया।

एक दिन आपकी पढ़ने की जिज्ञासा को देखते हुये विद्याभूषण आचार्य श्री सन्मतिसागरजी ने आपको गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी के संघ में भेज दिया। उनका आशीर्वाद लेकर आप सोनागिर सिद्धक्षेत्र पर आचार्य विमलसागरजी के दर्शन के लिये आये, उनसे आशीर्वाद माँगा। आचार्य भगवन् बोले-मैं तुझे क्या आशीर्वाद दूँ ? जा तेरी बहुत जल्दी दीक्षा होगी। उनका आशीर्वाद, उनकी वाणी को ध्यान में रखते हुये आप आचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव के पास चांदनी चौक, दिल्ली में आये। संघ का प्रेम वात्सल्य देखकर अति प्रसन्न हुये। आपने आचार्य कनकनंदीजी गुरुदेव की बहुत सेवा की। उनकी प्रेरणा से हर दिन ग.ग. श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव को मुनिदीक्षा के लिये हरा श्रीफल चढ़ाते थे। गुरुदेव ने आपसे आपका पूर्व परिचय पूछा, फिर आपको क्षुल्लक बन जाओ

पहली बार ऐसा बोले। दूसरी बार ऐलक दीक्षा के लिये बोला, आपकी प्रबल भावना और विनय देखकर अंत में वे मुनिदीक्षा देने को तैयार हो गये। द्वय आचार्यों के आशीर्वाद से आपको सात दिन के अंदर ही मुनि दीक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हो गया।

रोहतक नगर में आचार्य श्री कुंथुसागरजी के कर-कमलों से आपने 22-7-1991 में मुनि दीक्षा प्राप्त की और **ब्रह्मचारी राजेन्द्र से मुनि गुप्तिनंदी** बन गये। फिर विद्यार्जन हेतु आप आचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव के साथ सात साल तक रहे।

आपकी प्रभावना को देखते हुये आपके दीक्षा गुरु ने 28 वर्ष की उम्र में आपको आचार्य पद का पत्र 13-10-2000 को धनतेरस के शुभ मुहूर्त में भेज दिया। चतुर्विध संघ और पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी आदि भक्तों के आग्रह पर 27-5-2001 को इन्दौर के गोम्मटगिरी क्षेत्र पर दो आचार्यों (आचार्य श्री सीमंधरसागरजी, आचार्य श्री शान्तिसागरजी, उपाध्याय श्री निजानन्दसागरजी, मुनि श्री कवीन्द्रनन्दीजी, मुनि श्री कुलपुत्रनंदीजी आदि चतुर्विध संघ की उपस्थिति में आपका आचार्य पदारोहण हुआ।

इन्दौर गोम्मटगिरी में स्वतंत्र रूप में आपने प्रथम आदिनाथ भगवान का पंचकल्याणक कराया, खण्डवा में नेमीनाथ भगवान का पंचकल्याणक कराया।

औरंगाबाद महाराष्ट्र में आपने महती धर्म प्रभावना की, अनेक विधान, संस्कार शिविर, मौजी बंधन संस्कार, भाग्योदय संस्कार कराये। औरंगाबाद के बच्चे-बच्चे के दिल में आप बसे हुये हैं। आपकी प्रेरणा से औरंगाबाद जैन समाज को श्री गणधर विद्यापीठ के रूप में विशाल वास्तु प्राप्त हुई है। इसमें बने एक विशाल सभाग्रह को श्री पार्श्वनाथ खण्डेलवाल दिगम्बर जैन पंचायत, राजाबाजार औरंगाबाद ने **'आचार्य श्री गुप्तिनंदी सभाग्रह'** नाम दिया है।

यहाँ पर आपने अनेक मंदिरों का शिलान्यास कराया, नीव से लेकर शिखर कलशारोहण कराया है। यहाँ पर अनेक भव्य ऐतिहासिक पंचकल्याणक कराये हैं। आपके सबसे अधिक चातुर्मास भी औरंगाबाद में हुये हैं और सर्वाधिक पंचकल्याणक भी यहाँ पर हुये हैं।

आप अभी तक पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सब तरफ विहार कर चुके हैं। आप जहाँ-जहाँ भी गये हैं वहाँ पर समाज को एकता के सूत्र में बाँधा। धर्म के अच्छे संस्कार दिये।

आपने अनेक दीक्षायें दी हैं। उसमें 6 साधकों को मुनि दीक्षा दी है। उनसे सर्वप्रथम मुनि श्री समाधिगुप्त, मुनि श्री सुयशगुप्त, मुनि श्री चन्द्रगुप्त, मुनि श्री विमलगुप्त, मुनि श्री विनयगुप्त, मुनि श्री महेन्द्रगुप्त, इनमें से दो मुनियों की समाधि आपके सान्निध्य में हुई हैं। पाँच मुनियों को पहले आपने क्षुल्लक दीक्षा दी फिर उनको मुनि दीक्षा भी दी।

अभी वर्तमान क्षुल्लक सुधर्मगुप्तजी, क्षुल्लक धर्मगुप्तजी, क्षुल्लक शांतिगुप्तजी हैं।

तीन क्षुल्लिका दीक्षा दी- क्षुल्लिका निर्मोहश्री माताजी, क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी।

गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी को पुनः आपने आर्यिका दीक्षा दी एवं निर्यापकाचार्य बनकर उनकी यम सल्लेखना कराई।

आपने चारों अनुयोगों का गहन अध्ययन किया है। ज्योतिष, वास्तु, कविता, भजन, पूजन, विधान आदि का आपको अच्छा ज्ञान है। आपने अनेक विधान लिखे हैं।

सर्वप्रथम (1) रत्नत्रय विधान वृहत् रूप में लिखा है। आपने नवग्रह स्तोत्र पर पूरे 24 तीर्थंकर पंच परमेष्ठी को ग्रहण करते हुये दूसरा (2) नवग्रह शांति विधान लिखा है। (3) पंचकल्याणक विधान, (4) विद्याप्राप्ति विधान, (5) त्रिकाल चौबीसी विधान, (6) विजय पताका विधान, (7) भैरव पद्मावती विधान, (8) वृहद् आदिनाथ विधान, (9) लघु आदिनाथ विधान (जिनसहस्रनाम विधान), (10) लघुगणधर वलय विधान, (11) सर्वसिद्धि विधान, (12) श्रुत स्कंध विधान, (13) लघु रत्नत्रय विधान, (14) पद्मप्रभु वासुपूज्य नेमीनाथ विधान, (15) नेमीनाथ विधान, (16) मुनिसुव्रतनाथ विधान, (17) अजितनाथ विधान, (18) सावधान, (19) तीस चौबीसी विधान, (20) श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान, (21) श्री सिद्धचक्र विधान (22) श्री सर्व तीर्थंकर विधान इसके अलावा

अनेक पूजायें व भजन लिखे हैं, जिनका प्रकाशन 'श्री रत्नत्रय आराधना' व 'श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता' में हो चुका है। इसके अलावा आपने 'सावधान' काव्य संग्रह भी लिखा है और संघस्थ सभी साधुओं के ग्रन्थों का सम्पादन भी किया है।

आपके कर–कमलों से अभी तक अनेक पंचकल्याणक हो गये हैं–

1. गोम्मटगिरी, इन्दौर
2. खंड्वा (धासपुरा)
3. औरंगाबाद (बालाजी नगर)
4. औरंगाबाद (हड़को)
5. औरंगाबाद (सराफा मंदिर)
6. देवलगांवराजा
7. बाराबंकी
8. सोनागिर सिद्धक्षेत्र
9. औरंगाबाद (चार मंदिरों का एक साथ में– अरहंत नगर, विष्णु नगर, आर्यनंदी कॉलोनी, कर्णपुरा)
10. औरंगाबाद (रामनगर)
11. दिल्ली (रघुवरपुरा)
12. अंजनगिरी
13. बीड़
14. बेडग
15. ग्वालियर (सिंधे की छावणी)
16. औरंगाबाद (सेठी नगर)
17. कचनेर अतिशय क्षेत्र

सूखी सेवनिया भोपाल, अतिशय क्षेत्र पदमपुरा, मालपुरा, खोखरा, कुंथुगिरी, मांगीतुंगी, णमोकार तीर्थ, पुष्पगिरी, श्रवणबेलगोला आदि अनेक ऐतिहासिक पंचकल्याणक में उपस्थित थे। आपके द्वारा अनेक स्थानों पर वेदी प्रतिष्ठायें भी सम्पन्न हुई– विष्णुनगर, आर्यनंदी कॉलोनी, रानी ऊँचे गाँव, चिन्तामणि रेजीडेंसी, खण्डवा, बीड़, नागपुर (दुर्गावती चौक)।

आपकी प्रेरणा से **'धर्मतीर्थ क्षेत्र'** बन रहा है, भविष्य में इसका पंचकल्याणक भी बहुत जल्दी होगा। आपकी सरलता, गुणवत्ता, प्रतिभा, प्रवचन शैली, कवित्व शक्ति देखते हुये, अनेक आचार्यों ने एवं दीक्षा शिक्षा गुरुओं ने अनेक पदवियों से सुशोभित किया। कई आचार्यों ने अनेक पद दिये। समाज के भक्तों ने भी पद प्रदान किये। किन्तु आप ख्याति नाम अहंकार से हमेशा दूर रहते हैं। आपके अन्दर सरलता है–आप प्रेम, वात्सल्य, वाणी की मिठास से सबको मोह लेते हैं। जो भक्त एक बार आपसे जुड़ जाता है तो फिर वह आपकी भक्ति में हमेशा तत्पर रहता है।

(1) प्रथम मुनि पद प्रदाता– आपके दीक्षा गुरु परम पूज्य भारत गौरव गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव जिन्होंने मुनि दीक्षा दी, मुनि पद प्रदान किया 22–7–1991 रोहतक में।

(2) प्रज्ञायोगी– आपके शिक्षा गुरु यानि वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव ने आपको यह पद दिया है 1997 सागवाड़ा में।

(3) कविहृदय– बड़नगर कवि सम्मेलन में 1999 में।

(4) ज्ञान दिवाकर– इन्दौर तिलक नगर 2000 में बालाचार्य श्री योगीन्द्रसागरजी महाराज ने दी।

(5) आचार्य पद– 27–5–2001 गोम्मटगिरी, इन्दौर–आचार्य पद प्रदाता– गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव, अनुमोदक दीर्घ दीक्षित वयोवृद्ध आचार्य श्री सीमन्धर स्वामी जी, आचार्य श्री शान्तिसागर जी, उपाध्याय श्री निजानंदसागर जी, मुनि श्री कवीन्द्रनंदी जी, मुनि श्री कुलपुत्रनंदी जी आदि अनेक मुनि आर्यिका संघ। संयोजक गोम्मटगिरी इन्दौर के संस्थापक पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी।

(6) धर्मक्रांति सूर्य– सांगली में जैन समाज ने यह पद आचार्यश्री वरदत्तसागरजी, आचार्य श्री देवसेनजी आदि 40 साधु–साध्वी जन एवं लक्ष्मीसेन भट्टारक जी ने वृहद् गणधर वलय विधान में 11 हजार इन्द्र–इन्द्राणी और 30 हजार दर्शकों के बीच में दी गई। सन् 2004 में अष्टाह्निका पर्व में।

(7) व्याख्यान वाचस्पति– युवाचार्य गुणधरनंदीजी, आचार्य श्री वरदत्तसागरजी एवं आचार्य श्री देवसेनजी व चतुर्विध संघ के सान्निध्य में कल्पद्रुम विधान में दी गई सन् 2005 में।

(8) श्रावक संस्कार उन्नायक– बाराबंकी में 2009 में द्वय जिनालय के भव्य पंचकल्याणक महोत्सव में समाज ने यह पद प्रदान किया।

(9) महाकवि– रोहतक जैन समाज ने 2012 में आपकी दीक्षा भूमि पर यह पद प्रदान किया।

(10) अंजनगिरी तीर्थोद्धारक– आचार्य श्री देवनंदीजी आपके बड़े गुरु भाई ने अंजनगिरी के पंचकल्याणक में 2016 जनवरी में यह पद दिया। 56 पिच्छी की उपस्थिति में यह पद प्रदान किया।

(11) धर्मतीर्थ प्रणेता– धर्मतीर्थ पर आचार्य ससंघ ने यह पद आपको 2017 को प्रदान किया।

(12) वात्सल्य सिंधु– नागपुर जैन समाज ने 2019 में यह पद प्रदान किया।

(13) एक साथ पाँच पद प्रदान किये– ज्ञानविद्, विधान मार्तण्ड, जैन धर्म संरक्षक, धर्मतीर्थ प्रवर्तक, ज्ञानमूर्ति, ये पाँच पद आपको एक साथ गणधर विद्यापीठ में सकल जैन समाज औरंगाबाद ने बालाजी नगर में आपके पाँचवे चातुर्मास में प्रदान किया।

आपने किन-किन को दीक्षा दी, शिक्षा दी, समाधि कराई, नामकरण किया और पद प्रदान किया। एक नजर आपके द्वारा दीक्षित शिष्यों में सर्वप्रथम है–

(1) मुनि श्री सुयशगुप्तजी, उनकी क्षुल्लक दीक्षा में एक क्षुल्लक दीक्षा और हुई थी उनका नाम रखा था क्षुल्लक समाधिगुप्तजी।

क्षुल्लक दीक्षा में प्रथम शिष्य है– क्षुल्लक श्री सुयशगुप्त जी।

मुनिदीक्षा में प्रथम शिष्य मुनि श्री समाधिगुप्त जी इन दोनों की क्षुल्लक दीक्षा 16-10-2002 को औरंगाबाद (महा.) में हुई।

(3) क्षुल्लक श्री सुलभगुप्त जी, जो अभी वर्तमान में मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी के नाम से जाने जाते हैं।

(4) क्षुल्लक श्री सुधर्मगुप्तजी

(5) क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी

(6) क्षुल्लक श्री श्रवणगुप्तजी (वर्तमान मुनि श्री विमलगुप्तजी)

(7) क्षुल्लक श्री विनयगुप्तजी (वर्तमान मुनि श्री विनयगुप्तजी)

(8) क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी

वर्तमान में आपके द्वारा 8 क्षुल्लक जी में से छः मुनि बन चुके हैं और 3 मुनियों की समाधि हो चुकी है।

(1) समाधिस्थ मुनि श्री समाधिगुप्तजी (2) मुनि श्री सुयशगुप्तजी, (3) मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी, (4) मुनि श्री विमलगुप्तजी, (5) मुनि श्री विनयगुप्तजी, (6) समाधिस्थ मुनि श्री महेन्द्रगुप्तजी।

आपके द्वारा तीन क्षुल्लिका दीक्षा हुई।

(1) क्षुल्लिका निर्मोहश्री माताजी (2) क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, (3) क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी।

अभी दो क्षुल्लिका माताजी आपके साथ हैं। क्षुल्लिका निर्मोहश्री माताजी को समाधि के समय आर्यिका दीक्षा दी गई थी–आर्यिका निर्मोहश्री माताजी।

आपने 2007 में देऊलगाँवराजा में आर्यिका क्षमाश्री माताजी पर गणिनी पद के संस्कार किये। आपने अपने दीक्षा गुरु के आदेश का पालन करते हुए उनको गणिनी पद प्रदान किया।

आपने चार भव्यात्माओं की बहुत ही सुन्दर समाधि कराई। निर्यापक आचार्य का कार्य किया।

सर्वप्रथम सांगली में क्षुल्लक श्री समाधिगुप्तजी को समाधि तीन दिन पहले मुनिदीक्षा दी और नाम रखा मुनि श्री समाधिगुप्तजी, सांगली में इनकी समाधि हुई।

क्षुल्लिका निर्मोहश्री माताजी को भी समाधि के समय आर्यिका दीक्षा दी, आर्यिका निर्मोहश्री माताजी। इनकी समाधि भी आपने कराई, 15 मई 2006 को जटवाड़ा क्षेत्र पर इनकी समाधि हुई।

संघ की आत्मा अम्मुजी पूर्व नाम आर्यिका राजश्री माताजी, इनकी असातावेदनीय कर्मवशात् दीक्षा छेद हुई थी। पुनः आपने समाधि के समय आर्यिका दीक्षा देकर उत्तमार्थ प्रतिक्रमण कराया, चार दिन तक माताजी आर्यिका पद में रही। आपने निर्यापक आचार्य बनकर औरंगाबाद राजा बाजार मंदिर में इनको णमोकार मंत्र सुनाकर 7 मई 2007 को समाधि कराई।

मुनि श्री महेन्द्रगुप्तजी की यानि औरंगाबाद के निवासी परम गुरु भक्त श्रावक श्रेष्ठी श्री महेन्द्र जी सोनी को बालाजी नगर के गुप्तिनंदी त्यागी भवन में

अंत समय मुनि दीक्षा दी और उनको मंत्र सुनाते रहे। बहुत सुन्दर ढंग से आपने संबोधित किया, 4-1-2020 को उनकी समाधि कराई।

आपका अनेक भव्यात्माओं पर उपकार है। आपको ज्योतिष का अच्छा ज्ञान है। मेरी दीक्षा 17-2-1997 को अहमदाबाद खोखरा में हुई। दीक्षा होने के बाद से मैं बीमार अधिक रहने लगी। गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी एवं गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी के निवेदन पर आपने मेरी कुण्डली देखी और स्वास्थ्य अच्छा अनुकूल रहे। इस भावना से आपने ज्योतिषियों से और संघ के सभी साधुओं से विचार-विमर्श करके मेरा नामकरण संस्कार किया।

मेरा नाम आर्यिका श्रद्धाश्री था। आपने मेरा नाम श्रद्धा का पर्यायवाची 'आस्था' रखा। अभी वर्तमान में सब मुझे आर्यिका आस्थाश्री माताजी के नाम से जानते हैं, बुलाते हैं। जब से मेरा नाम परिवर्तित हुआ है, तब से मेरा स्वास्थ्य एकदम अच्छा है। नाम बदलते ही जीवन में उन्नति हुई है। मेरा नाम आपने सोनकच्छ में 10-3-2000 में बदला था।

आपके पास में एक क्षुल्लक जी आचार्य नेमीसागरजी से दीक्षित सुदर्शनसागरजी भी थे उनकी उन्नति व संघ में समानता हेतु उनके ही निवेदन पर उनका नाम भी आपने बदला। उनका ज्ञान भी नाम बदलने के बाद और बढ़ गया। आपने उनका नाम रखा-क्षुल्लक श्री सुधर्मगुप्तजी। अभी आपके पास आठ पिच्छी है।

आपके द्वारा दीक्षित शिष्य कुल- 12 शिष्य हैं, दो शिष्य नामकरण वाले हैं।

(1) मुनि श्री समाधिगुप्तजी (स.)
(2) मुनि श्री सुयशगुप्तजी
(3) मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी
(4) मुनि श्री विमलगुप्तजी
(5) मुनि श्री विनयगुप्तजी
(6) मुनि श्री महेन्द्रगुप्तजी (स.)
(7) आर्यिका आस्थाश्री माताजी (नाम परिवर्तन)
(8) क्षुल्लक सुधर्मगुप्तजी (नाम परिवर्तन)
(9) आर्यिका निर्मोहश्री माताजी (समाधिस्थ)

(10) गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी (समाधिस्थ)

(11) क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी (12) क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी

(13) क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी (14) क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी

(15) ब्रह्मचारिणी केशर अम्मा जी।

आप इन सबके शिक्षा गुरु भी हैं और दीक्षा गुरु भी हैं। आपने अपने हाथों से आर्यिका क्षमाश्री माताजी पर गणिनी पद के संस्कार किये हैं।

आपने अपने योग्य शिष्यों को लिखित रूप में आचार्य पद प्रदान किया है। लेकिन अभी आपने किसी के संस्कार नहीं किये हैं।

आप आचार्य श्री कुंथुसागरजी के शिष्यों में 7वें नम्बर के आचार्य हैं। आपने समाज में अनेक जनकल्याण कार्य किये। छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध लोगों को धर्म के, आर्षमार्ग के संस्कार दिये हैं। आप जहाँ-जहाँ भी गये हैं वहाँ समाज को एकता के सूत्र में बाँधकर आये हैं। आपने औरंगाबाद, मराठवाड़ा में महती धर्म प्रभावना की है। आपने सबसे अधिक मंदिर भी यहाँ पर बनवाये और सबसे अधिक पंचकल्याणक यहीं पर किये हैं। अनेक बड़े-बड़े विधान कराये हैं।

आपके द्वारा भगवान की भक्ति का जीवंत संदेश दिया गया। आपने पूजन, अभिषेक, विधान, चालीसा आदि करना, सभी भक्तों को सिखाया है।

गुरु के गुणों को लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। आपके श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन, वंदन।

तुभ्यम् नमोस्तु हे ज्ञानमूर्ते !
तुभ्यम् नमोस्तु महाकविश्वर !
तुभ्यम् नमोस्तु वात्सल्य सिंधो !
तुभ्यम् नमोस्तु गुरु गुप्तिनंदी !

-आर्यिका आस्थाश्री माताजी

श्री जिनसहस्रनाम विधान मंडल

(1) लघु आदिनाथ विधान में 108 अर्घ और 2 पूर्णार्घ हैं।

(2) श्री जिनसहस्रनाम (वृहद् आदिनाथ) विधान में 1008 अर्घ और 11 पूर्णार्घ हैं।

श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान मंडल

(1) सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान में तैंतिस अर्घ और 7 पूर्णार्घ हैं।

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे॥

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ॥1॥

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार॥2॥

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास॥3॥

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल॥4॥

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारो हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हर लो पाप विशेष॥5॥

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय॥6॥

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिलें, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हैं अबोध अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
हम सब णमोकार को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूलसंघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित हैं।
निज पर भावों के भेदविज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित हैं॥
त्रिभुवन के सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित हैं।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित हैं॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भावशुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करें हमारा, अजित सुमंगल करें हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥2॥

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥3॥

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥4॥

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥5॥

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥6॥

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥7॥

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥8॥

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥9॥

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥10॥

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज- हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों॥
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा॥
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन-माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म-जरा-मृत हरता हूँ॥
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा॥1॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना॥ देव शास्त्र..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू॥ देव शास्त्र..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ॥
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा ॥
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया ॥ देव शास्त्र..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा ॥ देव शास्त्र..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ ॥ देव शास्त्र..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है ॥ देव शास्त्र..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है ॥ देव शास्त्र..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोडूँ सब अभिमान ॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय-जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर-नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि-सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत-शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरूओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री जिनसहस्रनाम पूजा विधान

(मत्तगयंद छंद)

सर्व हितंकर आदि जिनेश्वर, नाम सहस्र हमें मन भायें।
सार्थक सुखकर सुन्दर दुःखहर, भविजन भव्य विधान रचायें॥
अंजुलि में बहु पुष्प लिये हम, स्वागत गीत निरन्तर गायें।
माल लिये बहु नृत्य करें हम, पूजन में बहु वाद्य बजायें॥

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानं। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शेर छंद)

हम इक हजार आठ श्रेष्ठ कुम्भ सजायें।
प्रभु पाद धुला सर्व रोग शोक नशायें॥
हम सहस्र नाम के सहस्र अर्घ चढ़ायें।
पूजा श्री आदिनाथ की शिव सौख्य दिलाये॥1॥

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कपूर गन्ध चन्दनादि शुद्ध ले।
प्रभु के पदाग्र में लगाय सिद्धपद मिले॥ हम..॥2॥

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अखंड शालि मोती रत्न पुंज लें।
प्रभु को चढ़ाने वाले जायें शिव निकुंज में॥ हम..॥3॥

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पद्म जूही मोगरा कचनार कुन्द लें।
प्रभु को चढ़ायें छूँट जायें काम बन्ध से॥ हम..॥4॥

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी इमरती मालपुआ पूरी कचौरी।
जिनदेव को चढ़ायें भरें पुण्य तिजोरी।।
हम सहस्र नाम के सहस्र अर्घ चढ़ायें।
पूजा श्री आदिनाथ की शिव सौख्य दिलाये।।5।।

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत रत्न व कपूर के हम दीप जलायें।
प्रभु की उतारें आरती निज मोह नशायें।। हम..।।6।।

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित मनोज्ञ धूप अग्निपात्र में चढ़ा।
अर्चा करें प्रभु की फोड़ें कर्म का घड़ा।। हम..।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम संतरा श्रीफल के थाल लें।
हम अर्चते प्रभु को वे हमें सम्हाल लें।। हम..।।8।।

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य ध्वजा माल सहित अर्घ चढ़ायें।
हम नित अनर्घ सौख्य हित विधान रचायें।। हम..।।9।।

ॐ ह्रीं सहस्रनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नोट- आदिनाथ भगवान को, वन्दन बारम्बार।
शांतिधार कर चरण में, पुष्पांजलि मनहार।।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

श्रीमत् आदिक शत नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुखकर, उनका महाविधान करें।।

यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्री मदादिक त्रिजग परमेश्वर पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

श्री दिव्यादि शत नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
सहस्र नाम प्रभु के अति सुन्दर, उनका महाविधान करें॥ यह..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्यभाषापति आदि विश्वविद्या महेश्वरपर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

स्थविष्ठ आदिक नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
सहस्रनाम प्रभु के अति सुन्दर, उनका महा विधान करें॥ यह..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थविष्ठादि पुराण पुरुषोत्तम पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

महाशोकध्वज आदिक सौ–सौ, नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महाविधान करें॥ यह..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाशोकध्वजादि भुवनैकपितामहपर्यंत शतनाम विभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

श्री वृक्षलक्षण आदिक सौ, नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महाविधान करें॥ यह..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीवृक्षलक्षणादि महेश्वर पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

महामुनि से अंत अरिंजय, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥ यह..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामुनि आदि अरिंजय पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

असंस्कार से अंत दमेश्वर, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंस्कृत सुसंस्कार आदि दमेश्वर पर्यन्त शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

बृहत बृहस्पति आदिक, सौ–सौ नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥ यह..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बृहद् बृहस्पत्यादि त्रिलोकाग्रशिखामणयेपर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

त्रिकालदर्शी से पृथु जिन तक, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥ यह..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिकालदर्शीतादि पृथु पर्यन्त शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

दिग्वासा से धर्मचक्री तक, अष्टोत्तर शत नाम जपें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥ यह..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिग्वासा आदि धर्म साम्राज्य नायक पर्यंत अष्टोत्तर शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री लघु आदिनाथ विधान प्रारम्भ

दोहा- नमन स्वयंभू आपको, बनें स्वयं भगवान।
नाम अनेकों आपके, उनका करें विधान।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री लघु आदिनाथ विधान मंत्र

1. ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः।
2. ॐ ह्रीं अचिन्त्यवृत्तये नमः।
3. ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतये नमः।
4. ॐ ह्रीं लक्ष्मीभर्त्रे नमः।
5. ॐ ह्रीं विदांवराय नमः।
6. ॐ ह्रीं वदतांवराय नमः।
7. ॐ ह्रीं कामशत्रुघ्ने नमः।
8. ॐ ह्रीं देवाय नमः नमः।
9. ॐ ह्रीं महामनीषिणे नमः।
10. ॐ ह्रीं शतेन्द्र पूजिताय नमः।
11. ॐ ह्रीं घनघाति महातरू निर्भिन्नाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अनंतजिताय नमः।
13. ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः।
14. ॐ ह्रीं भव्यबांधवे नमः।
15. ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः।
16. ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः।
17. ॐ ह्रीं अन्धकान्तकाय नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्द्धनारीश्वराय नमः।
19. ॐ ह्रीं शिवाय नमः।
20. ॐ ह्रीं हराय नमः।
21. ॐ ह्रीं शंकराय नमः।
22. ॐ ह्रीं शंभवाय नमः।
23. ॐ ह्रीं वृषभाय नमः।
24. ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः।
25. ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः।
26. ॐ ह्रीं इक्ष्वाकुकुलनन्दनाय नमः।
27. ॐ ह्रीं एकरूपाय नमः।
28. ॐ ह्रीं पुरुषस्कंधाय नमः।
29. ॐ ह्रीं द्विलोचनाय नमः।
30. ॐ ह्रीं त्रिज्ञरूपाय नमः।
31. ॐ ह्रीं चतुरस्रधिये नमः।
32. ॐ ह्रीं पंचरूपाय नमः।
33. ॐ ह्रीं सद्योजातात्मने नमः।
34. ॐ ह्रीं पवित्राय नमः।
35. ॐ ह्रीं वामदेवाय नमः।
36. ॐ ह्रीं परम शांताय नमः।
37. ॐ ह्रीं ईश्वराय नमः।
38. ॐ ह्रीं अविनाशी जिनाय नमः।
39. ॐ ह्रीं प्रसिद्धाय नमः।
40. ॐ ह्रीं अनंतचक्षुषे नमः।
41. ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः।
42. ॐ ह्रीं दर्शनमोहघ्ने नमः।
43. ॐ ह्रीं क्षायिक दृष्टये नमः।
44. ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः।
45. ॐ ह्रीं महौजसे नमः।
46. ॐ ह्रीं अनंतज्योतिषे नमः।
47. ॐ ह्रीं अनंतवीर्याय नमः।
48. ॐ ह्रीं अनंतसुखाय नमः।
49. ॐ ह्रीं अनंतलोकाय नमः।
50. ॐ ह्रीं लोकालोकावलोकनाय नमः।
51. ॐ ह्रीं अनंतदानाय नमः।
52. ॐ ह्रीं अनंतलाभाय नमः।
53. ॐ ह्रीं अनंतभोगाय नमः।
54. ॐ ह्रीं अनंतउपभोगाय नमः।
55. ॐ ह्रीं परमयोगाय नमः।
56. ॐ ह्रीं अयोनये नमः।

57. ॐ ह्रीं परम पूताय नमः।
58. ॐ ह्रीं परमर्षये नमः।
59. ॐ ह्रीं परमविद्याय नमः।
60. ॐ ह्रीं परमतच्छिदे नमः।
61. ॐ ह्रीं परमतत्त्वाय नमः।
62. ॐ ह्रीं परमात्मने नमः।
63. ॐ ह्रीं परमरूपाय नमः।
64. ॐ ह्रीं परमतेजसे नमः।
65. ॐ ह्रीं परममार्गाय नमः।
66. ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः।
67. ॐ ह्रीं परमभेजुषे नमः।
68. ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः।
69. ॐ ह्रीं पारेतमाय नमः।
70. ॐ ह्रीं सर्वोत्कृष्टाय नमः।
71. ॐ ह्रीं क्षीणकलंकाय नमः।
72. ॐ ह्रीं क्षीणबंधाय नमः।
73. ॐ ह्रीं क्षीणमोहाय नमः।
74. ॐ ह्रीं क्षीणदोषाय नमः।
75. ॐ ह्रीं सुगतये नमः।
76. ॐ ह्रीं शोभनीयगतये नमः।
77. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियज्ञानिने नमः।
78. ॐ ह्रीं अतीन्द्रिय सुखिने नमः।
79. ॐ ह्रीं अनीन्द्रियात्मने नमः।
80. ॐ ह्रीं अकायाय नमः।
81. ॐ ह्रीं अयोगाय नमः।
82. ॐ ह्रीं अधियोगिने नमः।
83. ॐ ह्रीं अवेदाय नमः।
84. ॐ ह्रीं अकषायाय नमः।
85. ॐ ह्रीं परम योगीन्द्राय नमः।
86. ॐ ह्रीं वन्दिताङ्घ्रिद्वयाय नमः।
87. ॐ ह्रीं परम विज्ञानाय नमः।
88. ॐ ह्रीं परम संयमाय नमः।
89. ॐ ह्रीं परम दृगदृष्टाय नमः।
90. ॐ ह्रीं दृष्ट परमार्थाय नमः।
91. ॐ ह्रीं तायिने नमः।
92. ॐ ह्रीं अलेश्याय नमः।
93. ॐ ह्रीं विमोक्षिणे नमः।
94. ॐ ह्रीं असंज्ञाय नमः।
95. ॐ ह्रीं वीत संज्ञाय नमः।
96. ॐ ह्रीं क्षायिकदृष्टये नमः।
97. ॐ ह्रीं अनाहाराय नमः।
98. ॐ ह्रीं तृप्ताय नमः।
99. ॐ ह्रीं परम भाजुषे नमः।
100. ॐ ह्रीं व्यतीताशेषदोषाय नमः।
101. ॐ ह्रीं भवाब्धे पारमीयूषे नमः।
102. ॐ ह्रीं अजराय नमः।
103. ॐ ह्रीं अजन्मने नमः।
104. ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः।
105. ॐ ह्रीं अचलाय नमः।
106. ॐ ह्रीं अक्षराय नमः।
107. ॐ ह्रीं अनंतगुणाय नमः।
108. ॐ ह्रीं उपासकाय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वृषभनाथ के अष्टोत्तर शत्, नामों को हम ध्यायें।
इस विधान से हम सब अपने, सब दुःख शोक नशायें॥
प्रभु के नाम मात्र जपने से, पाप तिमिर सब भागे।
जिनवर को पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, भाग्य अवश ही जागे॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरोग, शोक, दुःख, संकट, पीड़ा, आधि–व्याधि, विपदा, अशांति, क्लेश, राग–द्वेष कर्म निवारणाय, करोना महामारी निवारणाय सुख–शांति, समृद्धि, ऋद्धि–सिद्धि, आरोग्य, सद्बुद्धि प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

(नरेन्द्र छंद)

नाथ 'स्वयंभू' स्व से जन्मे, इसीलिये हम करें नमन।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'अचिन्त्य' माहात्म्य आपका, अतः आपको करें नमन॥ आदिनाथ..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचिन्त्यवृत्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय लोकों के तुम ही स्वामी, त्रिभुवन तुमको करें नमन॥ आदिनाथ..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिजगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ही लक्ष्मी के भर्त्ता हो, तुमको सौ-सौ बार नमन॥ आदिनाथ..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लक्ष्मीभर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्वानों में श्रेष्ठ आप हो, विद्यार्जन हित करें नमन ॥ आदिनाथ..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विदांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्ताओं में श्रेष्ठ आप हो, वाक्य सिद्ध हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वदतांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'कामशत्रु के हन्ता', काम विजय हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामशत्रुघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दानी हो तुम 'देव' कहाते, महादेव जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन करें नित सर्व मनीषी, 'महामनीषी' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामनीषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्रों की मुकुटमणि से, 'पूजित' जिनवर तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शतेन्द्र पूजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान रूपी मुद्गर से प्रभुवर, कर्म नशायें तुम्हें नमन
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री घनघाति महातरू निर्भिन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव अनंत त्रिभुवन को जीता, तुम 'अनंतजित' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम दुर्जय मृत्यु के जेता, 'मृत्युंजय' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मृत्युंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के बंधन नष्ट किये जिन !, 'भव्यबंधू' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भव्यबांधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म जरा मृत नष्ट कर दिये, हे 'त्रिपुरारि' तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ.. ॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिपुरारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक विषयों के ज्ञाता, हे 'त्रिनेत्र' जिन तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ.. ॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिनेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धासुर को मारा है, 'अन्धकान्त' जिन तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ.. ॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अन्धकान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अर्द्धनारीश्वर' स्वामी, अर्द्ध अरि नहि तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्द्धनारीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष निवासी मंगलकर्त्ता, 'शिव' तीर्थंकर तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापरूप शत्रु के हर्त्ता, तुम ही 'हर' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में शांति करते हो, 'जिनशंकर' हो तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख से तुम उत्पन्न हुये हो, हे 'शंभु' जिन ! तुम्हें नमन।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन जगत में श्रेष्ठ आप ही, 'वृषभदेव' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥23॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम गुण को देने वाले, 'पुरुदेव' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥24॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभिराजा से तुम जन्मे, श्री 'नाभेय' तुम्हें वन्दन॥ आदिनाथ.. ॥25॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नाभेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इक्ष्वाकुकुलनंदन' तुम हो, हे तीर्थंकर तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥26॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री इक्ष्वाकुकुलनन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषों में इकश्रेष्ठ आप हो, हे पुरुषोत्तम ! तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥27॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री एकरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुरुषों में 'स्कन्ध' आप हो, हे युगनायक तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥28॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरुषस्कंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जनों के नेत्र आप हो, नाथ 'द्विलोचन' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥29॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्विलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रयकालिक रत्नत्रय ज्ञाता, 'त्रिज्ञरूप' हो तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥30॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिज्ञरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार शरण मंगल उत्तम तुम, 'चतुरस्रधी' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुरस्रधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परम परमेष्ठी उत्तम, 'पंचरूप' हो तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंचरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग लोक अवतारी हो तुम, 'सद्यजात' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ.. ॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सद्योजातात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप अतिशय 'पवित्र' हो, पवित्रता हित तुम्हें नमन।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सुन्दर जन्माभिषेक में, 'वामदेव' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वामदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षाधर तुम परम शांत हो, प्रथम मुनीश्वर तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम शांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम केवलज्ञानी 'ईश्वर' हो, अर्हत् पद हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महल वासी अविनाशी, सिद्ध जिनेश्वर तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अविनाशी जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप सिद्ध सिद्धी के दाता, जग 'प्रसिद्ध' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥39॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रसिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण विजेता ज्ञाता, 'अनंतचक्षु' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥40॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मदर्शनावरण विजेता, 'विश्वदृश्व' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥41॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वदृश्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दर्शनमोह' कर्म को जीता, मोहविजेता तुम्हें नमन॥ ॥ आदिनाथ..॥42॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दर्शनमोहघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम क्षायिक दृष्टि के धारी, 'क्षायिक दृष्टा' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥43॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षायिक दृष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र मोह विनाशक जिनवर, 'वीतराग' जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥44॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीतरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप महा तेजस्वी जिनवर, नाम 'महौजस' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥45॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महौजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अनंतज्योति' जिनवर हो, ज्ञानज्योति हित तुम्हें नमन।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥46॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य अनंत युक्त जिननायक, तुमको बारम्बार नमन॥ आदिनाथ..॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतवीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनंतसुखी' हो जिनवर, सुख अनंत हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतसुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोकप्रकाशी जिनवर, ज्ञानलाभ हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥49॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतलोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकालोकविलोकी' जिनवर, पूर्णज्ञान हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥50॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकालोकावलोकनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दानअनंत' श्रेष्ठ लब्धिधर, हे परमेश्वर ! तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥51॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतदानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लाभ अनंत' श्रेष्ठ लब्धिधर, हे तीर्थेश्वर ! तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥52॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतलाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भोग अनंत' परम लब्धिधर, हे जगदीश्वर ! तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥53॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंत उपभोगी' परमातम, तुमको तीनों काल नमन॥ आदिनाथ..॥54॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतउपभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगातीत 'परम योगी' जिन, योग लाभ हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥55॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमयोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योनिभ्रमण से रहित 'अयोनि', तुमको बारम्बार नमन॥ आदिनाथ..॥56॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमपूत' अति पावन जिनवर, तुमको कोटि असंख्य नमन॥ आदिनाथ..॥57॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम पूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषियों के भी आप 'परमऋषि', ऋषिगण तुमको करें नमन ।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन ॥58॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यासिद्ध 'परमविद्या' तुम, विद्याहेतु तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ..॥59॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमत छेदक' जिनमत पोषक, तुम्हें अनंतानंत नमन ॥ आदिनाथ..॥60॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमतच्छिदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमतत्त्व' तुम्हीं हो जिनवर, परमेश्वर हो तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ..॥61॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमतत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप साध्य उत्तम 'परमात्मा', परम तत्वहित करें नमन ॥ आदिनाथ..॥62॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य परम उत्कृष्ट रूपधर, 'परमरूप' हित तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ..॥63॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'परम तेजस्वी' भगवन्, परम तेज हित करें नमन ॥ आदिनाथ..॥64॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमतेजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम उत्कृष्ट मार्ग हो, 'परममार्ग' हित तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ..॥65॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परममार्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप परम पद में स्थित हो, हे 'परमेष्ठी' ! तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ..॥66॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमहल के उत्तम सेवक, 'परमभेजुषे' तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ..॥67॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमभेजुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य अतीन्द्रिय आत्म ज्योतिधर, 'परमज्योतिषे' तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ..॥68॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिमिर विनाशक ज्ञान तेजधर, 'पारेतम' जिन तुम्हें नमन ॥ आदिनाथ..॥69॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पारेतमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वोत्कृष्ट' आप ही जग में, परमात्मा जिन तुम्हें नमन।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥70॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वोत्कृष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मकलंक रहित तुम स्वामी, 'क्षीणकलंकी' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥71॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षीणकलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबंधक्षय कर्त्ता भगवन्, 'क्षीणबंध' है तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥72॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षीणबंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहमहाशत्रु के जेता, 'क्षीणमोह' है तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥73॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षीणमोहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादिक सब दोष विजेता, 'क्षीणदोष' है तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥74॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षीणदोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षगति को पाने वाले, आप 'सुगति' हैं तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥75॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शोभनीय गति' पायी तुमने, पंचम गति हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥76॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शोभनीयगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अतीन्द्रिय' ज्ञानी हो जिन, ज्ञान लाभ हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥77॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतीन्द्रियज्ञानिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत में पूर्ण 'सुखी' हो, सौख्य लाभ हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥78॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतीन्द्रिय सुखिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्री अगोचर आप 'अनिन्द्रिय', आत्म साक्षी हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥79॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनीन्द्रियात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह रूप बंधन को नशकर, तुम 'अकाय' हो तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥80॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग रहित जिन आप 'अयोगी', तीन योग से तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥81॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अयोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगी जन नायक 'अधियोगी', शुद्ध योग से तुम्हें नमन।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥82॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधियोगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद रहित जिन आप 'अवेदी', वेद विजय हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥83॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कषायजयी 'अकषायी', निष्कषाय हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥84॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अकषायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन 'परम योगीन्द्र' आपको, योगी तुम पद करें नमन॥ आदिनाथ..॥85॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके 'पद युग त्रिभुवन वन्दित', पूज्यपाद जिन! तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥86॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वन्दिताड्घ्रिद्वयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन 'परम विज्ञान' आपको, ज्ञान प्राप्ति हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥87॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम विज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन 'परम संयम' धर तुमको, यथाख्यात जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥88॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम संयमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन 'परम दृग दृष्टा' तुमको, मोक्षमार्ग हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥89॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम दृगदृष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दृष्ट परमार्थ' जिनेश्वर, परमार्थी हम करें नमन॥ आदिनाथ..॥90॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृष्ट परमार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम सबके पालक रक्षक हो, नाथ 'तायिने' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥91॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तायिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन शुद्ध 'लेश्या' संस्पर्शी, लेश्याहर्त्ता तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥92॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अलेश्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य अभव्य भाव जेता तुम, मोक्ष गमन हित तुम्हें नमन।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥93॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमोक्षिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्ञी 'असंज्ञी' उभय अवस्था, रहित आपको नित्य नमन॥ आदिनाथ..॥94॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन भय मैथुन परिग्रह चउ, 'वीतसंज्ञ' जिन ! तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥95॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीत संज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षायिक' सम्यग्दर्शन धारी, हे तीर्थंकर तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥96॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षायिकदृष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनाहार' पर पूर्ण तृप्त तुम, क्षुधा विजय हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥97॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनाहाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत से आप 'तृप्त' हो, आत्म तृप्ति हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥98॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तृप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय उत्कृष्ट दीप्तिमय, 'परमभाजुषे' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥99॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परम भाजुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वदोष से रहित जिनेश्वर, दोष नाश हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥100॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्यतीताशेषदोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव समुद्र से पार तीर्थंकर, 'भवदधि' तरने तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥101॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवाब्धे पारमीयूषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जर-जर करती जरा व्याधि से ,रहित 'अजर' जिन तुम्हें नमन॥आदिनाथ..॥102॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-जन्म के जन्म दुःखों से, रहित 'अजन्मा' तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥103॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजन्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु के मरणांत दुःखों से, रहित 'अमृत्यु' तुम्हें नमन।
आदिनाथ उत्तम विधान में, प्रभु हम तुमको करें नमन॥104॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृत्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अचल अविकल गुणधारी, 'अचल' रूप है तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥105॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव क्षायिक लब्धि धर 'अक्षर', अविनाशी जिन तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥106॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन ! तुममें गुण अनंत हैं, गुण अनंत हित तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥107॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंत गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम 'उपासक' भवदुःखहारक, सब सुखदाता तुम्हें नमन॥ आदिनाथ..॥108॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपासकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वृषभनाथ के अष्टोत्तर शत्, नामों को हम ध्यायें।
इस विधान से हम सब अपने, सब दुःख शोक नशायें॥
प्रभु के नाम मात्र जपने से, पाप तिमिर सब भागे।
जिनवर को पूर्णार्घ्य चढ़ाकर, भाग्य अवश ही जागे॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वरोग, शोक, दुःख, संकट, पीड़ा, आधि-व्याधि, विपदा, अशांति, क्लेश, राग-द्वेष कर्म निवारणाय, करोना महामारी निवारणाय सुख-शांति, समृद्धि, ऋद्धि-सिद्धि, आरोग्य, सद्बुद्धि प्रदायकाय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री जिनसहस्रनाम (वृहद् आदिनाथ) विधान प्रारम्भ

दोहा- अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान॥
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(दोहा)

अंतरंग श्रीरूप में, बन अनंत गुणवान।
समोशरण आदिक बहि, लक्ष्मी धर 'श्रीमान'॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन 'स्वयंभू' आपको, स्वयं किया उत्थान।
सकल साधना स्वयंकर, स्वयं बने भगवान॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ धर्म को धारते, आप 'वृषभ' भगवान।
बनें आप सम हम वृषभ, धरें वृषभ का ध्यान॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत पाया स्वयं, जग को दे सुख दान।
सिद्ध किया हर नाम को, जय 'शंभव' भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानंद विशेष सुख, दाता आप महान्।
तुमको पूजें हम यहाँ, जय 'शंभु' भगवान॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य श्रेष्ठ परमात्मा, करते योगी ध्यान।
आप 'आत्मभू' श्रेष्ठ हो, होवे मम उत्थान॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आत्मभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं स्वयं में लीन हो, प्रगटा आत्म प्रकाश।
स्वयं प्रकाशित 'स्वयंप्रभ', करते पाप विनाश ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी आप हो, पूर्ण समर्थ महान्।
तीन लोक त्रयकाल में, तुम ही 'प्रभु' महान्॥ 8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग सुख छोड़कर, करें आत्मसुख पान।
आत्म गुणों को भोगते, जय 'भोक्ता' भगवान॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भोक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व व्यापी तुम ज्ञान है, विश्व करे तुम ध्यान।
आप 'विश्वभू' नाथ हो, करो विश्व उत्थान॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनः जन्म लेते नहीं, आप 'अपुनर्भव' नाथ।
जन्म व्याधि मेरी हरो, जय नाथों के नाथ॥11॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपुनर्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्व व्याप्त तुम आत्मा, विश्व व्यापि तुम ज्ञान।
विश्व भ्रमण मेरा हरो, 'विश्वात्मा' भगवान॥12॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी हो तुम विश्व के, आप 'विश्वलोकेश'।
आत्म विश्व को जानने, पूजें भक्त हमेश॥13॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वचक्षु !' जिन आपने, जाना लोक अलोक।
जो अर्चे नित आपको, वो जाने सब लोक॥14॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षरण कभी नहिं आपका, जिन 'अक्षर' हो आप।
अक्षर बनने आप सम, करते हम नित जाप॥15॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता सर्व पदार्थ के, नाम 'विश्वविद' आप।
वेदन करने आत्म का, करते हम नित जाप॥16॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के ईश हो, आप 'विश्वविद्येश'।
विद्या का वर दो हमें, पूजें तुम्हें हमेश॥17॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वविद्येशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वयोनि' जिन आप से, प्रगटे सर्व पदार्थ।
योनि भ्रमण विनाशकर, पायें हम परमार्थ॥18॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग सुख छोड़कर, बनें 'अनश्वर' नाथ।
अविनश्वर हम भी बनें, मिले प्रभु का साथ॥19॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व विश्व को जानते, 'विश्वदृश्व' परमेश।
सर्व विश्व पूजे तुम्हें, पूजें श्रमण गणेश॥20॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वदृश्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ विभूति धारते, आप 'विभू' जिनदेव।
पाने वैभव आप सम, पूजें भक्त सदैव॥21॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों के दुःख हरें, धरें मोक्ष में आप।
सृष्टा मुक्ति मार्ग के, 'धाता' हो जिन आप॥22॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर हो सब लोक के, आप श्रेष्ठ 'विश्वेश'।
मेरी इच्छा मोक्ष की, पूरी करो जिनेश।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वविलोचन' आप जिन, बतलाया सन्मार्ग।
दर्शन कर हम आपका, त्यागें सब उन्मार्ग।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वव्यापी' जिन आप हो, विश्वव्यापी तुम ज्ञान।
अर्चा कर हम आपकी, पायें केवलज्ञान।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वव्यापिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षविधि दर्शा प्रभो, 'विधि' कहलाये आप।
विधि विधान कर आपका, मिटे कर्म का ताप।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मविधि के सृजक हो, वैद्य आप जिननाथ।
वेधन कर दो कर्म का, हे 'वेधा' जिननाथ।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान रहते सदा, 'शाश्वत' हो तुम नाथ।
शाश्वत हो हम आप सम, सदा झुकायें माथ।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शाश्वताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में आपका, मुख दिखता चहुँ ओर।
अतः 'विश्वतोमुख' कहे, भव्य जीव सब ओर।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वतोमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असि आदि आजीविका, सूत्र दिये जिननाथ।
आप 'विश्वकर्त्ता' प्रभो, जय युग सृष्टा नाथ।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वकर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत् में ज्येष्ठ हो, 'जगज्ज्येष्ठ' जिनदेव।
बने आप सम ज्येष्ठ हम, पूजें तुम्हें सदैव॥31॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगज्ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब द्रव्यों की आकृति, झलके प्रभु तुम ज्ञान।
धन्य विश्व तुमको कहे, 'विश्वमूर्ति' भगवान॥32॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मजयी जिन जगत के, उनके ईश्वर नाथ।
कर्म शत्रु को जीतकर, बनें 'जिनेश्वर' नाथ॥33॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ को देखते, देव 'विश्वदृग' आप।
तुम सम दर्शन विश्व का, हमें करा दो आप॥34॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्राणी के ईश हो, आप 'विश्वभूतेश'।
सब प्राणी संग आपको, पूजें सर्व सुरेश॥35॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वभूतेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ज्योति जिन आपकी, अखिल विश्व में व्याप्त।
'विश्वज्योति' तव ध्यान कर, ध्यानी बनते आप्त॥36॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई न स्वामी आपका, सबके स्वामी आप।
धन्य 'अनीश्वर' देव तुम, हरो सकल संताप ॥37॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घातिकर्म शत्रु बड़े, उनके जेता आप।
तुमको त्रिभुवन 'जिन' कहे, जिन तुम हो निष्पाप॥38॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील आपका कर्मजय, वो ही आत्म स्वभाव।
आप 'जिष्णु' भगवान हो, जीते सब परभाव॥39॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत हैं आपके, जग जिनसे अनजान।
'अमेयात्म' जिन आप हो, हमको दो वह ज्ञान॥40॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर हो तुम विश्व के, 'विश्वरीश' भगवान।
आत्म विजेता ही बने, जग में ईश महान्॥41॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वरीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तीनों लोक के, 'जगत्पति' जिनदेव।
जग जगमग है आपसे, जय-जय-जय जिनदेव॥42॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगत्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अनंत संसार के, जेता आप महान्।
भव्यों ने पूजा तुम्हें, 'अनंतजित' भगवान॥43॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आतम का चिंतवन, मन से भी ना होय।
'अचिन्त्य आत्मा' आप हो, पार लगा दो मोय॥44॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचिन्त्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप हितैषी भव्य के, 'भव्य बंधु' भगवान।
भव्यों का नित आप ही, कर देते कल्याण॥45॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भव्यबांधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अबंधन' हो प्रभो, कांटे कर्मन् बंध।
कर्म श्रृंखला मम कटे, ऐसा करो प्रबंध॥46॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अबंधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'युगादिपुरुष' हो, युग के तारणहार।
जन्मे युग के आदि में, वंदन बारम्बार ॥47॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगादिपुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत नित आपके, वृद्धिंगत हो देव।
सच्चे 'ब्रह्मा' आप हो, पूजें त्रिभुवन देव ॥48॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पंच ब्रह्ममय' आप हो, पंच परम पद रूप।
पंचम गति हमको मिले, पायें ब्रह्म स्वरूप ॥49॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंचब्रह्ममयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव ही सुन्दर सत्य है, शिव ही आनंद रूप।
तुम ही 'शिव' भगवान हो, परमानंद स्वरूप ॥50॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण किये सम्पूर्ण गुण, सबके पालनहार।
'पर' हो हे भगवान ! तुम, कर दो मम उद्धार ॥51॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सबसे श्रेष्ठ हो, 'परतर' तुम भगवान।
बने आप सम श्रेष्ठ हम, कर दो जिनकल्याण ॥52॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परतराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म क्षय कर प्रभो, पाया है गुण 'सूक्ष्म'।
चर्म चक्षु गोचर नहीं, अतः आप हो सूक्ष्म ॥53॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूक्ष्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप परम पद में रहे, 'परमेष्ठी' भगवान।
जो तुम पद में लीन हो, वो बनता भगवान ॥54॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमेष्ठिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सनातन' हो प्रभो, शाश्वत एक समान।
जो ध्यायें नित आपको, बनता आप समान॥55॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सनातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं प्रकाशित आप हो, 'स्वयंज्योति' जिनदेव।
पाने स्वयं प्रकाश हित, पूजें तुम्हें सदैव॥56॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में फिर नहीं जन्म हो, 'अज' हो आप जिनेश।
जन्म व्याधि को नाशने, पूजें तुम्हें हमेश॥57॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म श्रृंखला तोड़कर, बनें 'अजन्मा' देव।
जन्म श्रृंखला तोड़ने, अर्चें भक्त सदैव॥58॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजन्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग के बीज तुम, 'ब्रह्मयोनि' भगवान।
आत्म ब्रह्म को जानने, करें तुम्हारा ध्यान॥59॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौरासी लख योनि की, जन्म श्रृंखला काट।
आप 'अयोनिज' बन गये, त्रिभुवन के सम्राट॥60॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अयोनिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मोहारिविजयी' बने, मोह अरि को जीत।
जग को दिखलाई प्रभो, मोह विजय की रीत॥61॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मोहारिविजयिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीतकर, 'जेता' जिन कहलाय।
भक्त तुम्हें ध्याकर प्रभो, जग जेता बन जाय॥62॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मचक्र तुमसे चला, 'धर्मचक्री' तीर्थेश।
धर्मचक्र चलता रहे, मिटे पाप संक्लेश॥63॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मचक्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दया आपकी है ध्वजा, आप 'दयाध्वज' नाम।
दया जगत में हो सदा, मिटे पाप का नाम॥64॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयाध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तारि' तुम हो प्रभो, कर्म वैरी कर शांत।
तुम सम कर्म विनाशकर, पहुँचे हम लोकांत॥65॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशान्तारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनंतात्मा' प्रभो, पा न सके तुम अंत।
जाप करें हम आपका, पायें ज्ञान अनंत॥66॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन योग को सिद्ध कर, 'योगी' आप कहाय।
तुममें बस उपयोग हो, योग सिद्ध हो जाय॥67॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'योगिश्वरार्चित' तुम प्रभो, योगीश्वर से पूज्य।
योग धरे जो आपका, बने जगत् में पूज्य॥68॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'ब्रह्मविद्' हो प्रभो, कर शुद्धातम ज्ञान।
आत्मब्रह्म हम जान लें, करके आप विधान॥69॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'ब्रह्मतत्त्वज्ञ' तुम, आत्म तत्त्व मर्मज्ञ।
घाति कर्म को नाशकर, बने आप सर्वज्ञ॥70॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण ज्ञानधर तुम विभो, 'ब्रह्मोद्यावित्' आप।
आत्म ब्रह्म विद्या जगा, बने आप निष्पाप॥71॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतियों के ईश्वर तुम्हीं, धन्य 'यतीश्वर' देव।
यतिपति गणधर सूरि सब, पूजें तुम्हें सदैव॥72॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री यतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कलंक विनाशकर, हुये 'शुद्ध' जिनदेव।
तुम सम तप को धार हम, बने शुद्ध स्वयमेव॥73॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलबुद्धि के धनी, 'बुद्ध' आप तीर्थेश।
तुम सम बुद्धि लाभ हित, पूजें तुम्हें जिनेश॥74॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'प्रबुद्धात्मा' प्रभो, जग को किया प्रबुद्ध।
मंत्राराधन आपका, करता पूर्ण प्रबुद्ध॥75॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रबुद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हुए सब अर्थ में, धन्य-धन्य 'सिद्धार्थ'।
सिद्ध होय सब अर्थ मम, कृपा करो सिद्धार्थ॥76॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्धशासन' प्रभो, शासन आप प्रसिद्ध।
जो-जो तुम पथ पर चले, वो भी बनें प्रसिद्ध॥77॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों का नाशकर, 'सिद्ध' बनें जिनदेव।
अपनाये तुम सूत्र जो, सिद्ध बनें स्वयमेव॥78॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'सिद्धांतविद्', जाने सब सिद्धांत।
अनपढ़ भी तुम भक्ति से, जाने सब सिद्धांत ॥79॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धांतविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन ध्याये आपको, 'ध्येय' जगत में आप।
ध्येय तुम्हारे ध्यान में, मिटते सब संताप ॥80॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ध्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धसाध्य' तीर्थेश तुम, सिद्ध किये सब साध्य।
आप भक्ति से भक्त के, सिद्ध होय सब साध्य ॥81॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्ध साध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग का हित करने प्रभो, बने 'जगद्धित' देव।
मेरा भी हित तुम करो, मेटो पाप कुटेव ॥82॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगद्धिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहनशील गुण क्षमाधर, आप 'सहिष्णु' नाथ।
पूर्ण सहिष्णु हम बने, तुम सम हे जिननाथ ! ॥83॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'सहिष्णवे' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से च्युत ना हो कभी, तुम हो 'अच्युत' नाथ।
अच्युत पद हित हम करें, भक्ति तुम्हारी नाथ ॥84॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अच्युताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप गुणों का अन्त ना, जिन हो आप 'अनंत'।
पूजें तुमको रात दिन, पाने सुगुण अनंत ॥85॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम प्रभावशाली प्रभो, 'प्रभविष्णु' भगवान।
रत्नत्रय के तेज से, किया स्वपर उत्थान ॥86॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभविष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म सर्व उत्कृष्ट तुम, आप 'भवोद्भव' देव।
भव-भव के जंजाल से, पार करो जिनदेव॥87॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप शक्तिशाली प्रभो, धन्य 'प्रभूष्णु' देव।
आप नाम की शक्ति से, मिलती शक्ति सदैव॥88॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं बुढ़ापा आपके, आप 'अजर' भगवान।
जरा व्याधि मेरी मिटे, कर दो जिनकल्याण॥89॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीर्ण कभी होते नहीं, तुम 'अजर्य' भगवान।
हरो हमारी जीर्णता, करो नाथ उत्थान॥90॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत से दीप्य हो, 'भ्राजिष्णु' भगवान।
तुम सम गुण के लाभ हित, हमने रचा विधान॥91॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भ्राजिष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर केवल बुद्धि के, 'धीश्वर' तुम तीर्थेश।
पूर्ण बुद्धि के लाभ हित, पूजें तुम्हें हमेश॥92॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश नहीं जिन आपका, 'अव्यय' हो भगवान।
अव्यय सुख हमको मिले, ऐसा दो वरदान॥93॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अव्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मेन्धन को अग्नि तुम, मोह-तिमिर क्षयकार।
धन्य 'विभावसु' नाथ तुम, कर दो मम उद्धार॥94॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विभावसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनर्जन्म नहीं आपका, 'असम्भूष्णु' भगवान।
जन्म व्याधि मेरी हरो, कर दो आप समान॥95॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असम्भूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं बने भगवान तुम, 'स्वयंभूष्णु' भगवान।
स्वयं बने भगवान हम, दो वह सूत्र महान्॥96॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंभूष्णवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अनादि सिद्ध हो, दिव्य 'पुरातन' नाथ।
हरो पुरातन कर्म सब, हे नाथों के नाथ !॥97॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरातनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्कृष्ट स्वरूप तुम, 'परमात्मा' जिनराज।
करो ध्यान परमात्म का, कहते सब जिनराज॥98॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमज्योति उत्कृष्ट तुम, 'परंज्योति' परब्रह्म।
परंज्योति के ध्यान से, पायें हम चिद्ब्रह्म॥99॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप त्रिजग 'परमेश' हो, तीन लोक के ईश।
तीन लोक तुमको भजे, सदा नमावें शीश॥100॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

श्रीमत् आदिक शत नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुखकर, उनका महाविधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्री मदादिक त्रिजग परमेश्वर पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा– अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान॥
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

दोहा

आप 'दिव्यभाषापति', दिव्य ध्वनि के ईश।
दिव्यध्वनि श्रुत लाभ हित, तुम्हें नमावें शीश॥101॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्यभाषापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य भाव तन रूप तुम, दिव्य आपका नाम।
हर शचि को सम्यक्त्वप्रद, तुमको कोटि प्रणाम॥102॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिपवित्र वाणी धनी, 'पूतवाक्' तुम नाम।
तुम सम वाणी लाभ हित, तुमको करें प्रणाम॥103॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पूतशासन' विभो, शासन पूत पवित्र।
पूत करो भव्यात्म को, हे निष्कारण मित्र !॥104॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूतशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवित्र है तुम आत्मा, 'पूतात्मा' भगवान।
पावन हो मम आत्मा, ऐसा हो उत्थान॥105॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ज्योति स्वरूप तुम, 'परमज्योति' जिनदेव।
आतम ज्योति प्रकाश हित, ज्योत लगायें सदैव॥106॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ अध्यक्ष तुम, 'धर्माध्यक्ष' जिनेश।
तीन काल पूजें तुम्हें, ब्रह्मा विष्णु महेश॥107॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्माध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियजय में अग्रणी, आप 'दमीश्वर' देव।
तुम सम इन्द्रिय दमन की, कला सिखा दो देव !॥108॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दमीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षलक्ष्मी के नाथ तुम, 'श्रीपति' हो भगवान।
जाप करे जो आपका, बनता वो श्रीमान॥109॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीपते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य वसुद्रव्य से, पूजित जिन 'भगवान'।
प्रातिहार्य अर्पण करें, करते हम गुणगान॥110॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भगवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक से पूज्य हैं, श्री 'अर्हन्' परमेश।
जो पूजे नित आपको, अर्हत बने विशेष॥111॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म धूलि से रहित हो, 'अरजा' तुम भगवान।
कर्मधूलि मेरी हटे, होवे मम कल्याण॥112॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों के कलिमल हरें, करके अघ रज नाश।
देव 'विरज' तुमसे हुआ, जग में धर्म प्रकाश॥113॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विरजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र जिनदेव तुम, जग प्रसिद्ध 'शुचि' नाम।
भव्यातम शुचि हो प्रभो, इस हित करें प्रणाम॥114॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुचये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थ कर्त्ता तुम्हीं, धन्य 'तीर्थकृत' देव।
तिरे हमारी आत्मा, तुमको नमन सदैव॥115॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'केवली' हो प्रभो, पाया केवलज्ञान।
ध्यान करें हम आपका, पायें केवलज्ञान॥116॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवलिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत सामर्थ्य युत, जिन हो तुम 'ईशान'।
पायें गुण ऐश्वर्य हम, करके श्रेष्ठ विधान॥117॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ईशानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'पूजार्ह' हो, तुम पूजा के योग्य।
पूजा कर हम आपकी, तुम सम बनें सुयोग्य॥118॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूजार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घातिकर्म क्षय कर प्रभो, पाया ज्ञान अनंत।
जिन 'स्नातक' तुम बने, जय-जय ज्ञान भदंत॥119॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्नातकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम तन मल से रहित हो, राग-द्वेष परिहीन।
धन्य-धन्य जिन 'अमल' तुम, भाव द्रव्य मल हीन॥120॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'अनंतदीप्ति' तुम्ही, दिव्य अनंत प्रकाश।
पूजें हम नित आपको, पाने ज्ञान प्रकाश॥121॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतदीप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानात्मा' तुम हो प्रभो, आत्मा ज्ञान स्वरूप।
ज्ञानवान बनने विभो, पूजें हम जिन रूप॥122॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से स्वयं विरक्त हो, पाया पद निर्वाण।
बिन गुरु पाते सर्व जय, 'स्वयंबुद्ध' भगवान॥123॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंबुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जग के प्रतिपाल हो, आप 'प्रजापति' नाथ।
आये हम तुम चरण में, शरण दीजिये नाथ॥124॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रजापतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मजाल से मुक्त हो, 'मुक्त' सिद्ध है नाम।
मुक्ति पाने हम जपें, सदा तुम्हारा नाम॥125॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अनन्त सम्पन्न हो, 'शक्त' नाम तीर्थेश।
हतबल भी बलवंत हो, तुमको पूज हमेश॥126॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा ना उपसर्ग हो, 'निराबाध' भगवान।
तुमको ध्या निर्बाध हो, भक्तों का कल्याण॥127॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निराबाधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छल बल माया छोड़कर, 'निष्कल' हुए जिनेश।
तुम सम निष्कल हम बने, ध्या निष्कल परमेश॥128॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक भुवनेश तुम, 'भुवनेश्वर' भूदेव।
हृदय भुवन मेरे बसो, दो मुक्ति भूदेव ॥129॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुवनेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप अंजन रहित, आप निरंजन देव।
कर्मांजन मेरा हरो, जय-जय-जय जिनदेव॥130॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरंजनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया प्रकाशित जगत को, 'जगज्ज्योति' बन आप।
आत्मज्योति मम प्रगट हो, तुम सम बन निष्पाप॥131॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचन सिद्ध सार्थक प्रभो, पूर्वापर अविरोध।
'निरुक्तोक्ति' तुम ध्यान से, हो आतम सम्बोध॥132॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरुक्तोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वरोग विरहित तुम्हीं, रोग विनाशक देव।
नाम 'निरामय' सिद्ध है, करो अनामय देव॥133॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थिति 'अचल' जिनेश तुम, अचल द्रव्य गुण आप।
अर्चा कर हम आपकी, बनें अचल निष्पाप॥134॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचल स्थितये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम अक्षोभ्य हो, कभी न करते क्षोभ।
तुम अर्चा से हे प्रभो !, मिट जाये मम क्षोभ॥135॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षोभ्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम गुण नित्य हैं, बने आप 'कूटस्थ'।
तुम पथ का अनुशरण कर, बन जायें हम स्वस्थ॥136॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कूटस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'स्थाणु' हो, गमनागमन विहीन।
पंच परावर्तन हरो, करो हमें स्वाधीन॥137॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी तुम्हारा क्षय नहीं, 'अक्षय' हो भगवान।
अक्षय अर्चा हम करें, दो अक्षय सुखदान॥138॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे श्रेष्ठ त्रिलोक में, आप 'अग्रणी' देव।
तुमको ध्या नासाग्र हम, बनें अग्र जिनदेव ॥139॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्रण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों को शिवसुख दिला, बनें 'ग्रामणी' देव।
तुमको ध्या हम पायेंगे, मोक्षधाम स्वयंमेव ॥140॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ग्रामण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे 'नेता' आप हो, ले जाते शिवधाम।
अतः नित्य तुमको भजे, तीन लोक अविराम ॥141॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग तुमने रचा, बनें 'प्रणेता' नाथ।
प्रणय किया शिव रमा से, हमको भी दो साथ ॥142॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रणेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्याय शास्त्र सिखला बने, 'न्यायशास्त्रकृत' देव।
कर्मों का अन्याय सब, नाशो हे जिनदेव !॥143॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री न्यायशास्त्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शास्ता' बन प्रभु ने दिया, जग को हित उपदेश।
हम हृदयंगम कर उसे, पायें मोक्ष प्रदेश ॥144॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शास्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपति' तीर्थेश तुम, दश धर्मों के ईश।
अपनायें दस धर्म हम, तुम्हें नमावें शीश ॥145॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसहित धर्मात्मा, आप 'धर्म्य' हो नाथ।
पाने आतम धर्म को, तुम्हें नमावें माथ ॥146॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्म्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्ममयी तुम आत्मा, 'धर्मात्मा' जगसिद्ध।
धर्मधार तुम सम प्रभो, बन जायें हम सिद्ध॥147॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मतीर्थकर्त्ता प्रभो, 'धर्मतीर्थकृत' नाम।
धर्मतीर्थ शाश्वत रहे, रहे धर्म का नाम॥148॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मतीर्थकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्वज में वृष है आपके, लांछन वृषभ महान्।
'वृषध्वज' नाम प्रसिद्ध तुम, जैन धर्म की शान॥149॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषाधीश' हो नाथ तुम, पहले धर्माधीश।
तुमने जग वृषमय किया, जय-जय जिन आदीश॥150॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषाधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म पताका आप हो, 'वृषकेतु' है नाम।
धर्मध्वजा हम भी धरें, करें धर्म का नाम॥151॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषकेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मशस्त्र लेकर किया, कर्म शत्रु का नाश।
आप 'वृषायुध' हो प्रभो, कर दो मम दुःख नाश॥152॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मरूप तुम आत्मा, तुम हो 'वृष' भगवान।
हम पायें निजधर्म को, कर सम्यक् श्रद्धान॥153॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी हो तुम धर्म के, पाया 'वृषपति' नाम।
निज वृष पाने हम करें, तुमको नित्य प्रणाम॥154॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते पोषण भरण तुम, तिहुँ जग का जिनदेव।
सच्चे 'भर्त्ता' आप हो, जय भर्त्ता जिनदेव॥155॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य नाम 'वृषभांक' तुम, वृषभ चिन्ह जगसिद्ध।
धर्म धरें हम आप सम, बनें निरामय सिद्ध॥156॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषभांकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पात्रदान आदिक धरम, भव-भव में कर आप।
बनें वृषभ तीर्थेश तुम, धन्य 'वृषोद्भव' आप॥157॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृषोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'हिरण्यनाभि' प्रभो !, नाभि हिरण्य समान।
जैसे तीनों लोक में, मेरु नाभि प्रमाण॥158॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हिरण्यनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करके सत्य प्रत्यक्ष जिन, 'भूतात्मा' कहलाय।
नाथ तिहारे जाप से, भूत-प्रेत भग जाय॥159॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के सब जीव के, रक्षक तुम भगवान।
आप 'भूतभृत्' हो प्रभो, कहते सब विद्वान॥160॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूतभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमन 'भूतभावन' तुम्हें, करी भावना श्रेष्ठ।
करके तुम सम भावना, बन जायें हम श्रेष्ठ॥161॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूतभावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म समय में ही पड़ा, प्रभु तुम अमिट प्रभाव।
'प्रभव' नाम सार्थक किया, हरकर सब दुर्भाव॥162॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस असार संसार से, रहित 'विभव' जिन आप।
पाया वैभव आत्म का, धन्य विभव निष्पाप॥163॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय के तेज से, दीप्यमान भगवान।
तुम्हीं हो 'भास्वान' जिन, बसो हृदय भगवान॥164॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भास्वते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिपल नव उत्पाद व्यय, ध्रौव्य रूप 'भव' आप।
मेरा भव-भव का भ्रमण, हरलो जिन भव आप॥165॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज चैतन्य स्वरूप में, लीन आप परमेश।
'भाव' तुम्हारी भक्ति से, मिले स्वभाव विशेष॥166॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् भ्रमण का अंत तुम, करते देव सदैव।
सिद्ध 'भवान्तक' नाम तुम, हरलो कर्म कुदैव॥167॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भवास से बन गई, धरती स्वर्ण समान।
श्री 'हिरण्यगर्भाय' तुम, बसो हृदय मम आन॥168॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हिरण्यगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत चतुष्टय लक्ष्मी तुम, अंतरंग श्रीमान।
तुमको ध्या 'श्रीगर्भजिन', हम भी हो श्रीमान॥169॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापुण्य से आपको, वैभव मिला अपार।
'प्रभूत विभव' शुभ नाम पा, बाटा सौख्य अपार॥170॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभूतविभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म श्रृंखला तोड़कर, 'अभव' बने जिन नाथ।
जन्म मरण निज नाशने, तुम्हें झुकायें माथ॥171॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होकर स्वयं समर्थ तुम, कर युग नव निर्माण।
'स्वयंप्रभु' बन आपने, किया आत्म कल्याण॥172॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वव्यापि तुम आत्मा, व्यापक केवलज्ञान।
इस कारण तुम्हीं प्रभो, 'प्रभूतात्म' भगवान॥173॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभूतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम सब जीव के, 'भूतनाथ' भगवान।
हम भी आये तुम शरण, कर दो जिन कल्याण॥174॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के पालनहार हो, 'जगत्प्रभू' जिनदेव।
जगत भ्रमण मेरा हरो, जय-जय जिनदेव॥175॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगत्प्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ही सबसे मुख्य हो, 'सर्वादि' जिनराज।
हम पूजें नित आपको, पाने मोक्ष स्वराज॥176॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सर्वदृक' हो प्रभो !, देखा लोक अलोक।
तुम सम चर्या पाल हम, करें आत्म अवलोक॥177॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने सबका हित किया, 'सार्व' कहें सब इन्द्र।
मेरा भी अब हित करो, हे मुनियों के इन्द्र॥178॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सार्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वज्ञेय' ज्ञाता तुम्हीं, जगत् कहें सर्वज्ञ।
हम पूजें नित आपको, बनने जिन सर्वज्ञ।।179।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल दर्शन पूर्ण तुम, सम्यक्दर्शन पूर्ण।
अतः 'सर्वदर्शन' करो, मोह हमारा चूर्ण।।180।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके हित चिन्तक तुम्हीं, करते आप समान।
हम ध्यायें नित आपको, 'सर्वात्मा' भगवान।।181।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तीनों लोक के, आप 'सर्व लोकेश'।
हम भी आये तुम शरण, पूजें तुम्हें हमेश।।182।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वलोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सर्वविद' हो प्रभो !, जाने सर्व पदार्थ।
हम जाने बस आपको, पायें निज परमार्थ।।183।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकजित' तुम बने, सर्वलोक को जीत।
सबसे सुन्दर रूप तुम, जग के सच्चे मीत।।184।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वलोकजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षगति तुम श्रेष्ठतम, सबसे उत्तम ज्ञान।
आप 'सुगति' संज्ञा बनी, दो जिन सम्यक्ज्ञान।।185।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुगतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत' नाम प्रसिद्ध तुम, धरते उत्तम शास्त्र।
तुम सम मोह विनाश हित, पायें श्रुत ब्रह्मास्त्र।।186।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुनते सबकी प्रार्थना, रखते सबका ध्यान।
मेरी भी अर्जी सुनो, हे 'सुश्रुत' ! भगवान॥187॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुश्रुते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे उत्तम वचन तुम, हितकर शास्त्र प्रमाण।
मम वच तुम सम श्रेष्ठ हो, हे 'सुवाक्' भगवान॥188॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप गुरु त्रैलोक्य के, सब विद्या के ईश।
हमको विद्या दान दो, हे 'सूरि' जगदीश॥189॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूरये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारगामी सब शास्त्र के, तुम 'बहुश्रुत' भगवान।
प्रभु तुम अर्चा से मिले, हमको बहुश्रुत ज्ञान॥190॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बहुश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रसिद्ध केवलज्ञान में, विलय हुआ श्रुतज्ञान।
हमको भी वह ज्ञान हो, हे 'विश्रुत' भगवान॥191॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्रुताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकेवल रवि रश्मियाँ, फैली लोक अलोक।
प्रभो 'विश्वतःपाद' तुम, हरो जगत का शोक॥192॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वतःपादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक शिखर पर राजते, पाकर मोक्ष महान्।
पायें तुम सम मोक्ष हम, 'विश्वशीर्ष' भगवान॥193॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रवण ज्ञान शुचितम धरें, 'शुचिश्रवा' भगवान।
तुम अर्चा कर हम वरें, शुचितम केवलज्ञान॥194॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुचिश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत पाकर वरी, संज्ञा 'सहस्रशीर्ष'।
दुःखहर सौख्य अनंत दो, पहुँचाओ जग शीर्ष॥195॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सहस्रशीर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता आतम क्षेत्र के, सर्व क्षेत्र के नाथ।
श्री 'क्षेत्रज्ञ' जिनेश तुम, हमें दीजिये साथ॥196॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेत्रज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञायक द्रव्य अनंत के, 'सहस्राक्ष' जिनदेव।
करने आत्म प्रत्यक्ष हम, पूजें तुम्हें सदैव॥197॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सहस्राक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अनंत पाकर बने, 'सहस्रपाद' जिनदेव।
सेवा से निजबल मिले, तुम सम हे जिनदेव !॥198॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सहस्रपादे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम त्रयकाल के, त्रिभुवन के भर्तार।
तुम ही दुःखहर्त्ता प्रभो, सुख अनंत कर्त्तार॥199॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप महेश्वर विश्व के, सब विद्या के ईश।
मोक्ष महाविद्या वरें, तुम सम हम जगदीश॥200॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वविद्या महेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

श्री दिव्यादि शत नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
सहस्र नाम प्रभु के अति सुन्दर, उनका महाविधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्यभाषापति आदि विश्वविद्या महेश्वरपर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा– अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान॥
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चौपाई

गुण से अति स्थूल कहाये, 'स्थविष्ठ' प्रभु नाम धराये।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें॥201॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थविष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान गुणों से आप वृद्ध हो, आप 'स्थविर' परम शुद्ध हो॥ प्रभु..॥202॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थविराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में अतिशय प्रशस्त हो, 'ज्येष्ठ' नाम जप आत्म स्वस्थ हो॥ प्रभु..॥203॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अग्रगामी हो सबके, 'पृष्ठ' नाम दुनियाँ में चमके॥ प्रभु..॥204॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पृष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको अतिशय प्रिय जिनरायी, अतः 'प्रेष्ठ' जिन संज्ञा पाई॥ प्रभु..॥205॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि अतिशय श्रेष्ठ आपकी, प्रभु कहलाते हो 'वरिष्ठधी'॥ प्रभु..॥206॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वरिष्ठधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव से पूर्ण नित्य हो, तीर्थंकर 'स्थेष्ठ' सिद्ध हो॥ प्रभु..॥207॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से भारी जिन 'गरिष्ठ' हो, इस चौबीसी में वरिष्ठ हो॥ प्रभु..॥208॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गरिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से रूप अनेक तुम्हारे, तीर्थंकर 'बंहिष्ठ' हमारे॥ प्रभु..॥209॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बंहिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन ! तुम अतिशय प्रशस्त हो, 'श्रेष्ठ' नाम से जग प्रसिद्ध हो।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें।।210।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सूक्ष्म आप जिनदेवा, अतः 'अणिष्ठ' कहे श्रुतदेवा।। प्रभु..।।211।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अणिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति गौरव युत वचन मनोहर, तुम 'गरिष्ठगी' हो तीर्थंकर।। प्रभु..।।212।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गरिष्ठगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँगति जग का भ्रमण मिटाया, आप 'विश्वभृत' नाम कहाया।। प्रभु..।।213।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते तुम सब जगत व्यवस्था, आप 'विश्वसृट' हो भगवंता।। प्रभु..।।214।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वसृजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक ईश्वर पद पाये, इसीलिए 'विश्वेट' कहाये।। प्रभु..।।215।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वेटाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वजगत की करते रक्षा, करो 'विश्वभुक्' मेरी रक्षा।। प्रभु..।।216।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विश्वनायक' जगनामी, अखिल लोक के तुम हो स्वामी।। प्रभु..।।217।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानापेक्षा सब जग वासी, जिन तुम कहलाते 'विश्वासी'।। प्रभु..।।218।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वासिसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर आप 'विश्वरूपात्मा', तुम अनेकरूपी ज्ञानात्मा।। प्रभु..।।219।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वरूपात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम हो सबके जेता, नाम 'विश्वजित' विश्वविजेता।। प्रभु..।।220।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्वजिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अन्तक मृत्यु के जेता, 'विजितान्तक' हो कर्म विजेता।। प्रभु..।।221।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विजितान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु संसार भ्रमण विनशाया, 'विभव' नाम का वैभव पाया।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें॥222॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विभय' सब भय विनशायें, तुम सम हम जिन भय विनशायें॥ प्रभु..॥223॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विभयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वीर' अनंतवीर्य बलशाली, तुम पूजक बनता बलशाली॥ प्रभु..॥224॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'विशोक' सब शोक नशायें, सब भक्तों के शोक नशायें॥ प्रभु..॥225॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप बुढ़ापा रहित जिनेशा, 'विजर' नाम पाया परमेशा॥ प्रभु..॥226॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विजराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अतिप्राचीन तुम्हीं हो, अतः 'जरन्' जिननाथ तुम्हीं हो॥ प्रभु..॥227॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जरते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'विराग' जिन राग रहित हो, तुम सम हम वैराग्य सहित हो॥ प्रभु..॥228॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप 'विरत' हो विरत बने जिन, हमें पाप से विरत करो जिन॥ प्रभु..॥229॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विरताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह रहित 'असंग' कहायें, मेरा कर्म कुसंग भगायें॥ प्रभु..॥230॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र जिन तुम 'विविक्त' हो, तुमको ध्या हम भी विविक्त हो॥ प्रभु..॥231॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विविक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोड़ा मत्सर पाप नशाया, बने 'वीतमत्सर' जिनराया॥ प्रभु..॥232॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीतमत्सराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्य जनों के हित चिन्तक हो, तुम 'विनेयजनताबांधव' हो।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें।।233।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विनेयजनताबांधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विलीनाशेषकल्मषं', नाशे कर्म कषाय कल्मषं।। प्रभु..।।234।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विलीनाशेषकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'वियोग' त्रियोग रहित हो, तुम सम हम त्रययोग रहित हो।। प्रभु..।।235।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वियोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग ध्यान मर्मज्ञ जिनेश्वर, आप 'योगविद्' हो तीर्थेश्वर।। प्रभु..।।236।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'विद्वान्' द्रव्य के ज्ञानी, मम अज्ञान हरो हे स्वामी !।। प्रभु..।।237।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विदुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि के आप 'विधाता', धर्मतीर्थ के तुम ही दाता।। प्रभु..।।238।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम कार्य जगत में उत्तम, 'सुविधि' नाम पाया पुरुषोत्तम।। प्रभु..।।239।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुविधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सर्वोत्तम बुद्धि पायी, 'सुधी' नाम पाया जिनरायी।। प्रभु..।।240।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षाँतिभाक्' जिनवर कहलाये, उत्तम क्षमा धर्म फैलाये।। प्रभु..।।241।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहनशीलता इतनी पाई, 'पृथ्वीमूर्ति' जिन संज्ञा पायी।। प्रभु..।।242।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पृथ्वीमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिभाक्' जिन शांति उपासक, हम सब हैं उनके आराधक।। प्रभु..।।243।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतिभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल सम शीतलता तुम देते, इन्द्र तुम्हें 'सलिलात्मक' कहते ।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें॥244॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सलिलात्मकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप वायु सम संग रहित हो, 'वायुमूर्ति' तीर्थेश तुम्हीं हो॥ प्रभु..॥245॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वायुमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह रहित 'असंग' आत्मा हो, मेरा मूर्छाभाव दूर हो॥ प्रभु..॥246॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्याग्नि में कर्म जलाये, 'वन्हिमूर्ति' जिनदेव कहाये॥ प्रभु..॥247॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वह्निमूर्त्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने पाप अधर्म जलाया, श्री 'अधर्मधक्' नाम कहाया॥ प्रभु..॥248॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधर्मधके नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म काष्ठ को होम दिया है, नाम 'सुयज्वा' प्राप्त किया है॥ प्रभु..॥249॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुयज्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'यजमानात्मा' तुम हो दादा, तुमने निज आतम को साधा॥ प्रभु..॥250॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री यजमानात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'सुत्वा' कहलाते, आत्म सुखोदधि में नहलाते॥ प्रभु..॥251॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुत्वने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्रों से पूजे जाते, श्री 'सुत्राम' पूज्य कहलाते॥ प्रभु..॥252॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुत्राम पूजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान यज्ञ सबको सिखलाया, जय 'ऋत्विक' इन्द्रों ने गाया॥ प्रभु..॥253॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋत्विजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप यज्ञ अग्रिम अधिकारी, 'यज्ञपति' तुम हो अविकारी॥ प्रभु..॥254॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री यज्ञपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पूजा के योग्य जिनेश्वर, 'याज्य' नाम पाया परमेश्वर।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें॥255॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री याज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप यज्ञ के अंग जिनेश्वर, श्री 'यज्ञांग' नाम परमेश्वर॥ प्रभु..॥256॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री यज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर जग सुख नष्ट किया है, 'अमृत' नाम प्रसिद्ध किया है॥ प्रभु..॥257॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज कर्मों को होम दिया है, 'हवि' जिनवर तुम नाम हुआ है॥ प्रभु..॥258॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हविषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक व्याप्त तुम ज्ञानी, 'व्योममूर्ति' कहते श्रुतज्ञानी॥ प्रभु..॥259॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्योममूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूप चतुष्टय नहीं तुम्हारे, तुम 'अमूर्त' आत्मा मनहारे॥ प्रभु..॥260॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमूर्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म लेप से रहित जिनेश्वर, हो 'निर्लेप' आप तीर्थेश्वर॥ प्रभु..॥261॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्लेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल से रहित आप 'निर्मल' हो, हमको भी प्रभु निर्मल कर दो॥ प्रभु..॥262॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म गुणों से एक रूप हो, आप 'अचल' जिन सिद्ध रूप हो॥ प्रभु..॥263॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र समान शीतल उज्ज्वल हो, सौम्यमूर्ति जिन परमोज्ज्वल हो॥ प्रभु..॥264॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौम्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सौम्य 'सुसौम्यात्मा' हो, तुम सम सौम्य भव्यात्मा हो॥ प्रभु..॥265॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुसौम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि सम तप तेजस्वी स्वामी, 'सूर्यमूर्ति' जिन अन्तर्यामी।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें॥266॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूर्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय प्रभा आपकी स्वामी, 'महाप्रभा' जिन त्रिभुवनगामी॥ प्रभु..॥267॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मंत्रविद्' मंत्र सिखाओ, मोक्ष प्राप्ति का मंत्र बताओ॥ प्रभु..॥268॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मंत्रविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र शास्त्रकर्त्ता जिनरायी, नाम 'मंत्रकृत' बने सहायी॥ प्रभु..॥269॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वमंत्र से युत 'मंत्री' हो, मोक्ष सिद्धि में महामंत्रि हो॥ प्रभु..॥270॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मंत्रिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंत्रमूर्ति' जिनमंत्र रूप हो, मंत्र गुरु तुम शिव स्वरूप हो॥ प्रभु..॥271॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मंत्रमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अनंत द्रव्य के ज्ञाता, नाम 'अनन्तक' हमें सुहाता॥ प्रभु..॥272॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म बंध से रहित जिनेश्वर, नाम 'स्वतंत्र' सिद्ध परमेश्वर॥ प्रभु..॥273॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वतंत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध तंत्र के जिनकर्ता हो, आप 'तंत्रकृत' जगभर्त्ता हो॥ प्रभु..॥274॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तंत्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतःकरण श्रेष्ठ मनहारा, 'स्वांतः' नाम जगत दुःखहारा॥ प्रभु..॥275॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनकृतांत का अंत किया है, 'कृतांतांत' शुभ नाम किया है॥ प्रभु..॥276॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतांतांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आगम रचना करने वाले, जिन 'कृतांतकृत' जग रखवाले।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें॥277॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतांतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ कुशल जिन पुण्यवान हो, 'कृती' नाम जिन पुण्य दान दो॥ प्रभु..॥278॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म योग्य पुरुषार्थ किया है, जिन 'कृतार्थ' सर्वार्थ दिया है॥ प्रभु..॥279॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतार्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन पूजा योग्य आप हो, जिन 'सत्कृत्य' प्रसिद्ध आप हो॥ प्रभु..॥280॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्कृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'कृतकृत्य' नाम जिन धारें, सर्व कार्य हो चुके तुम्हारे॥ प्रभु..॥281॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतकृत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान तप यज्ञ किया है, नाम 'कृतक्रतु' सिद्ध किया है॥ प्रभु..॥282॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप सदा हैं सदा रहेंगे, 'नित्य' नाम को भक्त भजेंगे॥ प्रभु..॥283॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नित्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'मृत्युंजय' मृत्यु विजेता, हमें बनाओ मृत्यु विजेता॥ प्रभु..॥284॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मृत्युंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमृत्यु' मृत्यु विनाशी, यम को जीत बने शिववासी॥ प्रभु..॥285॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृत्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप शांति अमृत पिलवाते, 'अमृतात्म' जिन ! आप कहाते॥ प्रभु..॥286॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमृतोद्भव' हो तुम देवा, मिला मोक्ष अमृत का मेवा॥ प्रभु..॥287॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमृतोद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप लीन शुद्धात्म स्वरूपी, 'ब्रह्मरूप' परमात्म स्वरूपी।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें।।288।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'परब्रह्म' ब्रह्म को जाना, तुमने पाया मोक्ष खजाना।। प्रभु..।।289।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परब्रह्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मात्मा' तुम ज्ञान स्वरूपी, ज्ञानात्मा चिद् ब्रह्मस्वरूपी।। प्रभु..।।290।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ब्रह्मसंभवाय' जो ध्यायें, वो खुद ब्रह्म रूप हो जाये।। प्रभु..।।291।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मसंभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप महाब्रह्माधिपति हो, सर्व पूज्य 'महाब्रह्मपति' हो।। प्रभु..।।292।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाब्रह्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'ब्रह्मेट' ज्ञान के दाता, हो सर्वज्ञ जगत के त्राता।। प्रभु..।।293।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ब्रह्मेटे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अरहंत सिद्ध पद पाते, 'महाब्रह्मपद ईश' कहाते।। प्रभु..।।294।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाब्रह्मपदेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुप्रसन्न' प्रसन्न सदा हो, भक्तों पर सुप्रसन्न सदा हो।। प्रभु..।।295।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुप्रसन्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रसन्नात्मा' कहलाते, सबको सदा प्रसन्न कराते।। प्रभु..।।296।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रसन्नात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानधर्मदम प्रभु' तुम्हीं हो, ज्ञानी इन्द्रिय जयी प्रभु हो।। प्रभु..।।297।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शांतियुत तुम 'प्रशमात्मा', परम शांति दो हे परमात्मा !।। प्रभु..।।298।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कषाय अति शांत आत्मा, तुम शांतिप्रद 'प्रशांतात्मा'।। प्रभु..।।299।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशांतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'पुराण पुरुषोत्तम' स्वामी, आदिपुरुष हम सबके स्वामी।
प्रभु के सहस्रनाम हम ध्यायें, ध्वजा फलादिक अर्घ चढ़ायें।।300।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुराण पुरुषोत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

स्थविष्ठ आदिक नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
सहस्रनाम प्रभु के अति सुन्दर, उनका महा विधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थविष्ठादि पुराण पुरुषोत्तम पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा– अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान।।
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(अर्द्ध कुसुमलता छंद)

तरु अशोक है चिन्ह मनोहर, 'महाशोकध्वज' नाम महान्।
उनको ध्यायें शोक मिटायें, बन जायें हम भी भगवान।।301।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाशोकध्वजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक रहित जिनदेव आप हो, शरणागत को करें 'अशोक'।
उनकी पूजा करते हम नित, प्रभु सम हम भी बनें अशोक।।302।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अशोकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको सुख देने वाले हो, तुम कहलाते 'कः' भगवान।
सुख अनंत दाता जिनवर का, हम सब करते महाविधान॥303॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्षपथ के सृष्टा हो, 'सृष्टा' कहता है संसार।
अर्घ चढ़ायें वाद्य बजायें, हम सबका कर दो उद्धार॥304॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सृष्टे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पद्म विष्टर' कहलाते, कमलासन पर हो आसीन।
ऐसा दो वरदान हमें जिन, हम तव पद में हो तल्लीन॥305॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्म विष्टराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मालक्ष्मी के ईश्वर तुम, जग कहता तुमको 'पद्मेश'।
जो तुमको ध्याये नित मन में, वह भी बनता है परमेश॥306॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण कमल रचते सुर पद में, जब तीर्थंकर करें विहार।
नाम 'पद्मसम्भूति' को ध्या, पाते सब सुख-शांति अपार॥307॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मसम्भूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभि कमल समान आपकी, 'पद्मनाभि' तुम हो तीर्थेश।
हृदय कमल में आन विराजो, हरो हमारे सब संक्लेश॥308॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मनाभये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सम श्रेष्ठ अन्य नहीं कोई, आप 'अनुत्तर' हो परमेश।
बिन बोले सब उत्तर देते, समाधान करते तीर्थेश॥309॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्माकार गर्भ से जन्मे, 'पद्मयोनि' तुम हो भगवान।
जग का योनिभ्रमण छुड़वाते, करते हम उनका गुणगान॥310॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मयोनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म रूप जग के उत्पादक, 'जगद्योनि' तुम हो जिननाथ।
धर्म जगत् में वास करा दो, तुम्हें झुकायें हम नित माथ॥311॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगद्योनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी तपस्वी तप के द्वारा, करते हैं तुम पद की चाह।
आप 'इत्य' तीर्थंकर पावन, हमें दिखाओ शिवपद राह॥312॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री इत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादिक देवों के द्वारा, तुम हो स्तुति करने योग्य।
हे 'स्तुत्य' तुम्हारा संस्तव, हमें बनाये सिद्धी योग्य॥313॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्तुत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तुतियों के स्वामी तुम ही, 'स्तुतीश्वर' हो जिनदेव।
प्रभु का संस्तव करें रात-दिन, उनकी अर्चा करें सदैव॥314॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्तुतीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तवनार्ह' तुम्हीं परमेश्वर, तव संस्तुति करते दिन-रात।
तव संस्तव से मिले भक्त को, जग सुख व शिव सुख सौगात॥315॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्तवनार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हृषीकेश' जिनदेव आप हो, सभी इन्द्रियाँ तुम आधीन।
हे इन्द्रियवश कर्त्ता ! जिनवर, हम भी तुम सम हो स्वाधीन॥316॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'हृषीकेशाय' नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीत जिनेश्वर, तुम कहलाते हो 'जितजेय'।
मोह शत्रु को जीत आप सम, हम भी बन जायें जितजेय॥317॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितजेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव 'कृतक्रिय' ने कर डाले, करने योग्य सभी सत्कार्य।
तुम भक्ति सब कार्य सिद्धप्रद, उसे करें हम सब अनिवार्य॥318॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतक्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशगण के अधिपति तुम ही, आप 'गणाधिप' हो भगवान।
उस गण में हम भी शामिल हो, करें सदैव तुम्हारा ध्यान॥319॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गणाधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वगणों में आप श्रेष्ठ हो, कहलाते तुम ही 'गणज्येष्ठ'।
जो निशदिन तुमको ही ध्यायें, वह बनता जग में अतिश्रेष्ठ॥320॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गणज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गणना के योग्य 'गण्य' जिन, गुण अगण्य अनुपम अविराम।
हम भी तुम सम गुण अगण्य पा, पायें आतम सुख अविराम॥321॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन पूत पवित्र आप ही, तुम्हीं 'पुण्य' हो हे जिनदेव !।
तुम सम मम आतम पवित्र हो, ऐसा पुण्य जगे स्वयमेव॥322॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कल्याण मार्ग दिखलाते, आगे ले जाते हो नाथ।
'गुणाग्रणी' जिन तुमको पाकर, हम अनाथ हो गये सनाथ॥323॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणाग्रण्ये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'गुणाकर' गुण की राशि, गुणनिधि जिन हो तुम गुणखान।
तुमको ध्या तुम भक्ति रचाकर, हम भी हो तुम सम गुणखान॥324॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणसागर तुम गुण रत्नाकर, 'गुणांभोधि' तुम हो जिनदेव।
गुणसमुद्र हम तुम सम पायें, गुणांभोधि हम बनें सदैव॥325॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणांभोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व गुणों के तुम ज्ञाता हो, तुम 'गुणज्ञ' हो हे भगवान ! ।
तुम सम हम गुणवान बनें जिन, इन भावों से करें विधान॥326॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वगुणों के तुम स्वामी हो, तुम 'गुणनायक' जिन परब्रह्म।
तव गुणपूजक हो गणनायक, पा जायें निज आत्मब्रह्म॥327॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुण का आदर हम करते, 'गुणादरी' तुम हो जिनराज।
तुम सम गुणसागर पायें हम, बन जायें हम भी जिनराज॥328॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणादरिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक दुर्गुण के छेदक, 'गुणोच्छेदी' तुम हो तीर्थेश।
मेरे सब दुर्गुण को छेदों, कृपा करो अब हे परमेश !॥329॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणोच्छेदिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज वैभाविक गुण विनशाकर, आप बनें निर्गुण भगवान।
मेरे सब दुर्गुण विनशाओं, हमें करो निर्गुण भगवान॥330॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र वाणी के धारक, आप 'पुण्यगी' हो भगवान।
तुम सम मम वाणी पवित्र हो, मिटे समस्त वैर अभिमान॥331॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यगिरे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ गुण से शोभित तुम, 'गुण' कहलाते हो भगवान।
हे गुणदाता ! दुर्गुणहंता, बनें आप सम हम गुणवान॥332॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरणागत जीवों के रक्षक, तुम 'शरण्य' कहलाय जिनेश।
आप शरण में हम भी आयें, हमें शरण में रखो जिनेश॥333॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शरण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र वचनों के धारक, 'पुण्यवाक्' जिन तुम कहलाय।
जो श्रद्धा से तुमको पूजें, उनके वचन दोष विनशाय॥334॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप स्वयं अतिशय पवित्र हो, 'पूत' नाम से जग विख्यात।
भक्तों को करते पवित्र तुम, ऐसी महिमा जग विख्यात॥335॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ आप जगज्येष्ठ आप हो, तुम 'वरेण्य' हो हे भगवान !।
तुम सम हम भी श्रेष्ठ बनें जिन, ऐसा हमको दो वरदान॥336॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वरेण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पुण्य के अधिपति हो तुम, धन्य 'पुण्यनायक' जिनदेव।
जो पूजें दिन-रात आपको, बने 'पुण्यनायक' स्वयमेव॥337॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणनातीत गुणों के धारी, तुम 'अगण्य' हो हे भगवान !।
अर्घ चढ़ायें जाप करें हम, तुम सम बन जायें गुणवान॥338॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अगण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति पवित्र बुद्धि के धारक, आप 'पुण्यधी' हो भगवान।
तुम सम सद्बुद्धि पायें हम, हे जिनदेव ! करो कल्याण॥339॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज अनंत गुणों के धारी, आप 'गुण्य' हो हे तीर्थेश !।
आप गुणों का ध्यान करें हम, बनें सुगुण धारी ब्रह्मेश॥340॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया कराया पुण्य आपने, नाम 'पुण्यकृत' पाया नाथ।
आप जाप से पुण्य मिले नित, सिद्ध होय सारे पुरुषार्थ॥341॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'पुण्यशासन' जिनवर का, पुण्य मार्ग शासन बतलाय।
पाप छोड़कर पुण्य करें जो, वही पुण्य शासन बन जाय॥342॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप धर्म के आभूषण हो, 'धर्माराम' सिद्ध तुम नाम।
तुम सम धर्मात्मा बनने हम, निशदिन जपते धर्माराम॥343॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मारामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण समूह के तुम हो आश्रय, तुम 'गुणग्राम' गुणों के धाम।
आप गुणों का कर विधान हम, तुम सम बन जायें गुण ग्राम॥344॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुणग्रामाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यापुण्यनिरोधक' जिनवर, पुण्य पाप का किया निरोध।
शुक्ल ध्यान शुद्धोपयोग से, सब कर्मों का किया निरोध॥345॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यापुण्यनिरोधकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसादिक् सब पाप रहित हो, 'पापापेत' धन्य तुम नाम।
तुम सम पाप रहित होने हम, भजें निरन्तर इक तुम नाम॥346॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पापापेताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विपापात्मा' हो भगवन्, किये पाप आतम से दूर।
तुम भक्ति के दलन यंत्र से, हम भी कर्म करें चकचूर॥347॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विपापात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाप कर्म को नष्ट किया है, आप 'विपाप्मा' हो भगवान।
पाप रहित हमको भी कर दो, इस हेतु हम करें विधान॥348॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विपाप्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष वसु कर्म क्लेश का, जिनवर तुमने किया अभाव।
बनें 'वीतकल्मष' जिनवर तुम, तुम्हें भजें हम धरें उछाव॥349॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीतकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह का सब द्वन्द छोड़कर, तुम 'निर्द्वन्द' बनें भगवान।
तुमको ध्या तुम समव्रत पाकर, हम निर्द्वन्द बनें गुणवान॥350॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्द्वन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद को नाश बनें 'निर्मद' जिन, छोड़ी अहंकार की कार।
उनका महाविधान करें नित, त्यागें मद हम आठ प्रकार ॥351॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्मदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कषायों की ज्वाला को, जिनवर तुमने करके 'शांत'।
शांति सुधामृत दाता जिनवर, तुमको पूज बनें हम शांत ॥352॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्जय शत्रु मोह भट्ट को, जीता आप बनें 'निर्मोह'।
मोहजयी जिनवर को भजकर, हम भी हो जायें निर्मोह ॥353॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्मोहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब उपसर्ग उपद्रव नाशें, तीर्थंकर निरुपद्रव आप।
तुम्हें भजें हम ध्यान लगायें, सर्व उपद्रव हरलो आप ॥354॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरुपद्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलकें झपकें कभी न प्रभु की, 'निर्निमेष' जिनवर हो आप।
उनको भज हम निर्निमेष हो, नाशें हम अपने वसु पाप ॥355॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्निमेषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवलाहार कभी नहीं करते, 'निराहार' तुम हो जिनदेव।
हम भी तुमको पूजें जिनवर, निराहार बनने स्वयमेव ॥356॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निराहाराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की सर्व क्रियायें छोड़ी, 'निष्क्रिय' आप बनें स्वयमेव।
धर्मक्रिया में सक्रिय हो हम, जग में निष्क्रिय हो जिनदेव ॥357॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्क्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा रहित आप तीर्थंकर, 'निरुपप्लव' तुम प्यारा नाम।
सब बाधायें हरो हमारी, इस हित तुम्हें अनंत प्रणाम ॥358॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरुपप्लवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण कलंक रहित जिनवर तुम, 'निष्कलंक' तुम हो तीर्थेश।
आप गुणों की पूजा करके, निष्कलंक हम हो परमेश॥359॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्कलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पापों को दूर हटाया, आप 'निरस्तैना' भगवान।
हमको भी निष्पाप बनादो, हे जिनवर ! कर दो कल्याण॥360॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरस्तैनसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराधों को दूर किया है, 'निद्धूर्तागस्' हो जिनदेव।
सब अपराध मिटाओ जिनवर, अर्घ चढ़ायें तुम्हें सदैव॥361॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्धूतागसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मास्रव से रहित आप हो, धन्य 'निरास्रव' तुम तीर्थेश।
अर्घ चढ़ायें ध्यान लगायें, आस्रवरहित बनें परमेश॥362॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरास्रवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ जग में 'विशाल' तुम, शरणागत को करो निहाल।
आप नाम को जो नित पूजें, वे होते हैं मालामाल॥363॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विशालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान ज्योति के धारक, 'विपुलज्योति' तुम हो भगवान।
मोह तिमिर हरलो हम सबका, हम भी पायें केवलज्ञान॥364॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विपुलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब उपमाओं से ऊपर तुम, उपमा रहित 'अतुल' भगवान।
प्रभु सम अनुपम सुख पाने हम, करते प्रभु का भव्य विधान॥365॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतुलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अचिन्त्य वैभव के धारी, हो 'अचिन्त्य वैभव' सुख धाम।
निज अचिन्त्य वैभव को पाने, हम पूजें प्रभु को अविराम॥366॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचिन्त्य वैभवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव कर्मों का संवर करके, बनें 'सुसंवृत' तुम भगवान।
हमें सुसंवृत कर दो भगवन्, करते हम प्रभु तव गुणगान।।367।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुसंवृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय गुप्ति से रक्षित हो तुम, बनें 'सुगुप्तात्मा' भगवान।
हम भी होय सुगुप्तात्मा जिन, तीन गुप्तियाँ वरें महान्।।368।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुगुप्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वज्ञेय के उत्तम ज्ञाता, आप 'सुभृत' हो हे भगवान !।
हम भी सुभृतज्ञानी बनने, पूज रहे तुमको भगवान।।369।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुनयतत्त्वविद' तुम तीर्थंकर, नय रहस्य ज्ञाता जिनराज।
तुमको ध्यायें भक्ति रचायें, पाने हम प्रज्ञा साम्राज्य।।370।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुनयतत्त्वविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय केवल ज्ञान दिवाकर, आप 'एकविद्या' धर नाथ।
केवलज्ञान एकविद्या को, पाने हम पूजें दिन-रात।।371।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री एकविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बढ़ी-बढ़ी विद्या के स्वामी, 'महाविद्य' तुम हो तीर्थेश।
रत्नत्रय विद्या प्रगटाने, हम तुमको पूजें परमेश।।372।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल प्रत्यक्ष ज्ञान के ज्ञानी, तुम हो 'मुनि' उत्तम गुणखान।
मन से तुम सम मुनि बनकर हम, मदन बाण नाशें भगवान।।373।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो जिनवर सबके स्वामी, अन्तर्यामी 'परिवृढ़' देव।
मेरे मन मन्दिर में आओ, हृदय विराजो हे जिनदेव !।।374।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परिवृढ़ाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग जीवों की रक्षा करते, तुम सबके 'पति' हो परब्रह्म।
निशदिन रक्षा करो हमारी, पा जायें हम भी चिदब्रह्म॥375॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धीश' बुद्धि के स्वामी, बुद्धि का दे दो वरदान।
दुर्बुद्धि सब हरो हमारी, हमको दो प्रभु सम्यक्ज्ञान॥376॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्याओं के अधीश तुम, 'विद्यानिधि' हो श्री जिनराज।
हम पूजें त्रयकाल आपको, दे दो श्री विद्या साम्राज्य॥377॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विद्यानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व द्रव्य प्रत्यक्ष आपके, 'साक्षी' हो तुम श्री जिनदेव।
हो साक्षात् सत्य का दर्शन, तुम सम हमको हे जिनदेव !॥378॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री साक्षिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग के दिग्दर्शक हो, आप 'विनेता' श्री भगवान।
चलें सदा हम मोक्षमार्ग पर, कर दो प्रभु सबका कल्याण॥379॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विनेत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यम को जीत बनें 'विहतान्तक',पाया जिन शासन निर्वाण।
तुमको ध्या हम भी यम जीतें, इस हित करते महा विधान॥380॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विहतान्तकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गतियों से रक्षा करते, जगत् 'पिता' तुम हो जिनदेव।
दुर्गतियों से हमें बचाओ, हम पूजें जिन तुम्हें सदैव॥381॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों के श्रेष्ठ गुरु हो, आप 'पितामह' श्री जिनराज।
करें विधान आपका हम सब, पा जायें शिवपुर साम्राज्य॥382॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जनों का पालन करते, 'पाता' हो तुम श्री भगवान।
हमको पता बताओ निज का, कर दो हे जिनवर ! कल्याण॥383॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पवित्र करते हो उसको, जो भी तुम शरणा में आय।
नाम 'पवित्र' आपका ध्याकर, सर्व जीव पावन हो जाय॥384॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पवित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको शुद्ध पवित्र बनाते, सार्थक है 'पावन' तुम नाम।
तुमको ध्या हम पावन होवें, जपें निरन्तर पावन नाम॥385॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पावनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव तुम सम 'गति' चाहें, आप अगति हो श्री जिनदेव।
अगति गति से रहित बने हम, पंचम गति पायें स्वयमेव॥386॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव के तुम ही रक्षक, 'त्राता' तीर्थंकर भगवान।
त्रिभुवन से तिर जायें हम भी, करके प्रभु का श्रेष्ठ विधान॥387॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-जरा-मृत्यु रोगों के, तुम ही हो हर्त्ता भगवान।
श्रेष्ठ 'भिषग्वर' वैद्य आप ही, करो धर्म की औषधिदान॥388॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भिषग्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ जिनदेव 'वर्य' तुम, हमें श्रेष्ठता करो प्रदान।
तुमको ध्याय विधान रचायें, पायें जिन गुण ज्ञान निधान॥389॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको इच्छित सुख देते हो, देते हो अतिशय वरदान।
'वरद' नाम सार्थक हे प्रभु ! का, दे देकर जग को वरदान॥390॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वरदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ तुम्हारे गुण अति उत्तम, अतः 'परम' तुम हो भगवान।
परम पुण्य जागा हम सबका, रचा आज यह परम विधान॥391॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज पर को करते पवित्रतम, अतः आप कहलाय 'पुमान्'।
तुमको ध्याकर हम पवित्र हो, इस हित करते पूत विधान॥392॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुंसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग का वर्णन करते, तुम उत्तम 'कवि' हो भगवान।
हम जिनवर का काव्य सृजन कर, बन जायें कवि भक्त प्रधान॥393॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुराण पुरुष' हो जिनवर, लिखा आप पर महापुराण।
जिस पुराण को पढ़कर सुनकर, मिट जाता है सर्व गुमान॥394॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुराण पुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप वृद्ध हो आत्म गुणों से, कहलाते तुम 'वर्षीयान'।
हम भी करते ध्यान आपका, पाने सिद्धशिला का यान॥395॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वर्षीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों में आप श्रेष्ठ हो, सार्थक नाम 'ऋषभ' भगवान।
तुम्हें पूज बन जायें श्रेष्ठ हम, इस हेतू करते गुणगान॥396॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ऋषभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर में आदि पुरुष हो, अतः कहाये 'पुरु' भगवान।
तुमको ध्या शिवपुर प्रवेश हो, कर दो पुरु परम उत्थान॥397॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रतिष्ठा-प्रसव' नाथ हो, पायी प्रतिष्ठा व सम्मान।
मोक्ष प्रतिष्ठा होय हमारी, इस हित करते महा विधान॥398॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रतिष्ठा-प्रसवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब उत्तम कार्यों के कारण, तुम पवित्र 'हेतु' हो नाथ।
कर दो हित जिनदेव हमारा, पहुँचे हम त्रिभुवन के माथ॥399॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री हेतवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो जिन 'भुवनैक पितामह', हम सब है तेरी संतान।
जग के एकमात्र गुरु तुम हो, कर दो बच्चों का उत्थान॥400॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भुवनैक पितामहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

महाशोकध्वज आदिक सौ-सौ, नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महाविधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाशोकध्वजादि भुवनैकपितामहपर्यंत शतनाम विभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा- **अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।**
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान॥
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(दोहा)

'श्रीवृक्षलक्षण' प्रभो, हृदय रहे श्रीवृक्ष।
जिसको पूजे रात-दिन, जग सारा प्रत्यक्ष॥401॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीवृक्षलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म रूप हो आप जिन, धन्य 'श्लक्षण' देव।
मिटे कुलक्षण जगत् के, इस हित भजें सदैव॥402॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्लक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण हैं आप में, हो 'लक्षण्य' महान्।
लक्षण अशुभ विनाशकर, बनें आप भगवान॥403॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लक्षण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ लक्षण प्रभु आपके, तन में रहे अनेक।
अशुभ कुलक्षण मिट गये, जिनवर तुमको देख॥404॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुभलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र बिना निज आत्म से, देखें लोक अलोक।
नाम 'निरक्ष' प्रसिद्ध है, हरे सभी दुःख शोक॥405॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर 'पुण्डरीकाक्ष' तुम, नेत्र कमल सम रम्य।
जो पूजें नित आपको, बन जायें अभिरम्य॥406॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्डरीकाक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण से परिपुष्ट हो, 'पुष्कल' तुम भगवान।
जिनगुण सम्पत हित करें, हम नित पुष्कल ध्यान॥407॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्कलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुष्करेक्षण' प्रभो, पुष्कर सम तुम नेत्र।
तुमको पूज हमें मिले, श्री सिद्धों का क्षेत्र॥408॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्करेक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धी के दाता तुम्हीं, श्री 'सिद्धिद्' तीर्थेश।
आत्मसिद्धी हमको मिलें, तुमको ध्या परमेश॥409॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्धसंकल्प''हो, किये सिद्ध संकल्प।
सिद्ध करो संकल्प सब, नाशों सभी विकल्प॥410॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धसंकल्पाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध आपकी आत्मा, हो 'सिद्धात्मा' नाथ।
तुम सम होंवे सिद्ध हम, इस हित नमते माथ॥411॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'सिद्धसाधन' बनें, करके साधन सिद्ध।
तुम्हें साध सिद्धी मिले, जीवन बने प्रसिद्ध।।412।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सिद्धसाधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्धबोध्य' जिन आप हो, करके बोधित बोध।
बुद्ध बोध्य को पूजकर, हमको मिले प्रबोध।।413।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बुद्धबोध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'महाबोधि' जिनम्, त्रिभुवन पूजित बोध।
महाबोधि हमको मिले, ऐसा दो प्रभु बोध।।414।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाबोधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्द्धमान' जिन आपके, गुण निज वृद्धिमान।
सद्गुण वृद्धि के लिए, हम नित करें विधान।।415।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वर्धमानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ 'महर्द्धिक' देव तुम, ऋद्धि-सिद्धि के ईश।
तुम सम तप जो भी करे, बने श्रेष्ठ ऋद्धीश।।416।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महर्द्धिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुयोग मय वेद के, कारण तुम 'वेदांग'।
जाप करें हम आपका, जाने श्रुत सर्वांग।।417।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वेदांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता हो चऊवेद के, धन्य 'वेदविद्' नाम।
अनुयोग विद् हम बनें, इस हित करें प्रणाम।।418।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वेदविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनि तुमको जानते, 'वेद्य' नाम अभिराम।
तुम गुण वेदन से मिले, निश्चय मोक्ष मुकाम।।419।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप दिगम्बर रूप हैं, 'जातरूप' शुभ नाम।
जातरूप हमको मिले, मिटे अधम खल काम॥420॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जातरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाताओं में श्रेष्ठ हो, धन्य 'विदांवर' नाम।
बने विदांवर वह अवश, जो जपता तुम नाम॥421॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विदांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत या केवलज्ञान के, जिनवर तुम हो ज्ञेय।
'वेदवेद्य' शुभ नाम को, पूज मिले श्रुत श्रेय॥422॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वेदवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम अनुभव गम्य हो, जिनवर 'स्वसंवेद्य'।
कर्मरोग हर्त्ता तुम्हीं, हो निस्वार्थी वैद्य॥423॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वसंवेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन वेद से रहित हो, जिनवर आप 'विवेद।
अर्चा कर हम आपकी, निश्चय बनें विवेद॥424॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विवेदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदतांवर' तुम हो प्रभो, वक्ताओं में श्रेष्ठ।
वचन मंत्र जप आपका, बन जायें हम श्रेष्ठ॥425॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वदतांवराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनादिनिधन ' हो, आदि अंत से हीन।
जन्म-मरण को जीतने, हम जिनगुण लवलीन॥426॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनादिनिधनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञा से स्पष्ट तुम, 'व्यक्त' आपका नाम।
निजगुण निधि अब व्यक्त हो, इस हित जपतें नाम॥427॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्यक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवच अति स्पष्ट तुम, 'व्यक्तवाक्' शुभ नाम।
मम वाणी अति शुद्ध हो, इस हित करें प्रणाम ॥428॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्यक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'व्यक्त शासन' प्रभो !, शासन अति स्पष्ट।
जिनशासन में जो चले, करे कर्म को नष्ट ॥429॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री व्यक्तशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगारंभ तुमसे हुआ, 'युगादिकृत' प्रभु आप।
युगल कर्म परिहार कर, हरा भोग संताप ॥430॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगादिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग व्यवस्थापक प्रभो, 'युगाधार' आधार।
युग-युग में तुमने किया, इस युग का उद्धार ॥431॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगाधाराये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगारंभ तुमने किया, धन्य 'युगादि' देव।
युग-युग से यश गा रहे, युगनायक गणदेव ॥432॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगादये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जग के आदि में, 'जगदादिज' जिननाथ।
जगदादिज के चरण में, नतमस्तक मम माथ ॥433॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगदादिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज प्रभाव से कर प्रभु, इन्द्रों को अतिक्रांत।
बने 'अतीन्द्र' जिनेश तुम, करो लोक अतिक्रांत ॥434॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रियगोचर हो नहीं, आप 'अतीन्द्रिय' देव।
सुख अतीन्द्र पाने प्रभु, पूजें तुम्हें सदैव ॥435॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतीन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि के स्वामी तुम्हीं, धन्य 'धीन्द्र' जिन नाम।
कर विधान हम आपका, मिले बुद्धि निष्काम ॥436॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप परम ऐश्वर्य का, अनुभव करते नाथ।
सार्थक नाम 'महेन्द्र' है, पहुँचाते जगमाथ ॥437॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अतीन्द्रिय अर्थ के, दृष्टा हो जिनदेव।
'अतीन्द्रियार्थदृक्' हो प्रभो, दो सद्ज्ञान सदैव ॥438॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अतीन्द्रियार्थ दृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय रहित जिनेश तुम, सिद्ध 'अनीन्द्रिय' नाम।
हम भी तुम सम हो प्रभो, इस हित करें प्रणाम ॥439॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनीन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिन्द्रों से पूज्य तुम, 'अहमिन्द्रार्च्य' जिनेश।
अहम् हरें हम आप सम, तुम सम बनें जिनेश ॥440॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अहमिंद्रार्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्रों से पूज्य हो, 'महेन्द्रमहित' भगवान।
हम भी महाविधान कर, तुम सम हो भगवान ॥441॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेन्द्रमहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में आप 'महान्' हो, जैन धर्म की शान।
हम पूजें नित आपको, तुम सम बनें महान् ॥442॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अति उत्कृष्ट हो, श्री 'उद्भव' भगवान।
उद्भव हो मम आत्म का, करके श्रेष्ठ विधान ॥443॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उद्भवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कारण हो तुम मोक्ष के, 'कारण' नाम प्रसिद्ध।
इस कारण हम पूजते, बनें आप सम सिद्ध ॥444॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव कर्तार तुम, 'कर्त्ता' उत्तम नाम।
कर्त्ता बुद्धि छोड़ हम, पूजें आठों याम ॥445॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवसागर को पारकर, पाया 'पारग' नाम।
भव से पार करो हमे, इस हित करें प्रणाम ॥446॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पारगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव समुद्र से तारते, 'भवतारक' हो आप।
भवदधि से तर जाय हम, सूत्र बताओ आप ॥447॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भवतारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुण अगम अपार हैं, हो 'अगाह्य' तीर्थेश।
आप गुणों का ध्यान कर, भक्त बनें परमेश ॥448॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अगाह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिगंभीर स्वरूप तुम, गुण अति गहन अपार।
'गहन' नामधारी प्रभु, करते भव से पार ॥449॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गहनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्त रूप है आपका, 'गुह्य' आपका नाम।
गुप्त ज्ञान पाये वही, जो पूजे तुम नाम ॥450॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अति उत्कृष्ट हो, तुम 'परार्ध्य' परमेश।
परम धैर्य पा जायें हम, तुमको ध्या धरमेश ॥451॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परार्ध्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति समर्थ है आप में, 'परमेश्वर' हो आप।
पंच परम पद पाय वो, जो करता तुम जाप ॥452॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतर्द्धि' जिनवर तुम्ही, ऋद्धि अचिन्त्य अनंत।
तुम विधान से हे प्रभो !, कर्मों का हो अंत ॥453॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमेयर्द्धि' जिनदेव तुम, ऋद्धि अगम अमेय।
सहज मिले उस भक्त को, जिसके आप विधेय ॥454॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमेयर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचिन्त्यर्द्धि' तीर्थेश तुम, ऋद्धि अपार अचिंत्य।
भक्तों की चिंता हरे, महिमा अगम अचिंत्य ॥455॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचिंत्यर्द्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल बुद्धि पूर्ण तुम, 'समग्रधी' भगवान।
समग्रधी हो आप सम, तुम सम हो गुणवान ॥456॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री समग्रधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबमें मुख्य जिनेश तुम, धन्य 'प्राग्र' तुम नाम।
हम पूजें नित आपको, निशदिन आठों याम ॥457॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मांगलिक कार्य में, प्रथम भजें तुम नाम।
अतः 'प्राग्रहर' आप हो, तुमको करें प्रणाम ॥458॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राग्रहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु लोकाग्र विराजते, नाम आप 'अभ्यग्र'।
सभी व्यग्रता छोड़ हम, बैठें जिनपद अग्र ॥459॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभ्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप विलक्षण जगत से, कहलाते 'प्रत्यग्र'।
तुम दर्शन को नाथ अब, नैन हुए हैं व्यग्र ॥460॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रत्यग्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्त प्रभु हम आपके, सबके स्वामी आप।
इसीलिए तुम 'अग्र' हो, हरते दुःख संताप ॥461॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्रयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रेसर जग धर्म के, 'अग्रिम' नाम पवित्र।
तुमको पूजें हम सदा, जीवन बने पवित्र ॥462॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्रिमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सबसे ज्येष्ठ तुम, 'अग्रज' हो जिननाथ।
श्रमण अनेकों मोक्ष में, गये आपके साथ ॥463॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया महातप आपने, 'महातपा' जिनदेव।
महातपस्वी हम बनें, तुम सम हे जिनदेव !॥464॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महातपसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का तप तेज नित, फैल रहा चहुँ ओर।
'महातेज' हो आप जिन, करें धर्म की भोर ॥465॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महातेजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप का फल अतिश्रेष्ठ तुम, पहुँचाये शिवधाम।
'महोदर्क' जिन आपको, कोटि अनंत प्रणाम ॥466॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महोदर्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में ऐश्वर्य तुम, फैला है जिनदेव।
धन्य 'महोदय' आपको, पूजें विश्व सदैव ॥467॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्भुत यश जिन आपका, फैल रहा चहुँ ओर।
जाप 'महायश' नाम का, देता यश चहुँ ओर॥468॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महायशसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यश तप तेज विशाल तुम, केवलज्ञान विशाल।
'महाधाम' ने धर्म से, जग को किया निहाल॥469॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महासत्त्व' में आत्म बल, शक्ति अपरम्पार।
तुमको ध्या जिनदेव हम, पायें शक्ति अपार॥470॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महासत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृति' जिनदेव तुम, धीरज धरें महान्।
तुम सम धीरज हम धरें, इस हित करें विधान॥471॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाधृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी अधीर होते नहीं, 'महाधैर्य' जिनदेव।
महाधैर्य हमको मिले, तुमको पूज सदैव॥472॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाधैर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारें वीर्य अनंत को, 'महावीर्य' भगवान।
तुम गुण पाने के लिए, करते भव्य विधान॥473॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावीर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महासम्पत्' प्रभो, महा सम्पदावान।
अनंत चतुष्टय के धनी, समवशरण श्रीवान॥474॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महासम्पदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आतम बल प्रगटा प्रभो, बनें 'महाबल' आप।
निर्बल को बल दो प्रभो, करो महाबल आप॥475॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाबलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अनंतों के धनी, 'महाशक्ति' जिनदेव।
जिनगुरु सेवा से मिले, वह शक्ति स्वयमेव ॥476॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्योति के धनी, 'महाज्योति' भगवान।
मंत्र जाप से आपके, मिलता पूरा ज्ञान ॥477॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभव आप अपार है, 'महाभूति' जिनराज।
मंगल द्रव्य चढ़ा तुम्हें, मिलता शिव साम्राज्य ॥478॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाभूतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाद्युति तुम देह में, 'महाद्युति' तुम नाथ।
द्युति बढ़े हर भक्त में, तुमको ध्या हे नाथ ! ॥479॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महामति' हो प्रभो !, अतिशय बुद्धिमान।
नाम जपें हम आपका, बनें महामतिवान ॥480॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्यायवान अतिशय तुम्हीं, 'महानीति' भगवान।
न्याय नीति से सब चलें, इतना दो वरदान ॥481॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महानीतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमावान अतिशय अहा, 'महाक्षांति' भगवंत।
हम भी तुम सम धर क्षमा, करें क्रोध का अंत ॥482॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाक्षान्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयावान अतिशय अहो, धन्य 'महादय' नाम।
जीव दयामय हो प्रभो !, इस हित करें प्रणाम ॥483॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महादयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्राज्ञ' परमेश तुम, प्रज्ञावान महान्।
करते महाविधान हम, दो प्रज्ञा का दान॥484॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाप्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभाग्यशाली तुम्हीं, 'महाभाग' भाग्येश।
भक्ति करे जो भाव से, वही बने भाग्येश॥485॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाभागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मानंद धनी बनें, 'महानंद' भगवान।
परमानंद हमें मिले, करके महाविधान॥486॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वश्रेष्ठ कविराज तुम, 'महाकवि' काव्येश।
काव्यकला उसमें जगे, जो पूजे काव्येश॥487॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाकवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय तेजस्वी प्रभो, आप 'महामह' नाथ।
पूजा हम करते प्रभो, देना भव-भव साथ॥488॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामहसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति विशाल कीर्ति धरें, 'महाकीर्ति' भगवान।
तुम पूजक निश्चय बने, त्रिभुवन कीर्तिवान॥489॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाकीर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्भुत कांतियुक्त तुम, 'महाकान्ति' जिनराज।
अक्षय कांति पाय हम, इस हित पूजें आज॥490॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाकांतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्तुंग शरीर तुम, 'महावपु' जिनदेव।
जिनगुरु पूजा से मिले, चरम काय जिनदेव॥491॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महावपुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप महादानी प्रभो, 'महादान' शुभ नाम।
महादान की शक्ति हित, करते भक्ति प्रणाम॥492॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महादानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी आप हो, 'महाज्ञान' भगवान।
महाज्ञान पाने प्रभो !, हमने किया विधान॥493॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाध्यान जिनराज तुम, 'महायोग' योगीश।
करें ध्यान हम आपका, बनें महा योगीश॥494॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ गुणों के तुम धनी, धन्य 'महागुण' नाम।
तुम पूजा अवगुण हरे, बनवाये गुणधाम॥495॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महागुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महामहपति' हो, सर्व महोत्सव ईश।
उत्सव हो उसके यहाँ, जो पूजें जगदीश॥496॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामहपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्राप्तमहाकल्याणपंच', पाये उत्सव पाँच।
तुम भक्तों पर पाप की, कभी न आये आँच॥497॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राप्तमहापंचकल्याणकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभु' जिन आपका, जग में महाप्रभाव।
तुम भक्तों पर पाप का, होता नहीं दबाव॥498॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाप्रभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य के ईश तुम, 'अष्टम् वसुधाधीश'।
प्रातिहार्य ले हम भजें, त्रैकालिक जगदीश॥499॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अष्टमहाप्रातिहार्याधीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके तुम ईश्वर महा, धन्य 'महेश्वर' देव।
हमने भी माना तुम्हें, इस हित भजें सदैव॥500॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

श्री वृक्षलक्षण आदिक सौ, नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महाविधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीवृक्षलक्षणादि महेश्वर पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा– **अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।**
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान।।
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(काव्य छंद)

सब मुनियों में श्रेष्ठ, 'महामुनि' तुम जिनवर।
उनको भज हम श्रेष्ठ, पालें धर्म दिगम्बर।।501।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामुनये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनालाप विशेष, छोड़ें जिन 'महामौनी'।
तुम सम मौन विशेष, पालें मुनिवर ज्ञानी।।502।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामौनिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाध्यान' भगवान, शुक्ल ध्यान को ध्याया।
करते उत्तम ध्यान, हमने तुमको ध्याया।।503।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाध्यानिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'महादम' देव, अतिशय इन्द्रिय जेता।
जिनगुण भज हम देव, बनें जितेन्द्रिय नेता ॥504॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महादमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति समर्थ वा शान्त, धन्य 'महाक्षम' स्वामी।
हरते सब दुःखक्लांत, श्री जिनवर जगनामी ॥505॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाक्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाशील' जिन नाम, श्रेष्ठ शील के धारी।
जीतें कर्म तमाम, जिनमुद्रा दुःखहारी ॥506॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाशीलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपाग्नि में अघ होम, 'महायज्ञ' कहलाये।
भक्ति लीन भव्यात्म, श्री जिनयज्ञ रचायें ॥507॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महायज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'महामख' नाथ, अतिशय पूज्य कहायें।
पूज्य परम पद हेत, पूजा भव्य रचायें ॥508॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाव्रतपति' जिनेश, महाव्रतों के स्वामी।
मुनिव्रत पाल अशेष, भव्य बनें शिवधामी ॥509॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाव्रतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मह्य' आप भगवान, जगत्पूज्य जिनदेवा।
करके आप विधान, बनें भव्य जिनदेवा ॥510॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकांतिधर' आप, महाकांति के धारी।
हरते सारे पाप, मिथ्या भ्रमतमहारी ॥511॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाकान्तिधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'अधिप' तुम नाम, तुम हो सबके स्वामी।
पहुँचाते शिवधाम, त्रिभुवन अंतर्यामी ॥512॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामैत्रीमय' आप, सबको मित्र बनाया।
हरा क्रोध संताप, वैर भाव विनशाया ।।513।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामैत्रीमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अमेय' भगवान, अमित गुणों के धारी।
बनने हम गुणवान, भक्ति करें अघहारी ।।514।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' जिनराज, मुक्ति उपाय बताया।
उन्हें पूज हम आज, उनका ध्यान लगाया ।।515।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महोपायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम तेज स्वरूप, नाम 'महोमय' आया।
प्रगटाने निज रूप, हमने उनको ध्याया ।।516।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकारुणिक' नाथ, दया धर्म सिखलाया।
पाने करुणा नाथ, हमने पाठ रचाया ।।517।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाकारुण्यकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मन्त्र' रूप भगवान, सब पदार्थ के ज्ञाता।
पाने तुम सम ज्ञान, त्रिभुवन शीश झुकाता ।।518।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मंत्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामंत्र' भगवंत, सब मंत्रों के स्वामी।
करने सब दुःख अंत, हम पूजें जिन स्वामी ।।519।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामन्त्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतियों में अति श्रेष्ठ, 'महायति' भगवंता।
कर हम भक्ति श्रेष्ठ, यति पद पायें महंता ।।520।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महायतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानाद' भगवान, दिव्यध्वनि के धारी।
तुमको भज भगवान, पायें सुख अविकारी।।521।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महानादाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि का घोष,'महाघोष' भगवंता।
त्रिभुवन में कर घोष, बनें दुःखों के हन्ता।।522।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'महेज्य' जिनराज, मह ईज्या अधिकारी।
उनकी ईर्ज्या आज, करते हम सुखकारी।।523।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महसांपत' भगवान, तुममें तेज अनोखा।
तेज प्रताप महान्, पाया तप से चोखा।।524।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महसांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाध्वराधर' आप, प्रज्ञायज्ञ महाना।
पाने प्रज्ञा स्वाद, हमने किया विधाना।।525।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाध्वरधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मभूमि का भार, सर्वश्रेष्ठ जिन धरते।
'धुर्य' आप दुःखहार, सुरपति तुमको कहते।।526।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धुर्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय नाथ उदार, 'महौदार्य' कहलाये।
बनने नाथ ! उदार, हम तुम शरणा आये।।527।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महौदार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेष्ठवाक्' जिन आप, महा इष्ट वचधारी।
करके हम तुम जाप, बने दिव्यध्वनि धारी।।528।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेष्ठवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति महान् तुम आत्म, अतः 'महात्मा' तुम हो।
भवतारक परमात्म, जिनश्रेष्ठात्मा तुम हो ॥529॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम 'महसांधाम', आत्म तेज तप धामा।
ध्यायें हम तुम नाम, तेज वरें अभिरामा ॥530॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महसांधाम्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि प्रधान ऋषिराज, आप 'महर्षि' स्वामी।
हम तुम सम ऋषिराज, बन जायें हे स्वामी ! ॥531॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम उदय महान्, जन्म प्रशस्त कहाया।
'महितोदय' भगवान, हमने तुमको ध्याया ॥532॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महितोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्लेशांकुशनाथ', कर्मों पे तुम अंकुश।
तुमको ध्या भगवान, कांटें कर्म निरकुंश ॥533॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाक्लेशांकुशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शत्रु क्षय हेत, आप 'शूर' जिनदेवा।
दर्शाते शिव खेत, देते शिवसुख मेवा ॥534॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शूराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूतपति' नाथ, सब भूतों के स्वामी।
गणधरादि मुनिनाथ, तुमको पूजें नामी ॥535॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाभूतपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय लोकों में श्रेष्ठ, तुम सबके 'गुरु' राया।
पाने तुम पद श्रेष्ठ, भवि तुम शरणे आया ॥536॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महापराक्रम' आप, श्रेष्ठ पराक्रम धारी।
कर्मविजेता आप, सत शिवपथ दातारी ॥537॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महापराक्रमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंत रहित भगवान, तुम 'अनंत' जिनदेवा।
दो अनंत गुणज्ञान, कर्म अन्त हो देवा ॥538॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्रोधरिपु' आप, क्रोध रिपु के हंता।
क्रोध विजय के सूत्र, दे दो श्री भगवंता ॥539॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाक्रोधरिपवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय वश कर आप, वशी किया जग सारा।
वशीकरण का मंत्र, 'वशी' जिन ! यही तुम्हारा ॥540॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वशिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभवाब्धिसंतारि', भव समुद्र तिरवाते।
भवदधि पार उतार, मुक्तिराज दिलवाते ॥541॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाभवाब्धिसंतारिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूदनमहामोहाद्रि', मोह महाचल भेदा।
भेद सर्व कर्माद्रि, पाया सौख्य अभेदा ॥542॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामोहाद्रिसूदनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय गुणखान, नाम 'गुणाकर' पाया।
बनने सद्गुणवान, हमने तुमको ध्याया ॥543॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महागुणाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक अघ जीत, 'क्षांत' आप कहलाये।
यह गुण पाने हेत, हम तुम शरणा आये ॥544॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि मुनियों के ईश, आप 'महायोगीश्वर'।
तुम्हें नमा हम शीश, योग धरें परमेश्वर ।।545।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महायोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शमी' नाथ ! हो आप, पूर्ण शांति परिणामी।
हमें शांति दो आप, शमदम दाता स्वामी ।।546।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान महाध्यान, 'महाध्यानपति' ध्याकर।
कर कर्मों की हान, बन गये गुण रत्नाकर ।।547।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाध्यानपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्यानमहाशुचिधर्म', महाधर्म के ध्याता।
पाने तुम सम धर्म, भक्त तुम्हें नित ध्याता ।।548।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ध्यानमहाधर्मणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'महाव्रत' नाम, महाव्रतों के धारी।
तुम सम हो परिणाम, हम नित शरण तुम्हारी ।।549।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकर्मरिह' नाथ, कर्मशत्रु के हन्ता।
हम हो तुम सम नाथ ! ऊर्जा दो भगवंता ।।550।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाकर्मारिघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम जिनेश 'आत्मज्ञ', आत्म गुणों के ज्ञाता।
निज सम गुण मर्मज्ञ, हमें बनाओ दाता ।।551।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आत्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादेव' तुम नाथ, देव प्रमुख जिनदेवा।
करें सेव दिन-रात, भक्त मुक्ति हित देवा ।।552।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महादेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सामर्थ्य महान्, 'महेशिता' तुम ईश्वर।
सद्‌गुण यही प्रधान, दे दो हमें जिनेश्वर ॥553॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्लेशों का नाश, करें 'सर्वक्लेशापह'।
करते सब दुःख नाश, जीते कर्म भयावह ॥554॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वक्लेशापहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध आत्मकल्याण, किया 'साधु' बन तुमने।
करने निज कल्याण, तुमको पूजा हमने ॥555॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री साधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वदोषहर' आप, सब दोषों को हरते।
दोष मिटाते आप, हम तुम शरणा वरते ॥556॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वदोषहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरते सब दुःख पाप, 'हर' तुम नाम सही है।
हरने सब संताप, हम तुम शरण लही है ॥557॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण असंख्य धर नाथ, 'असंख्येय' कहलाये।
तुम पद धर हम माथ, असंख्यात गुण पायें ॥558॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंख्येयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अपरिमित धार, 'अप्रमेयात्मा' तुम हो।
हो उसका उद्धार, जिस आत्मा में तुम हो ॥559॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्रमेयात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त स्वरूपी नाथ, सार्थक नाम 'शमात्मा'।
तुम्हें पूज हम नाथ, तुम सम बनें शमात्मा ॥560॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शमात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति आदि गुणखान, 'प्रशमाकर' शान्तिशा।
भव्यों के उर आन, देते शांति हमेशा ॥561॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशमाकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब योगी के ईश, आप 'सर्वयोगीश्वर'।
तुम्हें झुका हम शीश, योग धरें परमेश्वर ॥562॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वयोगीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अचिंत्य' जिनेश, चिंतन में नहीं आते।
सुरगुरु और गणेश, तुम गुण गा नहीं पाते ॥563॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अचिंत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण भावश्रुत रूप, श्रुतमय आप 'श्रुतात्मा'।
पाने श्रुत सत्‌रूप, हम पूजें ज्ञानात्मा ॥564॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रुतात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जानें त्रिजग पदार्थ, 'विष्टरश्रवा' तुम्हीं हो।
तुम सम बनने अर्थ, हम नित भजें तुम्हीं को ॥565॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री विष्टरश्रवसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन को वश कर आप, 'दान्तात्मा' कहलाये।
नशने तुम सम पाप, हम नित तुमको ध्यायें ॥566॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दान्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम हो 'दमतीर्थेश', संयम तीर्थ चलाया।
भोग तजें योगेश, कर्म समूह जलाया ॥567॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दमतीर्थेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप योगमय नाथ, 'योगात्मा' युगत्राता।
योग व्रतों के साथ, यथाख्यात सुखदाता ॥568॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्वव्याप्त तुम ज्ञान, आप 'ज्ञानसर्वग' हो।
देते सम्यक् ज्ञान, आप ज्ञान मर्मग हो ।।569।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानसर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर आतम का ध्यान, त्रिजग प्रमुख पद पाया।
बन त्रैलोक्य 'प्रधान', मोक्ष मार्ग दर्शाया ।।570।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रधानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान स्वरूपी नाथ, 'आत्मा' नाम तुम्हारा।
दो प्रज्ञामय साथ, हमने तुम्हें पुकारा ।।571।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री आत्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर प्रकृष्ट सत्कार्य, आप 'प्रकृति' कहाये।
आत्म विजय अनिवार्य, आप प्रथम बतलायें ।।572।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पा लक्ष्मी उत्कृष्ट, 'परम' नाम तुम पाया।
हरें कर्म निकृष्ट, हमने तुमको ध्याया ।।573।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदय पाय उत्कृष्ट, 'परमोदय' कहलाये।
वैभव सर्वोत्कृष्ट, भक्त तुम्हारे पायें ।।574।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर अघ बन्धन क्षीण, 'प्रक्षिणबंध' कहाये।
कर दो मम अघ क्षीण, हम जिन भक्ति रचायें ।।575।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रक्षीणबंधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कामारि' जिनेश, कामदेव के जेता।
जगविजयी कामेश, तुम हो कामविजेता ।।576।।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जग कल्याण, आप 'क्षेमकृत' स्वामी।
कर दो मम कल्याण, क्षेमंकर जिन स्वामी।।577।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेमकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय उपदेश, दिया 'क्षेमशासन' ने।
उत्तम मोक्ष प्रदेश, पाया जिनशासन में।।578।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेमशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम ओंकार स्वरूप, 'प्रणव' नाम तुम पावन।
पावें हम जिन रूप, ध्यान करें अति पावन।।579।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रणवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिजग नमस्कृत आप, 'प्रणत' बनें जिनरायी।
नमन हरे सब पाप, हमने भक्ति रचायी।।580।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रणताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दे जीवन के सूत्र, 'प्राण' बने जिनरायी।
पाने हमने सूत्र, तुम गुण महिमा गायी।।581।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके रक्षक आप, 'प्राणद' हो परमेश्वर।
करते हम तुम जाप, प्राणदान दो ईश्वर।।582।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राणदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रणत जनों के ईश, धन्य आप 'प्रणतेश्वर'।
प्रणमें हम जगदीश, कृपा करो परमेश्वर।।583।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रणतेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रमाण' हो नाथ, केवलज्ञान अपेक्षा।
प्रज्ञा में दो साथ, करना नहीं उपेक्षा।।584।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रमाणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख अनंत दृग ज्ञान, उत्तम निधी के स्वामी।
तुम 'प्रणिधि' भगवान, उत्तम निधी दो स्वामी॥585॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रणिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दक्ष' आप भगवान, सर्व प्रवीण समर्था।
आत्म कला का ज्ञान, दे दो सर्व समर्था॥586॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहज सरल भगवंत, 'दक्षिण' संज्ञा पायी।
किया कपट का अंत, माया रिझा न पायी॥587॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दक्षिणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते प्रज्ञायज्ञ, तुम 'अध्वर्यू' देवा।
ज्ञानार्थी हम अज्ञ, करते तुम पदसेवा॥588॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अध्वर्यवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षमार्ग की राह, 'अध्वर' तुम्हीं दिखाते।
उसकी मन में चाह, रख हम भक्ति रचाते॥589॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अध्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप सदा सुख रूप, 'आनंद' नाम कहाया।
पाने तुम समरूप, हमने तुमको ध्याया॥590॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री आनंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको दे आनंद, 'नंदन' बनें जिनेश्वर।
पाने वह आनंद, हम पूजें परमेश्वर॥591॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा समृद्धिमान, 'नन्द' तुम्हीं जिनचंदा।
बनने आप समान, पूजें हम श्री नंदा॥592॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वंद्य' आप अभिवंद्य, इन्द्रादिक के द्वारा।
हम पूजें जिनवंद्य, तिरने भवदधि खारा ॥593॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री वंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निंदा रहित 'अनिंद्य', पद अनिंद्य के दाता।
जिन ! तुम रूप अनिंद्य, जग को सदा लुभाता ॥594॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनिंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभिनन्दन' तुम नाम, प्रशंसनीय तप धारी।
तुम विधान सुख धाम, मोक्ष सौख्य दातारी ॥595॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव कर नष्ट, बने 'कामहा' देवा।
करने काम विनष्ट, हम करते तुम सेवा ॥596॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दे अभीष्ट फल दान, 'कामद' बनें जिनेश्वर।
करने आत्मोत्थान, हम पूजें परमेश्वर ॥597॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक चहेता आप, तुम ही 'काम्य' मनोहर।
जगहित कर निष्पाप, आप सर्व मंगलकर ॥598॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री काम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामधेनु' जिनराज, सर्व मनोरथ पूरे।
तुम्हें भजें हम आज, पूरो काम अपूरे ॥599॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामधेनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीत, बनें 'अरिंजय' देवा।
हम भव्यों के मीत, पूजें भव्य सदैवा ॥600॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अरिंजयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

महामुनि से अंत अरिंजय, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामुनि आदि अरिंजय पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा– **अंतरंग बहिरंग द्वय, लक्ष्मी युत श्रीमान।**
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान॥
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(दोहा)

आप असंस्कृत किन्तु जिन, 'सुसंस्कार' भगवान।
रत्नत्रय संस्कार दो, इस हित करें विधान॥601॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंस्कृत सुसंस्काराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वाभाविक तुम रूप है, 'प्राकृत' है तुम नाम।
पाने तुम सम रूप जिन, तुमको कोटि प्रणाम॥602॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राकृताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वैकृतांतकृत' तुम बनें, नश रागादि विकार।
कर्मों का आतंक हर, हम भी हो अविकार॥603॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वैकृतांतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्मों का अंत कर, बनें 'अंतकृत' नाथ।
निज कर्मों के नाशहित, हम सब हैं नत माथ॥604॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अंतकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय वच कांति सुभग, सिद्ध 'कांतगु' नाम।
दुर्भग हर पाने सुभग, तुम्हें अनंत प्रणाम॥605॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कांतगवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अति सुन्दर नाथ हो, जग प्रसिद्ध श्री 'कान्त'।
तुम पद पंकज पूजकर, सभी पाप हो शान्त॥606॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री कान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्तित फलदाता तुम्हीं, 'चिन्तामणि' भगवान।
सब चिंता के नाश हित, हमने किया विधान॥607॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिंतामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम 'अभीष्टद' पा लिया, दे अभीष्ट फल दान।
मोक्ष अभीष्ट हमें प्रभो, इस हित करें विधान॥608॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभीष्टदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई न जीत सका तुम्हें, धन्य 'अजित' भगवान।
अजित शक्ति हमको मिलें, करके अजित विधान॥609॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जितकामारि' तुम बनें, काम अरि को जीत।
कामजयी बनने करें, हम तुम पद से प्रीत॥610॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितकामारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधि रहित तुम रूप गुण, 'अमित' आप भगवान।
अमित शक्ति पाने प्रभो, हमने किया विधान॥611॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमितशासन' बनें, दे अनुपम उपदेश।
अनुपम भक्ति कर प्रभो, हमें मिले जिनवेष ॥612॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमितशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध जीत कहलाय तुम, 'जितक्रोध' भगवान।
क्रोध विजय हित हम करें, जिनवर नाम विधान ॥613॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितक्रोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीत अमित्रों को प्रभो, 'जितामित्र' कहलाय।
कर्मशत्रु को छोड़ जिन, सबके मित्र कहाय ॥614॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितामित्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब क्लेशों को जीत जिन, आप बनें 'जितक्लेश'।
प्रभु के नाम विधान से, मिटें सभी संक्लेश ॥615॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितक्लेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता जब यमराज को, पड़ा 'जितांतक' नाम।
यम पर जय पाने प्रभो, हम पूजें तुम नाम ॥616॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितांतकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म शत्रुओं को हरा, पाया नाम 'जिनेन्द्र'।
उन पर जय पाने प्रभो, पूजें तुम्हें शतेन्द्र ॥617॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाया परमानंद को, जिनवर 'परमानंद'।
हम पूजें नित आपको, पाने परमानंद ॥618॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब मुनियों के नाथ हो, त्रिभुवन कहें 'मुनीन्द्र'।
मुनिव्रत साधन के लिये, हम पूजें बन इन्द्र ॥619॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुन्दुभि सम गम्भीर ध्वनि, धरें 'दुन्दुभिस्वन' देव।
हम भी पाने वह ध्वनि, पूजा करें सदैव ॥620॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुन्दुभिस्वनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन्दनीय सब इन्द्र से, 'महेन्द्रवंद्य' भगवान।
हम भी नित वन्दन करें, करते महाविधान ॥621॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महेन्द्रवंद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगीजन के इन्द्र तुम, योगीराज 'योगीन्द्र'।
तीन योग से हम जजें, योगार्थे योगीन्द्र ॥622॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतियों के नायक तुम्हीं, यतिपति श्रेष्ठ 'यतीन्द्र'।
यतिपद हेतु प्रयत्न से, हम नित जपें यतीन्द्र ॥623॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री यतीन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'नाभिनन्दन' प्रभो, पिता नाभि महाराज।
त्रिभुवन अभिनन्दन करें, अर्चें भव्य समाज ॥624॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नाभिनन्दनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'नाभेय' हो, नाभिराज सन्तान।
शरणागत को दे अभय, करें पूर्ण उत्थान ॥625॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नाभेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभि से उत्पन्न हो, श्री 'नाभिज' भगवान।
जोड़ जीव को धर्म से, कर देते गुणवान ॥626॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नाभिजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म रहित हो आपने, पाया नाम 'अजात'।
जन्म श्रृंखला काटने, हम नित जपें अजात ॥627॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम व्रत को धारकर, 'सुव्रत' बने जिनेन्द्र।
सुव्रत पाने आपको, पूजें सर्व सुरेन्द्र ॥628॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मनु' बन मानव को दिया, जीवन यापन ज्ञान।
सिद्ध रूप पाने किया, हमने महाविधान ॥629॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अति उत्कृष्ट जिन, सार्थक 'उत्तम' नाम।
उत्तम से उत्कृष्टतम, पद दाता तुम नाम ॥630॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्तमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भेदरहित गुणधारते, जिनवर आप 'अभेद्य'।
भेदरहित गुण के लिए, हम नित जपें अभेद्य ॥631॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाश रहित तुम हो प्रभो, नाम 'अनत्यय' सिद्ध।
पूजें हम तुमको विभो, बनने अव्यय सिद्ध ॥632॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपश्चरण करके बनें, 'अनाश्वान' भगवान।
तुमको ध्या हम भी बनें, अनाशवान गुणवान ॥633॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनाश्वसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप वास्तविक हो सुखी, 'अधिक' नाम जगश्रेष्ठ।
अधिक भक्ति कर आपकी, बन जायें हम श्रेष्ठ ॥634॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधिकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुओं में अतिश्रेष्ठ हो, 'अधिगुरु' तुम गुरुराज।
गुरु पूजा कर श्रेष्ठ हो, निश्चय शिष्य समाज ॥635॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधिगुरवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ वचन जिन आपके, 'सुधी' तुम सुधा समान।
कर सुधार हर भव्य का, करते सिद्धी प्रदान॥636॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम बुद्धि आपकी, आप 'सुमेधा' सिद्ध।
हम अर्चा कर आपकी, बनें सुमेधा सिद्ध॥637॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमेधसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया पराक्रम कर्म से, 'विक्रमी' बन भगवान।
विक्रम पाने आप सम, हमने किया विधान॥638॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विक्रमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके अधिपति आप हो, 'स्वामी' सर्व समर्थ।
तुम सम साधें धर्म हम, कभी न हो असमर्थ॥639॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वामिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दुराधर्ष' जिन आपका, कोई न पाये पार।
जिसके मन में तुम बसे, वो बल वरें अपार॥640॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दुराधर्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की अभिलाषा तजी, धन्य 'निरुत्सुक' नाथ।
उत्सुक हम तुम भक्ति में, अब हम नहीं अनाथ॥641॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरुत्सुकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर विशेष तप साधना, जिनवर बनें 'विशिष्ट'।
जिनगुण पाने हम करें, अर्चा नित्य विशिष्ट॥642॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विशिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्ट पुरुष को इष्ट हो, आप 'शिष्टभुक्' शांत।
बनें शिष्ट हम आप सम, कभी न होय अशांत॥643॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिष्टभुजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदाचार से पूर्ण हो, 'शिष्ट' आप भगवान।
शिष्टाचार सिखा हमें, करो नाथ उत्थान ॥644॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके तुम विश्वास हो, 'प्रत्यय' ज्ञान स्वरूप।
तुम पर दृढ़ विश्वास रख, हम पूजें तुम रूप ॥645॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रत्ययाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप मनोहर जगत् में, वरा 'कामना' नाम।
तुम पद की ले कामना, हम पूजें तुम नाम ॥646॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप से रहित हो, आप 'अनघ' जिनराज।
बनें अनघ हम आप सम, पूर्ण करो मम काज ॥647॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करते जग कल्याण नित, तुम 'क्षेमी' भगवंत।
क्षेम हमारा भी करो, सब दु:ख हरो भदंत ॥648॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेमंकर जिन ! आपने, किया विश्व कल्याण।
भव्यों को कल्याणकर, करो नाथ कल्याण ॥649॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेमंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षय' जिन क्षय रहित हो, देते अक्षय दान।
अक्षय जिन को हम भजें, पाने अक्षय ज्ञान ॥650॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अक्षय्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेमधर्मपति' आप हो, क्षेम धर्म के ईश।
करने निज कल्याण हम, तुम्हें नमावें शीश ॥651॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षेमधर्मपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण क्षमा से युक्त तुम, 'क्षमी' तुम्हारा नाम।
क्षमा हेतु हम नित भजें, तुमको आठों याम ।।652।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षमिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अल्पज्ञानियों के लिये, जिनवर तुम 'अग्राह्य'।
पर जो तुमको पूजता, उसको तुम सुग्राह्य ।।653।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यज्ञानी के लिए, आप 'ज्ञाननिग्राह्य'।
प्रज्ञा हित हम पूजते, हमको करो सहाय ।।654।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानानिग्राह्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ध्यानगम्य' जिनवर तुम्हें, ध्यायें ध्यानी संत।
पूजें ध्यायें हम तुम्हें, करें कर्म का अंत ।।655।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ध्यानगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अतिउत्कृष्ट तुम, धन्य 'निरुत्तर' नाम।
वरें निरुत्तर आत्मबल, इस हित करें प्रणाम ।।656।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरुत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सुकृती' हो प्रभो, पुण्यवान गुणखान।
तुम पूजा से पुण्य हो, करते हम गुणगान ।।657।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुकृतिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पादक तुम शब्द के, 'धातु' सार्थक नाम।
शब्द ज्ञान पाने प्रभो, हम नित करें प्रणाम ।।658।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धातवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'इज्यार्ह' हो, तुम पूजा के योग्य।
हम विधान कर आपका, बनें मुक्ति के योग्य ।।659।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री इज्यार्हाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व नयों का ज्ञान दे, बनें 'सुनय' भगवान।
हम त्रयकालिक भक्ति कर, पा जायें नय ज्ञान॥660॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुनयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में आपके, दिखते आनन चार।
'चतुरानन' भगवान तुम, करते धर्म प्रचार॥661॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुराननाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम लक्ष्मी के वास हो, 'श्रीनिवास' भगवान।
जो पूजे नित आपको, वो बनता श्रीमान॥662॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीनिवासाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चतुर्वक्त्र' जिन आपके, मुख दिखते हैं चार।
समवशरण में चहुँमुखी, करते तीर्थ प्रचार॥663॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्वक्त्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'चतुरास्य' हो, दिखते चारों ओर।
धर्म सभा में बैठते, भविजन भाव विभोर॥664॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुरास्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँमुख धर्म बढ़ा रहे, 'चहुँमुख' हो जिन आप।
चहुँमुख हम बढ़ते रहे, चहुँमुख भज निष्पाप॥665॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्मुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'सत्यात्मा', पाया सत्य स्वरूप।
तुम्हें पूज भव्यात्मा, पायें सत्य स्वरूप॥666॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्चे वैज्ञानिक तुम्हीं, नाम 'सत्यविज्ञान'।
जिन पूजा व ध्यान से, जगें भेदविज्ञान॥667॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यविज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यवचन जिन आपके, 'सत्यवाक्' है नाम।
सत्य वचन पाने प्रभो, तुम्हें अनंत प्रणाम ॥668॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सत्यशासन' विभो, सत्य धर्म उपदेश।
देकर पहुँचाते प्रभो, सबको मोक्ष प्रदेश ॥669॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्चित् आशीर्वाद दो, 'सत्याशी' भगवान।
पाने सत्य स्वरूप को, हमने किया विधान ॥670॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्याशिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्यप्रतिज्ञ जिनेश तुम, नाम 'सत्यसन्धान'।
तजने सर्व असत्य को, हमने किया विधान ॥671॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यसन्धानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य रूप तीर्थेश तुम, सार्थक संज्ञा 'सत्य'।
कर पूजा हम आपकी, पायें उत्तम सत्य ॥672॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नितप्रति तत्पर सत्य में, 'सत्यपरायण' आप।
सत्यपरायण हम बनें, कर तव पूजन जाप ॥673॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सत्यपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन अति स्थिर आप हो, तुम सम सब अरिहंत।
'स्थेयान' भगवान तुम, करो दुःखों का अंत ॥674॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विश्वव्यापी स्थूल हो, 'स्थवीयान्' भगवान।
त्रैकालिक सुख हम वरें, कर अर्चा गुणध्यान ॥675॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति समीप हो भक्त के, जिनवर 'नेदीयान्'।
आप हमारे मन बसो, हम नित करते ध्यान॥676॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नेदीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापों से अतिदूर हो, 'दवीयान्' जिनदेव।
पाप मिटाने हम भजें, तुमको देव सदैव॥677॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दवीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दूरदर्शन' प्रभो, दर्शन दे अतिदूर।
समोशरण में दूर से, कर देते अघ चूर॥678॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दूरदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु से भी अति सूक्ष्म हो, नाथ 'अणोरणीयान्'।
हम विधान कर आपका, पायें मुक्ति स्थान॥679॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अणोरणीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्तु न सदा अणुरूप हो, नाम 'अनणु' भगवान।
हम अति उत्तम द्रव्य से, करते नाम विधान॥680॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'गरीयसामाद्य गुरु', आदि गुरु गुरुदेव।
हम अर्चा कर आपकी, काँटें कर्म कुदैव॥681॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गरीयसामाद्यगुरुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदायोग में लीन हो, 'सदायोग' भगवान।
हम अर्चा कर आपकी, करें योग वा ध्यान॥682॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदायोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मिक आनंद का, सदाभोग कर आप।
छोड़ दिये भव भोग सब, 'सदाभोग' निष्पाप॥683॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदाभोगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदातृप्त' जिन ! आप हो, निज सुख में सन्तुष्ट।
तुम सम कर व्रत ध्यान हम, हों निज में संतुष्ट॥684॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदातृप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाशिव' हो प्रभो, करें सदा कल्याण।
सदा पूजते हम तुम्हें, कर दो अब कल्याण॥685॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदाशिवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदाज्ञानमय तुम विभो, 'सदागति' तीर्थेश।
हर लो अब अज्ञान तम, हम पूजें सर्वेश॥686॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदागतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदासुखी जिन ! आप हो, 'सदासौख्य' सौख्येश।
वह सुख पाने हम सदा, भजें तुम्हें तीर्थेश॥687॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदासौख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सदाविद्य' जिन ! आप में, विद्या केवलज्ञान।
भजें जपें तव मंत्र हम, दो जिन ! अक्षयज्ञान॥688॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदाविद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा उदय जिन ! आपका, नाम 'सदोदय' सिद्ध।
उदय हमारा भी करो, काम करो सब सिद्ध॥689॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ध्वनि जिन ! आपकी, उत्तम नाम 'सुघोष'।
वह ध्वनि पाने हम करें, प्रभु का नित जयघोष॥690॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुघोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति सुन्दर मुख आपका, 'सुमुख' मनोहर रूप।
दर्शन पा जिन ! आपका, मिले सुमुख जिन रूप॥691॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुमुखाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त रूप जिनदेव तुम, 'सौम्य' सौम्यकर नाम।
हम हो तुम सम सौम्य अब, ध्यायें बस तुम नाम॥692॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सौम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखदायक सब जीव को, 'सुखद' तुम्हारा नाम।
सुख मिलता उस भक्त को, सुखद भजे जो नाम॥693॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुखदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबका हित करते 'सुहित', हितकर है तुम धर्म।
निज हित हम पूजें तुम्हें, पाने को शिव शर्म॥694॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन तुम उत्तम हृदय, 'सुहृत्' सुकोमल भाव।
हम ना हो दुर्दय हृदय, पा तुम पद की छाँव॥695॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुहृदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सुगुप्त' सुरक्षितं, तुम्हें न पायें मूढ़।
भव्यों के मन में बसे, मिथ्यात्वी को गूढ़॥696॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुगुप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्तियों को धरा, 'गुप्तिभृत' गुप्तेश।
मोक्ष गुप्ति से ही मिले, कहते तुम गुप्तेश॥697॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गुप्तिभृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके रक्षक देव हो, 'गोप्ता' तुम गुप्तीश।
गुप्त ज्ञान अघ विजय का, हमको दो गुप्तीश॥698॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री गोप्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम 'लोकाध्यक्ष' हो, जाना लोक प्रत्यक्ष।
साक्षात्कार त्रिलोक का, करते प्रभु निष्पक्ष॥699॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय दम कर सहज ही, बनें 'दमेश्वर' देव।
इन्द्रिय दमन बड़ी कला, सिखलाओ हे देव !॥700॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दमेश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

असंस्कार से अंत दमेश्वर, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंस्कृत सुसंस्कार आदि दमेश्वर पर्यन्त शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा– अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान॥
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

दोहा

'बृहत्वृहस्पति' तुम विभो, इन्द्रों के गुरुदेव।
वृहत्ज्ञान पाने सदा, हम पूजें जिनदेव॥701॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बृहत्वृहस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्त वचनों के धनी, 'वाग्मी' तुम भगवान।
वाक्सिद्धी पाने प्रभो, हमने किया विधान॥702॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वाग्मिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों के तुम हो पति, 'वाचस्पति' भगवंत।
दिव्य वचन शक्ति मिले, तुमसे अवश भदंत॥703॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वाचस्पतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि है उत्कृष्ट तुम, 'उदारधी' धीमान।
वैसी बुद्धि दो हमें, हम करते तुम ध्यान॥704॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उदारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनन शक्ति से युक्त हो, श्री 'मनीषी' मुनिनाथ।
मननशील हम भी बनें, पूजें हम मुनिनाथ॥705॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनीषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप बुद्धि चातुर्य हो 'धिषण' धन्य बुद्धीश।
करके प्रभु आराधना, होवें हम बुद्धीश॥706॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धिषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारण बुद्धि तुम प्रबल, धीदाता 'धीमान'।
ध्यान करें हम आपका, बन जायें धीमान॥707॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धीमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि के स्वामी तुम्हीं, 'शेमुशीष' बुद्धीश।
कर विधान हम आपका, बुद्धिमान हो ईश॥708॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शेमुशीषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब वचनों के नाथ तुम, 'गिरांपति' भगवान।
शब्द ब्रह्म को जानने, हमने किया विधान॥709॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गिरांपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम रूप अनेक हैं, 'नैकरूप' हो आप।
आप रूप का ध्यान कर, होवें हम निष्पाप॥710॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नैकरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नयोत्तुंग' ने पा लिया, नय का पार अपार।
तुमको भज नय कुशल हो, नाशें मोह अपार ॥711॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नयोत्तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनेक तुम धारते, 'नैकात्मा' जिनदेव।
निज गुण पाने के लिए, पूजें हम जिनदेव ॥712॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नैकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकान्त मय द्रव्य सब, बतलाते जिन ! आप।
'नैकधर्मकृत' नाम का, करते हम नित जाप ॥713॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नैकधर्मकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक त्रिकाल सब, नाथ आपके ज्ञेय।
'अविज्ञेय' छदमस्थ को, आप हमारे ध्येय ॥714॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अविज्ञेयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतर्क्यात्मा' प्रभो, तर्क वितर्क विहीन।
तुमको पूजें हम सदा, करो हमें स्वाधीन ॥715॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्रतर्क्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता सब कर्त्तव्य के, तुम 'कृतज्ञ' भगवान।
तुम पूजा से हो हमें, कर्त्तव्यों का भान ॥716॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण सर्व पदार्थ के, जिनवर आप बताय।
'कृतलक्षण' जिन आपने, षट् कर्त्तव्य बताय ॥717॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृतलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानगर्भ' जिन आपके, अंतरंग में ज्ञान।
ज्ञानगर्भ को पूजकर, हम भी पायें ज्ञान ॥718॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम दयालु आप हो, 'दयागर्भ' जिनदेव।
दया धर्म संसार को, देते आप सदैव ॥719॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयागर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भोत्सव में आपके, बरसे रत्न अपार।
'रत्नगर्भ' जिन आपने, भरें जगत् भंडार ॥720॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रत्नगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप्यमान जिन आपका, सिद्ध 'प्रभास्वर' नाम।
आत्म प्रभा से हर लिया, जग का तिमिर तमाम ॥721॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रभास्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भाशय तुम पद्म सम, 'पद्मगर्भ' है नाम।
पद्म चढ़ा तव पाद में, हम नित करें प्रणाम ॥722॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पद्मगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्गर्भ' के ज्ञान में, जग प्रतिबिम्बित होय।
जो आये तव शरण में, कभी नहीं वो रोय ॥723॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगद्गर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम गर्भावास में, बना हेम मय लोक।
'हेमगर्भ' जिन आपने, जग को किया अशोक ॥724॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हेमगर्भाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर दर्शन आपके, सिद्ध 'सुदर्शन' नाम।
सुन्दर रूप उसे मिले, जो पूजे तुम नाम ॥725॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुदर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन तुम 'लक्ष्मीवान' हो, अंतरंग श्रीमान्।
समोशरण आदिक बहि, लक्ष्मीधर भगवान ॥726॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लक्ष्मीवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिदशाध्यक्ष' जिनेश तुम, देवों के अध्यक्ष।
देव असंख्यों पूजते, तुमको आ प्रत्यक्ष ॥727॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिदशाध्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृढ़ीयसे' जिनदेव तुम, दृढ़ रत्नत्रयवान।
दृढ़ता से शिवमार्ग को, प्रगटाया तुम आन ॥728॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृढ़ीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी आप 'इन', जिनवर वृषभ महान्।
तुम्हें भजें हम रात-दिन, पाने मोक्ष महान् ॥729॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री इनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'इशिता' बन गये, पा सामर्थ्य अनंत।
बन समर्थ हम आप सम, करें कर्म का अंत ॥730॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री इशित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों के मन को हरें, आप 'मनोहर' नाम।
मनहारी जिनदेव का, हम जपते नित नाम ॥731॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनोहराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मनोज्ञांग' जिन आप हो, अंग मनोज्ञ विशेष।
अंग मनोज्ञ मिले उन्हें, जो पूजें परमेश ॥732॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मनोज्ञांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धैर्यवान जिनदेव तुम, नाम आपका 'धीर'।
धर्मधीर जिन जगत को, पहुँचाते भव तीर ॥733॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन तुम 'गंभीर' जिन, वही आपका नाम।
पाने गुण गंभीरता, हम नित करें प्रणाम ॥734॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गंभीरशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप धर्म स्तंभ हो, 'धर्मयूप' जिन नाम।
भवजल में वो ना गिरे, जो पूजे तुम नाम ॥735॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मयूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दयायाग' भगवान तुम, दयायज्ञ कर्तार।
दयाभाव हममें जगे, हम आये तुम द्वार ॥736॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयायागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मरूपी रथ की धुरी, 'धर्मनेमी' जिन आप।
धर्मराह सबको दिखा, करते जिन निष्पाप ॥737॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मनेमये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों के स्वामी तुम्हीं, कहें 'मुनीश्वर' इन्द्र।
मुनियों का पालन करो, हे जिनदेव ! मुनीन्द्र ॥738॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मचक्र आयुध' धरें, यथानाम जिनदेव।
पापों से रक्षा करो, हे जिनदेव ! सदैव ॥739॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमें आत्मगुण में सदा, कहलाते तुम 'देव'।
सब सुख देते जगत् को, नाम सिद्ध तुम देव ॥740॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर तुम 'कर्मघ्न' हो, करते कर्म विनाश।
कर्म हमारे नाश हो, कर दो आत्म विकास ॥741॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्मघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धर्मघोषण' विभू, करें धर्म का घोष।
धर्ममार्ग सबको दिखा, हरें कर्म का दोष ॥742॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मघोषणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमोघवाक्' जिनदेव तुम, वचन व्यर्थ नहीं जाय।
मौनसाधना से बनें, सिद्ध आप जिनराय॥743॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमोघवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अमोघाज्ञ' जिनदेव तुम, आज्ञा आप अमोघ।
तुम आज्ञा जो पालते, पाते सुख संयोग॥744॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमोघाज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल से रहित जिनेश तुम, 'निर्मल' संज्ञा धार।
निर्मल कर दो अब हमें, करो नाथ उद्धार॥745॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्मलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अमोघशासन' प्रभु, शासन सफल महान्।
कर्म प्रशासन नाशने, हमने किया विधान॥746॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमोघशासनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'स्वरूप' भगवान हो, अतिशय सुन्दर रूप।
हम ध्यायें उस रूप को, पाने आत्म स्वरूप॥747॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्तम ऐश्वर्य तुम, 'सुभग' आप भगवान।
हम पाने उस पुण्य को, करते सुभग विधान॥748॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुभगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ का त्याग कर, 'त्यागी' तुम कहलाय।
त्याग धर्म पाने विभो, हम तुम शरणाय आय॥749॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्यागिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'समयज्ञ' जिनेश हो, दिया समय का ज्ञान।
जानें हम निज समय को, वरें भेद विज्ञान॥750॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री समयज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समाधान करते सदा, आप 'समाहित'' देव।
समा गये तुम शरण में, भव्य जीव स्वयमेव ॥751॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री समाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख देते सुख से रहे, 'सुस्थित' जिनवर आप।
सच्चा सुख पाने प्रभु, हम करते नित जाप ॥752॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुस्थिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वास्थ्यभाक्' जिन ने किया, जग को स्वास्थ्य प्रदान।
स्वस्थ रहें तुम भक्त नित, इस हित किया विधान ॥753॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वास्थ्यभाजे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्थित आत्म स्वरूप में, 'स्वस्थ' आप जिनदेव।
परभावों से दूर हो, हम ध्यायें जिनदेव ॥754॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वस्थाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप रज से रहित, 'नीरजस्क' भगवान।
रज से रहित करो हमें, हमने किया विधान ॥755॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नीरजस्काय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक उत्सव रहित, आप 'निरुद्धव' नाथ।
पंच महोत्सव हो गये, इस कारण तुम नाथ ॥756॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरुद्धवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मलेप से रहित हो, तुम 'अलेप' परमेश।
कर्म लेप धोने सदा, हम पूजें परमेश ॥757॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अलेपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' आत्मा प्रभो, कर्म कलंक विहीन।
कर्म कलंक विनाश हित, हम तव पद में लीन ॥758॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्कलंकात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग–द्वेष से रहित हो, 'वीतराग' जिनदेव।
राग–द्वेष मेरा हरो, जय–जय–जय जिनदेव॥759॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीतरागाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषयों की इच्छा रहित, आप 'गतस्पृह' नाथ।
जग अभिलाषा मेटने, झुका रहे हम माथ॥760॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गतस्पृहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वश में कर सब इन्द्रियाँ, पाया केवलज्ञान।
'वश्येन्द्रिय' भगवान का, हमने किया विधान॥761॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वश्येन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'विमुक्तात्मा' प्रभो, कर्म जाल से मुक्त।
तुम सम चर्या पालकर, बन जायें हम मुक्त॥762॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विमुक्तात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु प्रतिद्वन्दी नहीं, 'निःसपत्न' जिन आप।
तुम सम छोड़ें शत्रुता, हम होवें निष्पाप॥763॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निःसपत्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व इन्द्रियाँ जीतकर, बनें 'जितेन्द्रिय' देव।
बनने तुम सम हे प्रभो !, तुमको भजें सदैव॥764॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त भाव अत्यंत पा, जिनवर बनें 'प्रशांत'।
तुमको पूजें हम सदा, बनने नाथ प्रशांत॥765॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशान्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतधामर्षि' प्रभो, धर तप तेज अनंत।
तपस्तेज पाने भजें, हम भी जिन भगवंत॥766॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतधामर्षये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल में अति श्रेष्ठतम, 'मंगल' तुम भगवान।
तुम सम मंगल पायें हम, कर मंगल का ध्यान॥767॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मंगलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नष्ट करें मल दोष सब, श्री 'मलहा' भगवान।
हरो हमारे पाप मल, आदिनाथ भगवान॥768॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री मलघ्ने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यसन सभी दुःख से रहित, आप 'अनघ' जिनदेव।
इस कारण हम पूजतें, मेटो व्यसन कुटैव॥769॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनीदृक्' हो प्रभो, तुम सम कोई ना ओर।
तुमसे इस युग में हुई, पुनः धर्म की भोर॥770॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनीदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम उपमा योग्य तुम, 'उपमाभूत' भदंत।
हम पूजें नित आपको, करों दुःखों का अंत॥771॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री उपमाभूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाग्य जगे सब जीव का, तुम दृष्टि से देव।
भाग्य जगाने हम जपें, 'दिष्टि' नाम सदैव॥772॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिष्टये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ तुम्हारे भक्त का, जागे भाग्य सदैव।
इसीलिये हर भक्त जन, कहते तुमको 'दैव'॥773॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दैवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम इन्द्रियगोचर नहीं, नभ गोचर भगवान।
अतः 'अगोचर' आपका, करते भव्य विधान॥774॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अगोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध वर्ण स्पर्श रस, इनसे रहित 'अमूर्त'।
हम पूजें नित आपको, पाने शिवसुख मूर्त ॥775॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमूर्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में तुम सशरीर हो, 'मूर्तिमान' परमेश।
मूर्त्त करें शिव सिद्धियाँ, देते शिव संदेश ॥776॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मूर्तिमते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में अद्वितीय आप हो, 'एक' आपका नाम।
एक आत्म सुख के लिए, हम नित करें प्रणाम ॥777॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री एकस्मै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्गुण बहु जिन आपमें, 'नैक' नियत हो आप।
निस्वार्थी हो भक्त के, हरते सब संताप ॥778॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नैकस्मै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परपदार्थ में रंच भी, आप न हो तल्लीन।
तुम 'नानैकसुतत्वदृक्', करो हमें स्वाधीन ॥779॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री नानैकतत्त्वदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आध्यात्मिक शास्त्रज्ञ तुम, दर्शाते अध्यात्म।
जिनवर तुम 'अध्यात्मगम्य', देते पद परमात्म ॥780॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अध्यात्मगम्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोही मिथ्यात्वी तुम्हें, जान न पाये नाथ।
उन्हें 'अगम्यात्मा' लगे, भव्यों के तुम नाथ ॥781॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अगम्यात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योग कला जग को सिखा, बनें 'योगविद्' आप।
शुद्ध योग पाने भजें, भक्त बनें निष्पाप ॥782॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य 'योगिवन्दित' तुम्हीं, योगि जन से वन्द्य।
योगसिद्धी हित हम भजें, तुमको नाथ त्रिसंध्य॥783॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री योगिवन्दिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विशेष से, 'सर्वत्रग' हो आप।
सर्वत्रग बनता वही, जो करता तुम जाप॥784॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वत्रगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान रहते सदा, 'सदाभावी' जिनदेव।
मन मन्दिर में धर तुम्हें, पूजें भक्त सदैव॥785॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सदाभाविने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'त्रिकालविषयार्थदृक्', देखें अर्थ त्रिकाल।
जो पूजें नित आपको, जाने अर्थ त्रिकाल॥786॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिकालविषयार्थदृशे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके सुखकर्त्ता परम, तुम 'शंकर' भगवान।
पाने सच्चा आत्मसुख, हमने किया विधान॥787॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग को सच्चा सुख बता, पाया 'शंवद' नाम।
शंवद सम गुण लाभ हित, हम नित करें प्रणाम॥788॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंवदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज मन को वश में किया, बनें 'दान्त' तुम नाथ।
मन वश करने की कला, सिखला दो हे नाथ !॥789॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दांताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय मन का दमन कर, 'दमी' बनें जिनदेव।
वह गुण पाने हम भजें, तुमको नाथ सदैव॥790॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री दमिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' आप हो, क्षमावान भगवान।
क्षमाभाव हममें जगे, ऐसा दो सद्ज्ञान ।।791।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षान्तिपरायणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी तुम प्रभो, 'अधिप' कहें सौ इन्द्र।
उनको हम पूजें सदा, जिन्हें भजें गण इन्द्र ।।792।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधिपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आनंद रूप तुम, जिनवर 'परमानन्द'।
तुम सम चर्या जो करें, पायें 'परमानन्द' ।।793।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परमानन्दाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता निज-पर आत्म के, 'परात्मज्ञ' परमेश।
परम ज्ञान पाने भजें, तुमको भक्त हमेश ।।794।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परात्मज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम, प्रगटाते गुण वृन्द।
कहे 'परात्पर' जग तुम्हें, ध्यायें नित मुनिवृन्द ।।795।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री परात्पराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तीनजगद्वल्लभ' तुम्हीं, त्रिभुवन प्रिय भगवान।
त्रिजग विजय का भव्य को, तुम ही देते ज्ञान ।।796।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिजगद्वल्लभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर ! तुम 'अभ्यर्च्य' हो, त्रिभुवन पूज्य विशेष।
जो पूजें नित आपको, वो सुख पाय विशेष ।।797।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभ्यर्च्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगमंगलोदय' तुम्हीं, सबको मंगलकार।
मंगल करते जगत् का, देते सौख्य अपार ।।798।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चरण कमल द्वय आपके, पूजें नित शत इन्द्र।
'त्रिजगपतिपूजांघ्रि' तुम, अतः पूजतें इन्द्र ।।799।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकाग्र में राजते, ज्ञान शिखामणि आप।
तीन लोक तव ज्ञान में, झलके आपोआप ।।800।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

बृहत बृहस्पति आदिक् सौ-सौ, नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बृहद् बृहस्पत्यादि त्रिलोकाग्रशिखामणयेपर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा- अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान।।
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

तुम त्रिकाल दृष्टा भगवंता, 'त्रिकालदर्शी' हो गुणवंता।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें।।801।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिकालदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'लोकेश' लोक के स्वामी, लोकपूज्य जिन अन्तर्यामी।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥802॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'लोकधाता' जगरक्षक, लोकहितैषी जग संरक्षक॥ सहस्र..॥803॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकधात्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दृढ़व्रत' ने दृढ़व्रत को धारा, उससे किया जगत् उद्धारा॥ सहस्र..॥804॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दृढ़व्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब लोकों में श्रेष्ठ तुम्हीं हो, अतः 'सर्वलोकातिग' जिन हो॥ सहस्र..॥805॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वलोकातिगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पूजा के योग्य पूज्य हो, त्रिभुवन वंदित 'जगत्पूज्य' हो॥ सहस्र..॥806॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगत्पूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोक' के एक सारथी, किन्तु जिन तुम नहीं स्वार्थी॥ सहस्र..॥807॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वलोकैकसारथये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'पुराण' प्राचीन जिनेश्वर, संस्कृति रक्षक तुम जगदीश्वर॥ सहस्र..॥808॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुराणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ आत्मगुण तुमने पाये, अतः 'पुरुष' जिन आप कहाये॥ सहस्र..॥809॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे प्रथम नाथ तुम आये, अतः 'पूर्व' जिन आप कहाये॥ सहस्र..॥810॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतपूरब' का कर विस्तारा, पाया नाम वही मनहारा॥ सहस्र..॥811॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृत पूर्वांगविस्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब देवों में मुख्य तुम्हीं हो, 'आदिदेव' जिनदेव तुम्हीं हो॥ सहस्र..॥812॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पुराण में प्रथम पूज्य हो, 'पुराणाद्य' जिन जगत्पूज्य हो।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥813॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुराणाद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम महान् पहले तीर्थंकर, 'पुरुदेव' को भजें पुरन्दर॥ सहस्र..॥814॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुरुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम देवों के देव जिनेश्वर, 'अधिदेवता' तुम परमेश्वर॥ सहस्र..॥815॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधिदेवतायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस युग के तुम मुख्य पुरुष हो, तुम 'युगमुख्य' विशेष पुरुष हो॥ सहस्र..॥816॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगमुख्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'युगज्येष्ठ' बड़े इस युग के, युग निर्माता हो इस युग के॥ सहस्र..॥817॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादिस्थितिदेशक' तुम दादा, तुमने दी है युग मर्यादा॥ सहस्र..॥818॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री युगादिस्थितिदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'कल्याणवर्ण' जिनदेवा, तन सुवर्ण सम भजते देवा॥ सहस्र..॥819॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्याणवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम आप 'कल्याण' जिनेश्वर, करते जग कल्याण जिनेश्वर॥ सहस्र..॥820॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्याणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप निरामय 'कल्य' जिनेश्वर, मोक्षमार्ग में सज्ज मुनीश्वर॥ सहस्र..॥821॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग 'कल्याणक' लक्षणधारी, तुम कल्याण सुलक्षण धारी॥ सहस्र..॥822॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्याणलक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'कल्याणप्रकृति' भगवंता, जग कल्याणमयी भगवंता॥ सहस्र..॥823॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्याणप्रकृतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'दीप्तकल्याणात्मा' हो, भवि कल्याणमयी आत्मा हो।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥824॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दीप्तकल्याणात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म कालिमा रहित जिनेशा, आप 'विकल्मष' हो परमेशा॥ सहस्र..॥825॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विकल्मषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मकलंक रहित तुम स्वामी, श्री 'विकलंक' आप शिवगामी॥ सहस्र..॥826॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विकलंकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह रहित तुम 'कलातीत' हो, लेकिन ना जग से अतीत हो॥ सहस्र..॥827॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलातीताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम पापों को नशने वाले, 'कलिलघ्न' मन बसने वाले॥ सहस्र..॥828॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलिलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वकला के तुम हो ज्ञाता, नाम 'कलाधर' कला प्रदाता॥ सहस्र..॥829॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलाधराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवदेव' देवों के देवा, निशदिन देव करें तुम सेवा॥ सहस्र..॥830॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री देवदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगन्नाथ' तुम जग के स्वामी, जग पालक हो सब जग स्वामी॥ सहस्र..॥831॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगन्नाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगत्बंधु' जिनराजा, तुम्हें चढ़ायें हम नित खाजा॥ सहस्र..॥832॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगत्बंधवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्विभु' जगवैभव दाता, तुम स्वामी उत्तम सुखदाता॥ सहस्र..॥833॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगद्विभवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्हितैषी' जगहितकर्त्ता, तुम जग के सच्चे हितकर्त्ता॥ सहस्र..॥834॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगद्धितैषिणे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'लोकज्ञ' लोक के ज्ञाता, दिव्य अलौकिक सिद्धि प्रदाता।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें।।835।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सर्वग' सर्वत्र व्याप्त हो, वीतराग सर्वज्ञ आप्त हो।। सहस्र..।।836।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सर्वगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदग्रज' तुम बड़े जगत् में, हमें बसाओ सिद्ध जगत में।। सहस्र..।।837।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगदग्रजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने ज्ञान ध्यान सिखलाया, नाम 'चराचरगुरु' कहलाया।। सहस्र..।।838।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री चराचरगुरुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मंदिर में वास तुम्हारा, 'गोप्य' नाम रक्षक दु:खहारा।। सहस्र..।।839।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गोप्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गूढ़ स्वरूपी तुम 'गूढ़ात्मा', गूढ़ ज्ञान दे दो परमात्मा।। सहस्र..।।840।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गूढ़ात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप गूढ़ विद्या के दाता, नाम 'गूढ़गोचर' सुखदाता।। सहस्र..।।841।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री गूढ़गोचराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्विकार मुद्रा के धारी, 'सद्योजात' नाम गुणधारी।। सहस्र..।।842।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सद्योजाताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रकाशात्मा' परमेष्ठी, पूजें चक्री सुर नर श्रेष्ठी।। सहस्र..।।843।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रकाशात्मने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलती अग्नि सम तुम काया, वैसा ही तुम नाम कहाया।। सहस्र..।।844।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'आदित्यवर्ण' जिनदेवा, रवि सम तेजस्वी तुम देवा।। सहस्र..।।845।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदित्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'भर्माभ' जगत भ्रमहारी, तन सुवर्ण सम कान्तिधारी।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥846॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भर्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम प्रभा धरें 'सुप्रभ' जिन, धर्मप्रभा फैलाते श्री जिन॥ सहस्र..॥847॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम सुवर्ण सम आभाधारी, नाम 'कनकप्रभ' है मनहारी॥ सहस्र..॥848॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कनकप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सुवर्णवर्ण' सुखकारी, तन सुवर्ण सम सुख दातारी॥ सहस्र..॥849॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुवर्णवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'रुक्माभ' रुक्म सम आभा, कंचन वर्ण देह की आभा॥ सहस्र..॥850॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री रुक्माभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यकोटिसमप्रभ' तुम देवा, कोटि सूर्य करते तुम सेवा॥ सहस्र..॥851॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपे स्वर्ण सम भास्वर हो तुम, निभ 'तपनीय' नाम जिनवर तुम॥ सहस्र..॥852॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तपनीयनिभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे ऊँचा तन प्रभु पाया, नाम 'तुंग' आगम ने गाया॥ सहस्र..॥853॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तुंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बालार्काभ' नाम के धारी, बालसूर्यसम प्रभा तुम्हारी॥ सहस्र..॥854॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बालार्काभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि समान कांति के धारी, नाम 'अनलप्रभ' अति सुखकारी॥ सहस्र..॥855॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनलप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'संध्याभ्रबभ्रु' जिनदेवा, हम करते तुम पद की सेवा॥ सहस्र..॥856॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संध्याभ्रबभ्रवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णमयी आभा के धारी, श्री 'हेमाभ' हेम से भारी।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥857॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हेमाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तचामीकरप्रभ' तुम स्वामी, हम तप कर तुम सम हो स्वामी॥ सहस्र..॥858॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तप्तचामीकरच्छवये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'निष्टप्तकनकच्छाया' हो, तुम स्वर्णिम् तन की छाया हो॥ सहस्र..॥859॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्टप्तकनकच्छायाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'कनत्कांचनसन्निभ' हो, दीप्त स्वर्ण सम उज्ज्वल तुम हो॥ सहस्र..॥860॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कनत्कांचनसन्निभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सुवर्णमय है तुम ईशा, श्री 'हिरण्यवर्णाय' जिनेशा॥ सहस्र..॥861॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हिरण्यवर्णाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'स्वर्णाभ' स्वर्ण आभा हो, केवलज्ञान सूर्य आभा हो॥ सहस्र..॥862॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वर्णाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शान्तकुम्भनिभप्रभ' तुम देवा, स्वर्णिम देह तुम्हारी देवा॥ सहस्र..॥863॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतकुंभनिभप्रभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री 'द्युम्नाभ' धर्म द्युतिधारी, शरण सदा हम रहें तुम्हारी॥ सहस्र..॥864॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री द्युम्नाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णमयी तुम देह जिनेश्वर, आप 'जातरूपाभ' जिनेश्वर॥ सहस्र..॥865॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जातरूपाभाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तजाम्बूनदद्युति' आप हो, स्वर्णमयी द्युतिवान आप हो॥ सहस्र..॥866॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तप्तजाम्बूनदद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन 'सुधौतकलधौतश्री' हो, स्वर्णिम देह भावधर श्री हो॥ सहस्र..॥867॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुधौतकलधौतश्रियै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'प्रदीप्त' दैदीप्यमान हो, रत्नत्रय से दीप्तमान हो ॥ सहस्र..॥868॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रदीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'हाटकद्युति' हो भगवंता, स्वर्णतेज बल वीर्य अनंता।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें।।869।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हाटकद्युतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्ट जनों के ईष्ट आप हो, अतः नाथ 'शिष्टेष्ट' आप हो।। सहस्र..।।870।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिष्टेष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुष्टि पुष्टि के तुम हो दाता, 'पुष्टिद' नाम परम सुखदाता।। सहस्र..।।871।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्टिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्ट' परम औदारिक देही, बल अनंत सुख वीर्य विदेही।। सहस्र..।।872।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप 'स्पष्ट' प्रकट हो, भव्य जनों के बहुत निकट हो।। सहस्र..।।873।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्पष्टाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्पष्टाक्षर' नाम तुम्हारा, उच्चारण स्पष्ट तुम्हारा।। सहस्र..।।874।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्पष्टाक्षराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण समर्थ आप 'क्षमदेवा' सक्षम हो हम कर तुम सेवा।। सहस्र..।।875।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री क्षमाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु के तुम हो हन्ता, नाम आप 'शत्रुघ्न' महंता।। सहस्र..।।876।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत्रु रहित 'अप्रतिघ' आप हो, सर्व विजय हित जपें आपको।। सहस्र..।।877।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्रतिघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अमोघ' जिन ! सफल सिद्ध हो, त्रिभुवन में तुम ही प्रसिद्ध हो।। सहस्र..।।878।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमोघाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपदेशक जिन आप 'प्रशास्ता', त्रिभुवन के हो अग्रिम शास्ता।। सहस्र..।।879।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशास्ते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'शासिता' सबके रक्षक, भव्यों के तुम ही संरक्षक।। सहस्र..।।880।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शासित्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'स्वयंभू' स्वयं हुए हो, स्वयं आप भगवान हुए हो।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें॥881॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्वयंभुवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शान्तिनिष्ठ' अत्यंत शांत हो, तुम्हें देख सब भव्य शांत हो॥ सहस्र..882॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतिनिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम मुनि 'मुनिज्येष्ठ' मुनीशा, मुनियों के तुम ही हो ईशा॥ सहस्र..॥883॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुनिज्येष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवताति' शिवसुख के दाता, आप परम कल्याण प्रदाता॥ सहस्र..॥884॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवतातये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवप्रद' जिन शिवमार्ग प्रदाता, मोक्ष परम कल्याण प्रदाता॥ सहस्र..885॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शिवप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शान्तिद' जिन शिवशांति प्रदाता, परम श्रेष्ठ सुख-शांति प्रदाता॥ सहस्र..॥886॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतिदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत् सुख-शांति कर्त्ता, नाम 'शान्तिकृत' सब दुःखहर्त्ता॥ सहस्र..॥887॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तिकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतस्वरूप' शांति के दाता, नाम 'शांति चित् शांति प्रदाता॥ सहस्र..॥888॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कांतियुक्त तुम 'कांतिमान' हो, धर्मक्रांति कर्ता महान् हो॥ सहस्र..॥889॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कांतिमतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप कामनापूर्ण कराते, 'कामितप्रद' जिनदेव कहाते॥ सहस्र..॥890॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कामितप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रेयोनिधि' तुम श्रेय प्रदाता, तुम कल्याण कोष सुख दाता॥ सहस्र..॥891॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयोनिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आधार धर्म के स्वामी, 'अधिष्ठान' हो अन्तर्यामी॥ सहस्र..॥892॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अधिष्ठानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतिष्ठ' तुम स्व–प्रतिष्ठ हो, नहीं किसी से पर प्रतिष्ठ हो।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, उनको मंगल अर्घ चढ़ायें।।893।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अप्रतिष्ठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रतिष्ठा त्रिभुवन व्यापी, नाम 'प्रतिष्ठित' जन–मन व्यापी।। सहस्र..।।894।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रतिष्ठिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय स्थिर मोक्ष धाम में, 'सुस्थिर' स्वामी आप नाम है।। सहस्र..।।895।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुस्थिराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमनरहित 'स्थावर' तुम स्वामी, आत्मभुवन में सुस्थिर स्वामी।। सहस्र..।।896।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थावराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल रहे 'स्थाणू' तुम स्वामी, आत्मतीर्थ में निश्चल स्वामी।। सहस्र..।।897।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थाणवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग विस्तृत तुम 'पृथीयान्' हो, भव उद्धारक मोक्षयान हो।। सहस्र..।।898।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पृथीयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रथित' जग में प्रसिद्ध हो, सिद्धिप्रदाता आप सिद्ध हो।। सहस्र..।।899।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रथिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादिक गुण से महान् हो, पृथु आप पुरुषार्थवान हो।। सहस्र..।।900।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पृथवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

त्रिकालदर्शी से पृथु जिन तक, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिकालदर्शीतादि पृथु पर्यन्त शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

दोहा- अंतरंग बहिरंग द्वय लक्ष्मी युत श्रीमान।
आत्म सिद्धी हित हम करें, सहस्रनाम विधान॥
नमन स्वयंभू आपको, स्वयं बनें भगवान।
श्रेष्ठ धर्म से शोभते, आदिनाथ भगवान।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

दिशा रूप वस्त्रों के धारी, 'दिग्वासा' दिग्भ्रम परिहारी।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥901॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिग्वाससे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुरूप करधनी धरे हैं, 'वातरशन' गुरुदेव बनें हैं॥ सहस्र..॥902॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वातरशनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्ग्रंथों के तुम हो स्वामी, 'निर्ग्रंथेश' जगत में नामी॥ सहस्र..॥903॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्ग्रंथेशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्ररहित जिन आप 'निरम्बर', छोड़ा वस्त्रों का आडम्बर॥ सहस्र..॥904॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरम्बराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिग्रह रहित आप 'निष्किंचन', बतलाया जिनधर्म अकिंचन॥ सहस्र..॥905॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निष्किंचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निराशंस' इच्छा बिन तुम हो, जग प्रशंस हित कर्त्ता तुम हो॥ सहस्र..॥906॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निराशंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञानचक्षु' के चक्षु निराले, ज्ञानामृत बरसाने वाले॥ सहस्र..॥907॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अमोमुह' मोहरहित हो, राग-द्वेष परभाव रहित हो॥ सहस्र..॥908॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमोमुहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजपुंज तुम 'तेजोराशी', मिथ्या मोह तिमिर के नाशी॥ सहस्र..॥909॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तेजोराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतौज' में तेज अनंता, पार तिमिर के तुम हो हंता।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें।।910।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतौजसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान समुद्र आप 'ज्ञानाब्धि', पायी तुमने प्रज्ञालब्धी।। सहस्र..।।911।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्ञानाब्धये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'शीलसागर' जिनदेवा, शील समुद्र शील के देवा।। सहस्र..।।912।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शीलसागराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेज स्वरूप आप 'तेजोमय', आत्म तेजधारी तेजोमय।। सहस्र..।।913।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तेजोमयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति अपरिमित के तुम धारी, 'अमितज्योति' तुम गुण भंडारी।। सहस्र..।।914।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अमितज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्योतिर्मूर्ति' की आभा न्यारी, दिव्य आत्मबल के तुम धारी।। सहस्र..।।915।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री ज्योतिर्मूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम अज्ञान तिमिर विनशाते, नाम 'तमोपह' सुरगण गाते।। सहस्र..।।916।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तमोपहाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगच्चूड़ामणि' स्वामी, जग सिर मोर पूज्य जगनामी।। सहस्र..।।917।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगच्चूड़ामणये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'दीप्त' आप दैदीप्यमान हो, ज्ञानसूर्य जग भासमान हो।। सहस्र..।।918।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दीप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखी शांत 'शंवान्' आप हो, सुखदाता भगवान आप हो।। सहस्र..।।919।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शंवते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विघ्न विनायक' विघ्न विनाशी, विघ्न हरो विघ्नों के नाशी।। सहस्र..।।920।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विघ्न विनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हे कलिघ्न !' अतिशय दिखलाओ, मेरे कलह पाप विनशाओ।। सहस्र..।।921।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कलिघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'कर्मशत्रुघ्न' जिनेश्वर, कर्मशत्रु घातक परमेश्वर।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥922॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्मशत्रुघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकालोकप्रकाशक' स्वामी, सर्वज्ञेय ज्ञाता जगनामी॥ सहस्र..॥923॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकालोकप्रकाशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा को प्रभु तुमने जीता, बनें 'अनिद्रालु' जग नेता॥ सहस्र..॥924॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनिद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आलस्य रहित भगवंता, नाम 'अतंद्रालु' जयवंता॥ सहस्र..॥925॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अंतद्रालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जागरुक' जिन जागृत रहते, जग को जागृत करते रहते॥ सहस्र..॥926॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जागरुकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रमामय' ज्ञानमयी हो, दिव्य अतीन्द्रिय ज्ञानमयी हो॥ सहस्र..॥927॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रमामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लक्ष्मीपति' लक्ष्मी के स्वामी, चऊ अनंत गुण दो जगनामी॥ सहस्र..॥928॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लक्ष्मीपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' तुम जग उजियाले, जगत् प्रकाशित करने वाले॥ सहस्र..॥929॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगज्ज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मराज' भव्यों के राजा, पार उतारों धर्म जिहाजा॥ सहस्र..॥930॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मराजाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रजाहित' प्रजाहितैषी, सत्य शान्ति समभाव गवेषी॥ सहस्र..॥931॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रजाहिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मुमुक्षु' मोक्ष प्रदाता, मोक्ष प्रदर्शक मोह विधाता॥ सहस्र..॥932॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मुमुक्षवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'बंधमोक्षज्ञ' जिनेशा, बंध मोक्ष ज्ञायक परमेशा॥ सहस्र..॥933॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बंधमोक्षज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'जिताक्ष' इन्द्रिय के जेता, इन्द्रिय विषय कषाय विजेता।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें।।934।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जिताक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जित मन्मथ' तुम काम विजेता, मोक्षमार्ग के सच्चे नेता।। सहस्र.. ।।935।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितमन्मथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप शांत रस सदा पिलाते, 'प्रशांतरसशैलूष' कहाते।। सहस्र.. ।।936।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रशांत रस शैलुषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'भव्यपैटकनायक' हो, भव्यों को शिवसुख दायक हो।। सहस्र.. ।।937।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री भव्यपैटकनायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म 'मूलकर्त्ता' तुम स्वामी, आद्य प्रवर्तक तुम जगनामी।। सहस्र.. ।।938।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मूलकर्त्रै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अखिलज्योति' तुम अन्तर्यामी, जगत् प्रकाशक तुम जगनामी।। सहस्र.. ।।939।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अखिलज्योतिषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'मलघ्न' मल विघ्न नशाते, सर्व पाप मल को विनशाते।। सहस्र.. ।।940।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मलघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'मूलकारण' शिवपथ के, भवदधि तारण तुम भव जग के।। सहस्र.. ।।941।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मूलकारणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम यथार्थ वक्ता जिनेश हो, 'आप्त' आप त्रिभुवन जिनेश हो।। सहस्र.. ।।942।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री आप्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनों के स्वामी 'वागीश्वर', वचनसिद्धी देते परमेश्वर।। सहस्र.. ।।943।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वागीश्वराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कल्याण स्वरूपी स्वामी, श्री 'श्रेयान्' आप जगनामी।। सहस्र.. ।।944।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रेयसे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग कल्याण रूप तुम वाणी, 'श्रायसोक्ति' वाणी कल्याणी।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥945॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रायसोक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सार्थक वचन तुम्हारे देवा, 'निरुक्तवाक्' तुम हो जिनदेवा॥ सहस्र..॥946॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निरुक्तवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम वक्ता आप 'प्रवक्ता', भक्त तुम्हारे बनें प्रवक्ता॥ सहस्र..॥947॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रवक्त्रे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वचसामीश' वचन के स्वामी, वचन सिद्धी देते तुम स्वामी॥ सहस्र..॥948॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वचसामीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव को तुमने जीता, बनें 'मार्जित्' काम विजेता॥ सहस्र..॥949॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मार्जिते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल विश्व के तुम हो ज्ञाता, 'विश्वभाववित' तुम जगत्राता॥ सहस्र..॥950॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री विश्व भावविदे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तन के हो तुम धारी, नाम 'सुतनु' जग मंगलकारी॥ सहस्र..॥951॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुतनवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन बंधन से रहित जिनेश्वर, 'तनुनिर्मुक्त' आप परमेश्वर॥ सहस्र..॥952॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री तनुनिर्मुक्ताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मलीन उत्तम ज्ञानी हो, 'सुगत' आप ! प्रज्ञादानी हो॥ सहस्र..॥953॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुगताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हतदुर्नय' मिथ्यानय हंता, मोह तिमिर नाशक भगवंता॥ सहस्र..॥954॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हतदुर्नयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'श्रीश' श्री के ईश्वर हो, लक्ष्मी सुखदाता ईश्वर हो॥ सहस्र..॥955॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीशाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी सेवा करें तुम्हारी, तुम 'श्रीश्रितपादाब्ज' बिहारी।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥956॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीश्रितपादाब्जाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम भय रहित 'वीतभी' स्वामी, हमें वीतभय कर दो स्वामी॥ सहस्र..॥957॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वीतभियै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'अभयंकर' जग भय हर्त्ता, नष्ट करें सब भय भगवंता॥ सहस्र..॥958॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभयंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'उत्सन्नदोष' जिनदेवा, नष्ट करें सब दोष सदैवा॥ सहस्र..॥959॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री उत्सन्नदोषाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न रहित 'निर्विघ्न' तुम्हीं हो, विघ्न विनाशक नाथ तुम्हीं हो॥ सहस्र..॥960॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्विघ्नाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ आप निज गुण में स्थिर हो, इससे तुम 'निश्चल' जिनवर हो॥ सहस्र..॥961॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निश्चलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'लोकवत्सल' हो स्वामी, स्नेहपात्र जन-जन के स्वामी॥ सहस्र..॥962॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकवत्सलाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकोत्तर' उत्कृष्ट लोक में, आप श्रेष्ठ हो सर्वलोक में॥ सहस्र..॥963॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकोत्तराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के तुम हो स्वामी, नाम 'लोकपति' सब जगनामी॥ सहस्र..॥964॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकपतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वलोक के नैन सितारे, 'लोकचक्षु' जग पालनहारे॥ सहस्र..॥965॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री लोकचक्षुषे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप अपरिमित धी के धारी, श्री 'अपारधी' धी दातारी॥ सहस्र..॥966॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपारधिये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धीरधी' हो भगवंता, तुममें शाश्वत ज्ञान अनंता।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥967॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री धीरधियै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'बुद्धसन्मार्ग' प्रदाता, समीचीन पथ के तुम ज्ञाता॥ सहस्र..॥968॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री बुद्धसन्मार्गाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप कर्ममल रहित जिनेश्वर, 'शुद्ध' सिद्ध हो हे परमेश्वर!॥ सहस्र..॥969॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुद्धाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूनृतपूतवाक्' तुम ज्ञानी, सत्य पवित्र श्रेष्ठ तुम वाणी॥ सहस्र..॥970॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूनृतपूतवाचे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान पराकाष्ठा को पाये, 'प्रज्ञापारमिता' कहलाये॥ सहस्र..॥971॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रज्ञापारमिताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्राज्ञ' हो हे परमेशा !, अतिशय बुद्धिमान जिनेशा॥ सहस्र..॥972॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्राज्ञाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विषय कषाय विरत तुम देवा, 'यति' कहलाते हो जिनदेवा॥ सहस्र..॥973॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री यतये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नियमितेन्द्रिय' तुम हो स्वामी, इन्द्रिय को वश करते स्वामी॥ सहस्र..॥974॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री नियमितेन्द्रियाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत्पूज्य जिन तुम 'भदंत' हो, तुम भक्ति से कर्म अंत हो॥ सहस्र..॥975॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भदंताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों का भला किया है, नाम 'भद्रकृत' सिद्ध किया है॥ सहस्र..॥976॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भद्रकृते नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कल्याणरूप हो देवा, 'भद्र' आप देते शिव मेवा॥ सहस्र..॥977॥
ॐ ह्रीं अर्हं श्री भद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित वस्तु के दाता, 'कल्पवृक्ष' हो जग सुखदाता।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें।।978।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कल्पवृक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'वरप्रद' इच्छित वरदानी, शरणागत को सब सुखदानी।। सहस्र..।।979।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वरप्रदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'समुन्मूलितकर्मारि' तुम हो, कर्मशत्रु परिहारी तुम हो।। सहस्र..।।980।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री समुन्मूलितकर्मारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि' हो, कर्मेंधन दाहक अग्नि हो।। सहस्र..।।981।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्मकाष्ठाशुशुक्षण्यै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कार्य में निपुण जिनेश्वर, तुम 'कर्मण्य' सिद्ध परमेश्वर।। सहस्र..।।982।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्मण्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ समर्थ आप 'कर्मठ' हो, जीते आप कर्म कर्मठ को।। सहस्र..।।983।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कर्मठाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का 'प्रांशु' नाम कहाया, प्रभु ने उन्नत भाग्य जगाया।। सहस्र..।।984।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री प्रांशवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहण त्याग के ज्ञाता तुम हो, 'हेयादेयविचक्षण' तुम हो।। सहस्र..।।985।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री हेयादेयविचक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्ति अनंतों के तुम धारी, 'शक्तिअनंत' नाम सुखकारी।। सहस्र..।।986।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनंतशक्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छिन्न-भिन्न के योग्य नहीं हो, हे जिनवर 'अच्छेद्य' तुम्हीं हो।। सहस्र..।।987।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अच्छेद्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म-जरा-मृत रोग निवारि, सबके नाशक तुम 'त्रिपुरारि'।। सहस्र..।।988।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिपुरारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैकालिक द्रव्यों के ज्ञाता, नाम 'त्रिलोचन' लोचन दाता।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥989॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिलोचनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम त्रिकाल तत्त्वों के ज्ञानी, नाम 'त्रिनेत्र' नेत्र सुखदानी॥ सहस्र..॥990॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिनेत्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्र्यम्बक' त्रैकालिक जग ज्ञाता, जग को प्रज्ञा नेत्र प्रदाता॥ सहस्र..॥991॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्र्यम्बकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्र्यक्ष' प्रत्यक्ष जगत् के ज्ञानी, सबको अक्षय ज्ञान प्रदानी॥ सहस्र..॥992॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्र्यक्षाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान नेत्र के धारी, 'केवलज्ञानवीक्ष्य' सुखकारी॥ सहस्र..॥993॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री केवलज्ञानवीक्षणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'समन्तभद्र' परमेश्वर, सबको मंगलरूप जिनेश्वर॥ सहस्र..॥994॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री समन्तभद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्त किये तुमने कर्मारि, आप नाम सार्थक 'शान्तारि'॥ सहस्र..॥995॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शान्तारये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माचार्य' आप धर्मेश्वर, धर्म प्रबंधक धर्म धुरन्धर॥ सहस्र..॥996॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्माचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयाकोष तुम 'दयानिधि' हो, देते सबको दया विधि हो॥ सहस्र..॥997॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दयानिधये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म पदार्थों को प्रभु जानें, 'सूक्ष्मदर्शी' जग उनको माने॥ सहस्र..॥998॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सूक्ष्मदर्शिने नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमने कामदेव को जीता, 'जितानंग' सत्पथ अभिनेता॥ सहस्र..॥999॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जितानंगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'कृपालु' कृपा युक्त हो, सब कर्मों से आप मुक्त हो।
सहस्रनाम को हम सब ध्यायें, श्रीफल ध्वज संग अर्घ चढ़ायें॥1000॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री कृपालवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धर्मदेशक' हो स्वामी, धर्मदेशना देते स्वामी॥ सहस्र..॥1001॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मदेशकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'शुभंयु' शुभ परिणामी, शुभ परिणाम जनक जगनामी॥ सहस्र..॥1002॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शुभंयवे नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुखसाद्भूत' सुखदाता, सुखाधीन देते सुखसाता॥ सहस्र..॥1003॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री सुखसाद्भूताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुण्यराशि' भगवंता, पुण्यकला सिखलाय अनंता॥ सहस्र..॥1004॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पुण्यराशये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अनामय' रोग रहित हो, हम भक्ति से रोग रहित हो॥ सहस्र..॥1005॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनामयाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसुरक्षक 'धर्मपाल' हो, तुम पद में हम नम्र भाल हो॥ सहस्र..॥1006॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मपालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्पाल' तुम जग के रक्षक, हम भक्तों के तुम संरक्षक॥ सहस्र..॥1007॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जगत्पालाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धर्मसाम्राज्यनायका', भक्तों को जिनधर्म दायका॥ सहस्र..॥1008॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री धर्मसाम्राज्य नायकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

दिग्वासा से धर्मचक्री तक, अष्टोत्तर शत नाम जपें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिग्वासा आदि धर्म साम्राज्य नायक पर्यंत अष्टोत्तर शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कुंभ आठ इक सहस ले, प्रभु पर कर जलधार।
पायें हम जिन शरण में, परम शांति उद्धार॥

शांतये शांतिधारा।

दोहा- सब ऋतुओं के पुष्प ले, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।
स्वपर विश्व कल्याण हित, हम जिन भक्ति रचाय॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा- आदिनाथ भगवान के, इक हजार वसु नाम।
उनकी जयमाला पढ़ें, कर विधान अभिराम॥

(चौपाई)

जय-जय आदिनाथ तीर्थंकर, इस युग के पहले तीर्थंकर।
मरुदेवी माँ के सुत प्यारे, नाभि पिता के राजदुलारे॥1॥
इक्ष्वाकु कुल धन्य किया था, नगर अयोध्या जन्म लिया था।
सुरपति जन्म कल्याण मनायें, मेरुगिरि अभिषेक रचायें॥2॥
जिनकी वसु योजन गहराई, अन्दर चउ योजन चौड़ाई।
सुन्दर मुख इक योजन वाले, एक हजार आठ कलशा ले॥3॥
क्षीरोदधि से सुर-भर लायें, इन्द्र युगल सुर कलश ढुरायें।
शक्र सहित शचि धारा करती, जिनशिशु को शृंगारित करती॥4॥
प्रभु का नाम रखे सुरपति जब, कोटि असंख्यों वाद्य बजें तब।
फिर आनंद नाटक करता है, सहस्र नाम संस्तव करता है॥5॥

जब प्रभु के कल्याणक आयें, सहस्र नाम संस्तव सुर गायें।
उससे भारी पुण्य कमायें, अंतराय अपना विनशायें।।6।।
श्री जिनसहस्रनाम सुखकारी, महास्तोत्र मंगल दुःखहारी।
इसका महाविधान मनोहर, सर्वसिद्धी दाता मंगलकर।।7।।
इसका पाठ मात्र भी पावन, ध्यान जाप मंगल मनभावन।
हम श्रद्धा से पाठ करेंगे, सब दुःख संकट नाथ हरेंगे।।8।।
तिमिर भगे ज्यों रवि के आगे, नाम मंत्र से अघतम भागे।
गज सिंह सर्प शांत हो जाये, महायुद्ध जीते जय पाये।।9।।
मिटे प्राण घातक बीमारी, ईति भीति दुर्घटना भारी।
नाम जाप से जग प्रसिद्ध हो, सब विद्यायें सुगम सिद्ध हों।।10।।
घर परिवार बसे सुखकारी, बने सफल शासक व्यापारी।
सफल होय वैराग्य साधना, मिटे जीव की मोह वासना।।11।।
यही महामृत्युञ्जय दाता, अपमृत्यु पर विजय दिलाता।
मृत्यु महोत्सव का यह साधन, सफल करे चउविध आराधन।।12।।
इसका विधिवत व्रत धारे जो, लघुतम दस उपवास करें जो।
या पूरे उपवास करे जो, आगे अर्हत् सिद्ध बने वो।।13।।
सहस्रनाम को हम नित ध्यायें, ध्वजा अर्घ जयमाल चढ़ायें।
'गुप्तिनंदी' नामों को ध्याये, शाश्वत जिनगुण सम्पत् पाये।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व रोग–शोक–दुःख–संकट–कोरोना महामारी–अपमृत्यु–अंतराय विनाशक धन–धान्य–ऋद्धि–सिद्धि, सद्बुद्धि, ऐश्वर्य–सौभाग्य प्रदायक, महामृत्युंजय कारक, पंच पापहारक, पंच परम पद दायक सहस्रनाम विभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सहस्रनाम वृषभेश के, मंगल अतिशयवान।
पढ़े सुने जो रात दिन, वो बनता भगवान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री जिनसहस्रनाम मंत्र

1008 पुष्प आदि चढ़ाकर भगवान का मंत्र जाप करें।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

1. ॐ ह्रीं श्रीमते नमः।
2. ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः।
3. ॐ ह्रीं वृषभाय नमः।
4. ॐ ह्रीं संभवाय नमः।
5. ॐ ह्रीं शंभवे नमः।
6. ॐ ह्रीं आत्मभुवे नमः।
7. ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः।
8. ॐ ह्रीं प्रभवे नमः।
9. ॐ ह्रीं भोक्त्रे नमः।
10. ॐ ह्रीं विश्वभुवे नमः।
11. ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय नमः।
12. ॐ ह्रीं विश्वात्मने नमः।
13. ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय नमः।
14. ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे नमः।
15. ॐ ह्रीं अक्षराय नमः।
16. ॐ ह्रीं विश्वविदे नमः।
17. ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय नमः।
18. ॐ ह्रीं विश्वयोनये नमः।
19. ॐ ह्रीं अनश्वराय नमः।
20. ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने नमः।
21. ॐ ह्रीं विभवे नमः।
22. ॐ ह्रीं धात्रे नमः।
23. ॐ ह्रीं विश्वेशाय नमः।
24. ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय नमः।
25. ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने नमः।
26. ॐ ह्रीं विधये नमः।
27. ॐ ह्रीं वैधसे नमः।
28. ॐ ह्रीं शाश्वताय नमः।
29. ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय नमः।
30. ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे नमः।
31. ॐ ह्रीं जगज्ज्येष्ठाय नमः।
32. ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये नमः।
33. ॐ ह्रीं जिनेश्वराय नमः।
34. ॐ ह्रीं विश्वदृशे नमः।
35. ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय नमः।
36. ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे नमः।
37. ॐ ह्रीं अनीश्वराय नमः।
38. ॐ ह्रीं जिनाय नमः।
39. ॐ ह्रीं जिष्णवे नमः।
40. ॐ ह्रीं अमेयात्मने नमः।
41. ॐ ह्रीं विश्वरीशाय नमः।
42. ॐ ह्रीं जगत्पतये नमः।
43. ॐ ह्रीं अनंतजिते नमः।
44. ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने नमः।
45. ॐ ह्रीं भव्यबांधवे नमः।
46. ॐ ह्रीं अबंधनाय नमः।
47. ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय नमः।
48. ॐ ह्रीं ब्रह्मणे नमः।
49. ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय नमः।
50. ॐ ह्रीं शिवाय नमः।
51. ॐ ह्रीं पराय नमः।
52. ॐ ह्रीं परतराय नमः।
53. ॐ ह्रीं सूक्ष्माय नमः।
54. ॐ ह्रीं परमेष्ठिने नमः।

55. ॐ ह्रीं सनातनाय नमः।
56. ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे नमः।
57. ॐ ह्रीं अजाय नमः।
58. ॐ ह्रीं अजन्मने नमः।
59. ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये नमः॥
60. ॐ ह्रीं अयोनिजाय नमः।
61. ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने नमः।
62. ॐ ह्रीं जेत्रे नमः॥
63. ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे नमः॥
64. ॐ ह्रीं दयाध्वजाय नमः।
65. ॐ ह्रीं प्रशान्तारये नमः।
66. ॐ ह्रीं अनंतात्मने नमः।
67. ॐ ह्रीं योगिने नमः।
68. ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय नमः।
69. ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे नमः।
70. ॐ ह्रीं ब्रह्म तत्त्वज्ञाय नमः।
71. ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे नमः।
72. ॐ ह्रीं यतीश्वराय नमः।
73. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः।
74. ॐ ह्रीं बुद्धाय नमः।
75. ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने नमः।
76. ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय नमः।
77. ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय नमः।
78. ॐ ह्रीं सिद्धाय नमः।
79. ॐ ह्रीं सिद्धांतविदे नमः।
80. ॐ ह्रीं ध्येयाय नमः।
81. ॐ ह्रीं सिद्ध साध्याय नमः।
82. ॐ ह्रीं जगद्धिताय नमः।
83. ॐ ह्रीं 'सहिष्णवे' नमः।
84. ॐ ह्रीं अच्युताय नमः।
85. ॐ ह्रीं अनंताय नमः।
86. ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे नमः।
87. ॐ ह्रीं भवोद्भवाय नमः।
88. ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे नमः।
89. ॐ ह्रीं अजराय नमः।
90. ॐ ह्रीं अजर्याय नमः।
91. ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे नमः।
92. ॐ ह्रीं धीश्वराय नमः।
93. ॐ ह्रीं अव्ययाय नमः।
94. ॐ ह्रीं विभावसे नमः।
95. ॐ ह्रीं असम्भूष्णवे नमः।
96. ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे नमः।
97. ॐ ह्रीं पुरातनाय नमः।
98. ॐ ह्रीं परमात्मने नमः।
99. ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः।
100. ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

श्रीमत् आदिक शत नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुखकर, उनका महाविधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्री मदादिक त्रिजग परमेश्वर पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

101. ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये नमः।
102. ॐ ह्रीं दिव्याय नमः।
103. ॐ ह्रीं पूतवाचे नमः।
104. ॐ ह्रीं पूतशासनाय नमः।
105. ॐ ह्रीं पूतात्मने नमः।
106. ॐ ह्रीं परमज्योतिषे नमः।
107. ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय नमः।
108. ॐ ह्रीं दमीश्वराय नमः।
109. ॐ ह्रीं श्रीपते नमः।
110. ॐ ह्रीं भगवते नमः।
111. ॐ ह्रीं अर्हते नमः।
112. ॐ ह्रीं अरजसे नमः।
113. ॐ ह्रीं विरजसे नमः।
114. ॐ ह्रीं शुचये नमः।
115. ॐ ह्रीं तीर्थकृते नमः।
116. ॐ ह्रीं केवलिने नमः।
117. ॐ ह्रीं ईशानाय नमः।
118. ॐ ह्रीं पूजार्हाय नमः।
119. ॐ ह्रीं स्नातकाय नमः।
120. ॐ ह्रीं अमलाय नमः।
121. ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये नमः।
122. ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।
123. ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय नमः।
124. ॐ ह्रीं प्रजापतये नमः।
125. ॐ ह्रीं मुक्ताय नमः।
126. ॐ ह्रीं शक्ताय नमः।
127. ॐ ह्रीं निराबाधाय नमः।
128. ॐ ह्रीं निष्कलाय नमः।
129. ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय नमः।
130. ॐ ह्रीं निरंजनाय नमः।
131. ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः।
132. ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये नमः।
133. ॐ ह्रीं निरामयाय नमः।
134. ॐ ह्रीं अचल स्थितये नमः।
135. ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय नमः।
136. ॐ ह्रीं कूटस्थाय नमः।
137. ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः।
138. ॐ ह्रीं अक्षयाय नमः।
139. ॐ ह्रीं अग्रण्यै नमः।
140. ॐ ह्रीं ग्रामण्यै नमः।
141. ॐ ह्रीं नेत्रे नमः।
142. ॐ ह्रीं प्रणेत्रे नमः।
143. ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते नमः।
144. ॐ ह्रीं शास्त्रे नमः।
145. ॐ ह्रीं धर्मपतये नमः।
146. ॐ ह्रीं धर्म्याय नमः।
147. ॐ ह्रीं धर्मात्मने नमः।
148. ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते नमः।
149. ॐ ह्रीं वृषध्वजाय नमः।
150. ॐ ह्रीं वृषाधीशाय नमः।
151. ॐ ह्रीं वृषकेतवे नमः।
152. ॐ ह्रीं वृषायुधाय नमः।
153. ॐ ह्रीं वृषाय नमः।
154. ॐ ह्रीं वृषपतये नमः।
155. ॐ ह्रीं भर्त्रे नमः।
156. ॐ ह्रीं वृषभांकाय नमः।

157. ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय नमः।
158. ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये नमः।
159. ॐ ह्रीं भूतात्मने नमः।
160. ॐ ह्रीं भूतभृते नमः।
161. ॐ ह्रीं भूतभावनाय नमः।
162. ॐ ह्रीं प्रभवाय नमः।
163. ॐ ह्रीं विभवाय नमः।
164. ॐ ह्रीं भास्वते नमः।
165. ॐ ह्रीं भवाय नमः।
166. ॐ ह्रीं भावाय नमः।
167. ॐ ह्रीं भवान्तकाय नमः।
168. ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय नमः।
169. ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय नमः।
170. ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय नमः।
171. ॐ ह्रीं अभवाय नमः।
172. ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय नमः।
173. ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने नमः।
174. ॐ ह्रीं भूतनाथाय नमः।
175. ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे नमः।
176. ॐ ह्रीं सर्वादिये नमः।
177. ॐ ह्रीं सर्वदृशे नमः।
178. ॐ ह्रीं सार्वाय नमः।
179. ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय नमः।
180. ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय नमः।
181. ॐ ह्रीं सर्वात्मने नमः।
182. ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय नमः।
183. ॐ ह्रीं सर्वविदे नमः।
184. ॐ ह्रीं सर्वलोकजिताय नमः।
185. ॐ ह्रीं सुगतये नमः।
186. ॐ ह्रीं सुश्रुताय नमः।
187. ॐ ह्रीं सुश्रुते नमः।
188. ॐ ह्रीं सुवाचे नमः।
189. ॐ ह्रीं सूरये नमः।
190. ॐ ह्रीं बहुश्रुताय नमः।
191. ॐ ह्रीं विश्रुताय नमः।
192. ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय नमः।
193. ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय नमः।
194. ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे नमः।
195. ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय नमः।
196. ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय नमः।
197. ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय नमः।
198. ॐ ह्रीं सहस्रपादे नमः।
199. ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः।
200. ॐ ह्रीं विश्वविद्या महेश्वराय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

श्री दिव्यादि शत नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
सहस्र नाम प्रभु के अति सुन्दर, उनका महाविधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिव्यभाषापति आदि विश्वविद्या महेश्वरपर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

201. ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय नमः।
202. ॐ ह्रीं स्थविराय नमः।
203. ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय नमः।
204. ॐ ह्रीं पृष्ठाय नमः।
205. ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय नमः।
206. ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये नमः।
207. ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय नमः।
208. ॐ ह्रीं गरिष्ठाय नमः।
209. ॐ ह्रीं बंहिष्ठाय नमः।
210. ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय नमः।
211. ॐ ह्रीं अणिष्ठाय नमः।
212. ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे नमः।
213. ॐ ह्रीं विश्वभृते नमः।
214. ॐ ह्रीं विश्वसृजे नमः।
215. ॐ ह्रीं विश्वेटाय नमः।
216. ॐ ह्रीं विश्वभुजे नमः।
217. ॐ ह्रीं विश्वनायकाय नमः।
218. ॐ ह्रीं विश्वासिसे नमः।
219. ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने नमः।
220. ॐ ह्रीं विश्वजिते नमः।
221. ॐ ह्रीं विजितान्तकाय नमः।
222. ॐ ह्रीं विभवाय नमः।
223. ॐ ह्रीं विभयाय नमः।
224. ॐ ह्रीं वीराय नमः।
225. ॐ ह्रीं विशोकाय नमः।
226. ॐ ह्रीं विजराय नमः।
227. ॐ ह्रीं जरते नमः।
228. ॐ ह्रीं विरागाय नमः।
229. ॐ ह्रीं विरताय नमः।
230. ॐ ह्रीं असंगाय नमः।
231. ॐ ह्रीं विविक्ताय नमः।
232. ॐ ह्रीं वीतमत्सराय नमः।
233. ॐ ह्रीं विनेयजनताबांधवे नमः।
234. ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय नमः।
235. ॐ ह्रीं वियोगाय नमः।
236. ॐ ह्रीं योगविदे नमः।
237. ॐ ह्रीं विदुषे नमः।
238. ॐ ह्रीं विधात्रे नमः।
239. ॐ ह्रीं सुविधये नमः।
240. ॐ ह्रीं सुधिये नमः।
241. ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे नमः।
242. ॐ ह्रीं पृथ्वीमूर्तये नमः।
243. ॐ ह्रीं शांतिभाजे नमः।
244. ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय नमः।
245. ॐ ह्रीं वायुमूर्तये नमः।
246. ॐ ह्रीं असंगात्मने नमः।
247. ॐ ह्रीं वह्निमूर्त्तये नमः।
248. ॐ ह्रीं अधर्मधके नमः।
249. ॐ ह्रीं सुयज्वने नमः।
250. ॐ ह्रीं यजमानात्मने नमः।
251. ॐ ह्रीं सुत्वने नमः।
252. ॐ ह्रीं सुत्राम पूजिताय नमः।
253. ॐ ह्रीं ऋत्विजे नमः।
254. ॐ ह्रीं यज्ञपतये नमः।
255. ॐ ह्रीं याज्याय नमः।
256. ॐ ह्रीं यज्ञांगाय नमः।

257. ॐ ह्रीं अमृताय नमः।
258. ॐ ह्रीं हविषे नमः।
259. ॐ ह्रीं व्योममूर्तये नमः।
260. ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने नमः।
261. ॐ ह्रीं निर्लेपाय नमः।
262. ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः।
263. ॐ ह्रीं अचलाय नमः।
264. ॐ ह्रीं सौम्यमूर्तये नमः।
265. ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने नमः।
266. ॐ ह्रीं सूर्यमूर्त्तये नमः।
267. ॐ ह्रीं महाप्रभाय नमः।
268. ॐ ह्रीं मंत्रविदे नमः।
269. ॐ ह्रीं मंत्रकृते नमः।
270. ॐ ह्रीं मंत्रिणे नमः।
271. ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये नमः।
272. ॐ ह्रीं अनन्तगाय नमः।
273. ॐ ह्रीं स्वतंत्राय नमः।
274. ॐ ह्रीं तंत्रकृते नमः।
275. ॐ ह्रीं स्वांताय नमः।
276. ॐ ह्रीं कृतांतांताय नमः।
277. ॐ ह्रीं कृतांतकृते नमः।
278. ॐ ह्रीं कृतिणे नमः।
279. ॐ ह्रीं कृतार्थाय नमः।
280. ॐ ह्रीं सत्कृत्याय नमः।
281. ॐ ह्रीं कृतकृत्याय नमः।
282. ॐ ह्रीं कृतकृते नमः।
283. ॐ ह्रीं नित्याय नमः।
284. ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय नमः।
285. ॐ ह्रीं अमृत्यवे नमः।
286. ॐ ह्रीं अमृतात्मने नमः।
287. ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय नमः।
288. ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय नमः।
289. ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः।
290. ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने नमः।
291. ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय नमः।
292. ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये नमः।
293. ॐ ह्रीं ब्रह्मेटे नमः।
294. ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः।
295. ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय नमः।
296. ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने नमः।
297. ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः।
298. ॐ ह्रीं प्रशमात्मने नमः।
299. ॐ ह्रीं प्रशांतात्मने नमः।
300. ॐ ह्रीं पुराण पुरुषोत्तमाय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

स्थविष्ठ आदिक नामों का, हे जिनवर ! हम ध्यान करें।
सहस्रनाम प्रभु के अति सुन्दर, उनका महा विधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री स्थविष्ठादि पुराण पुरुषोत्तम पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

301. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय नमः।
302. ॐ ह्रीं अशोकाय नमः।
303. ॐ ह्रीं काय नमः।
304. ॐ ह्रीं सृष्टे नमः।
305. ॐ ह्रीं पद्म विष्टराय नमः।
306. ॐ ह्रीं परमेशाय नमः।
307. ॐ ह्रीं पद्मसम्भूतये नमः।
308. ॐ ह्रीं पद्मनाभये नमः।
309. ॐ ह्रीं अनुत्तराय नमः।
310. ॐ ह्रीं पद्मयोनये नमः।
311. ॐ ह्रीं जगद्योनये नमः।
312. ॐ ह्रीं इत्याय नमः।
313. ॐ ह्रीं स्तुत्याय नमः।
314. ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय नमः।
315. ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय नमः।
316. ॐ ह्रीं 'हृषीकेशाय' नमः।
317. ॐ ह्रीं जितजेयाय नमः।
318. ॐ ह्रीं कृतक्रियाय नमः।
319. ॐ ह्रीं गणाधिपाय नमः।
320. ॐ ह्रीं गणजेष्ठाय नमः।
321. ॐ ह्रीं गण्याय नमः।
322. ॐ ह्रीं पुण्याय नमः।
323. ॐ ह्रीं गुणाग्रण्ये नमः।
324. ॐ ह्रीं गुणाकराय नमः।
325. ॐ ह्रीं गुणांभोधये नमः।
326. ॐ ह्रीं गुणज्ञाय नमः।
327. ॐ ह्रीं गुणनायकाय नमः।
328. ॐ ह्रीं गुणादरिणे नमः।
329. ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने नमः।
330. ॐ ह्रीं निर्गुणाय नमः।
331. ॐ ह्रीं पुण्यगिरे नमः।
332. ॐ ह्रीं गुणाय नमः।
333. ॐ ह्रीं शरण्याय नमः।
334. ॐ ह्रीं पुण्यवाचे नमः।
335. ॐ ह्रीं पूताय नमः।
336. ॐ ह्रीं वरेण्याय नमः।
337. ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय नमः।
338. ॐ ह्रीं अगण्याय नमः।
339. ॐ ह्रीं पुण्यधिये नमः।
340. ॐ ह्रीं गुण्याय नमः।
341. ॐ ह्रीं पुण्यकृते नमः।
342. ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय नमः।
343. ॐ ह्रीं धर्मारामाय नमः।
344. ॐ ह्रीं गुणग्रामाय नमः।
345. ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधकाय नमः।
346. ॐ ह्रीं पापापेताय नमः।
347. ॐ ह्रीं विपापात्मने नमः।
348. ॐ ह्रीं विपाप्मने नमः।
349. ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय नमः।
350. ॐ ह्रीं निर्द्वन्दाय नमः।
351. ॐ ह्रीं निर्मदाय नमः।
352. ॐ ह्रीं शांताय नमः।
353. ॐ ह्रीं निर्मोहाय नमः।
354. ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय नमः।
355. ॐ ह्रीं निर्निमेषाय नमः।
356. ॐ ह्रीं निराहाराय नमः।

357. ॐ ह्रीं निष्क्रियाय नमः।
358. ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय नमः।
359. ॐ ह्रीं निष्कलंकाय नमः।
360. ॐ ह्रीं निरस्तैनसे नमः।
361. ॐ ह्रीं निर्धूतागसे नमः।
362. ॐ ह्रीं निरास्रवाय नमः।
363. ॐ ह्रीं विशालाय नमः।
364. ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे नमः।
365. ॐ ह्रीं अतुलाय नमः।
366. ॐ ह्रीं अचिन्त्य वैभवाय नमः।
367. ॐ ह्रीं सुसंवृताय नमः।
368. ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने नमः।
369. ॐ ह्रीं सुभृते नमः।
370. ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे नमः।
371. ॐ ह्रीं एकविद्याय नमः।
372. ॐ ह्रीं महाविद्याय नमः।
373. ॐ ह्रीं मुनये नमः।
374. ॐ ह्रीं परिवृढ़ाय नमः।
375. ॐ ह्रीं पतये नमः।
376. ॐ ह्रीं धीशाय नमः।
377. ॐ ह्रीं विद्यानिधये नमः।
378. ॐ ह्रीं साक्षिणे नमः।
379. ॐ ह्रीं विनेत्रे नमः।
380. ॐ ह्रीं विहतान्तकाय नमः।
381. ॐ ह्रीं पित्रे नमः।
382. ॐ ह्रीं पितामहाय नमः।
383. ॐ ह्रीं पात्रे नमः।
384. ॐ ह्रीं पवित्राय नमः।
385. ॐ ह्रीं पावनाय नमः।
386. ॐ ह्रीं गतये नमः।
387. ॐ ह्रीं त्रात्रे नमः।
388. ॐ ह्रीं भिषग्वराय नमः।
389. ॐ ह्रीं वर्याय नमः।
390. ॐ ह्रीं वरदाय नमः।
391. ॐ ह्रीं परमाय नमः।
392. ॐ ह्रीं पुंसे नमः।
393. ॐ ह्रीं कवये नमः।
394. ॐ ह्रीं पुराण पुरुषाय नमः।
395. ॐ ह्रीं वर्षीयसे नमः।
396. ॐ ह्रीं ऋषभाय नमः।
397. ॐ ह्रीं पुरवे नमः।
398. ॐ ह्रीं प्रतिष्ठा–प्रसवाय नमः।
399. ॐ ह्रीं हेतवे नमः।
400. ॐ ह्रीं भुवनैक पितामहाय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

महाशोकध्वज आदिक सौ–सौ, नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महाविधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महाशोकध्वजादि भुवनैकपितामहपर्यंत शतनाम विभूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

401. ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः।
402. ॐ ह्रीं श्लक्षणाय नमः।
403. ॐ ह्रीं लक्षण्याय नमः।
404. ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय नमः।
405. ॐ ह्रीं निरक्षाय नमः।
406. ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षाय नमः।
407. ॐ ह्रीं पुष्कलाय नमः।
408. ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय नमः।
409. ॐ ह्रीं सिद्धिदाय नमः।
410. ॐ ह्रीं सिद्धसंकल्पाय नमः।
411. ॐ ह्रीं सिद्धात्मने नमः।
412. ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय नमः।
413. ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय नमः।
414. ॐ ह्रीं महाबोधये नमः।
415. ॐ ह्रीं वर्धमानाय नमः।
416. ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय नमः।
417. ॐ ह्रीं वेदांगाय नमः।
418. ॐ ह्रीं वेदविदे नमः।
419. ॐ ह्रीं वेद्याय नमः।
420. ॐ ह्रीं जातरूपाय नमः।
421. ॐ ह्रीं विदांवराय नमः।
422. ॐ ह्रीं वेदवेद्याय नमः।
423. ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय नमः।
424. ॐ ह्रीं विवेदाय नमः।
425. ॐ ह्रीं वदतांवराय नमः।
426. ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय नमः।
427. ॐ ह्रीं व्यक्ताय नमः।
428. ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे नमः।
429. ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय नमः।
430. ॐ ह्रीं युगादिकृते नमः।
431. ॐ ह्रीं युगाधाराये नमः।
432. ॐ ह्रीं युगादये नमः।
433. ॐ ह्रीं जगदादिजाय नमः।
434. ॐ ह्रीं अतीन्द्राय नमः।
435. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय नमः।
436. ॐ ह्रीं धीन्द्राय नमः।
437. ॐ ह्रीं महेन्द्राय नमः।
438. ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थ दृशे नमः।
439. ॐ ह्रीं अनीन्द्रियाय नमः।
440. ॐ ह्रीं अहमिंद्रार्च्याय नमः।
441. ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय नमः।
442. ॐ ह्रीं महते नमः।
443. ॐ ह्रीं उद्भवाय नमः।
444. ॐ ह्रीं कारणाय नमः।
445. ॐ ह्रीं कर्त्रे नमः।
446. ॐ ह्रीं पारगाय नमः।
447. ॐ ह्रीं भवतारकाय नमः।
448. ॐ ह्रीं अगाह्याय नमः।
449. ॐ ह्रीं गहनाय नमः।
450. ॐ ह्रीं गुह्याय नमः।
451. ॐ ह्रीं पराध्यार्य नमः।
452. ॐ ह्रीं परमेश्वराय नमः।
453. ॐ ह्रीं अनंतर्द्धये नमः।
454. ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये नमः।
455. ॐ ह्रीं अचिंत्यर्द्धये नमः।
456. ॐ ह्रीं समग्रधिये नमः।

457. ॐ ह्रीं प्राग्राय नमः।
458. ॐ ह्रीं प्राग्रहराय नमः।
459. ॐ ह्रीं अभ्यग्राय नमः।
460. ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय नमः।
461. ॐ ह्रीं अग्रयाय नमः।
462. ॐ ह्रीं अग्रिमाय नमः।
463. ॐ ह्रीं अग्रजाय नमः।
464. ॐ ह्रीं महातपसे नमः।
465. ॐ ह्रीं महातेजसे नमः।
466. ॐ ह्रीं महोदर्काय नमः।
467. ॐ ह्रीं महोदयाय नमः।
468. ॐ ह्रीं महायशसे नमः।
469. ॐ ह्रीं महाधाम्ने नमः।
470. ॐ ह्रीं महासत्त्वाय नमः।
471. ॐ ह्रीं महाधृतये नमः।
472. ॐ ह्रीं महाधैर्याय नमः।
473. ॐ ह्रीं महावीर्याय नमः।
474. ॐ ह्रीं महासम्पदे नमः।
475. ॐ ह्रीं महाबलाय नमः।
476. ॐ ह्रीं महाशक्तये नमः।
477. ॐ ह्रीं महाज्योतिषे नमः।
478. ॐ ह्रीं महाभूतये नमः।
479. ॐ ह्रीं महाद्युतये नमः।
480. ॐ ह्रीं महामतये नमः।
481. ॐ ह्रीं महानीतये नमः।
482. ॐ ह्रीं महाक्षान्तये नमः।
483. ॐ ह्रीं महादयाय नमः।
484. ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय नमः।
485. ॐ ह्रीं महाभागाय नमः।
486. ॐ ह्रीं महानंदाय नमः।
487. ॐ ह्रीं महाकवये नमः।
488. ॐ ह्रीं महामहसे नमः।
489. ॐ ह्रीं महाकीर्तये नमः।
490. ॐ ह्रीं महाकांतये नमः।
491. ॐ ह्रीं महावपुषे नमः।
492. ॐ ह्रीं महादानाय नमः।
493. ॐ ह्रीं महाज्ञानाय नमः।
494. ॐ ह्रीं महायोगाय नमः।
495. ॐ ह्रीं महागुणाय नमः।
496. ॐ ह्रीं महामहपतये नमः।
497. ॐ ह्रीं प्राप्तमहापंचकल्याणकाय नमः।
498. ॐ ह्रीं महाप्रभवे नमः।
499. ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्याधीशाय नमः।
500. ॐ ह्रीं महेश्वराय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

श्री वृक्षलक्षण आदिक सौ, नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महाविधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री श्रीवृक्षलक्षणादि महेश्वर पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

501. ॐ ह्रीं महामुनये नमः।
502. ॐ ह्रीं महामौनिने नमः।
503. ॐ ह्रीं महाध्यानिने नमः।
504. ॐ ह्रीं महादमाय नमः।
505. ॐ ह्रीं महाक्षमाय नमः।
506. ॐ ह्रीं महाशीलाय नमः।
507. ॐ ह्रीं महायज्ञाय नमः।
508. ॐ ह्रीं महामखाय नमः।
509. ॐ ह्रीं महाव्रतपतये नमः।
510. ॐ ह्रीं मह्याय नमः।
511. ॐ ह्रीं महाकान्तिधराय नमः।
512. ॐ ह्रीं अधिपाय नमः।
513. ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय नमः।
514. ॐ ह्रीं अमेयाय नमः।
515. ॐ ह्रीं महोपायाय नमः।
516. ॐ ह्रीं महोमयाय नमः।
517. ॐ ह्रीं महाकारुण्यकाय नमः।
518. ॐ ह्रीं मंत्रे नमः।
519. ॐ ह्रीं महामन्त्राय नमः।
520. ॐ ह्रीं महायतये नमः।
521. ॐ ह्रीं महानादाय नमः।
522. ॐ ह्रीं महाघोषाय नमः।
523. ॐ ह्रीं महेज्याय नमः।
524. ॐ ह्रीं महसांपतये नमः।
525. ॐ ह्रीं महाध्वरधराय नमः।
526. ॐ ह्रीं धुर्याय नमः।
527. ॐ ह्रीं महौदार्याय नमः।
528. ॐ ह्रीं महेष्ठवाचे नमः।
529. ॐ ह्रीं महात्मने नमः।
530. ॐ ह्रीं महसांधाम्ने नमः।
531. ॐ ह्रीं महर्षये नमः।
532. ॐ ह्रीं महितोदयाय नमः।
533. ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय नमः।
534. ॐ ह्रीं शूराय नमः।
535. ॐ ह्रीं महाभूतपतये नमः।
536. ॐ ह्रीं गुरवे नमः।
537. ॐ ह्रीं महापराक्रमाय नमः।
538. ॐ ह्रीं अनंताय नमः।
539. ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे नमः।
540. ॐ ह्रीं वशिने नमः।
541. ॐ ह्रीं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः।
542. ॐ ह्रीं महामोहाद्रिसूदनाय नमः।
543. ॐ ह्रीं महागुणाकराय नमः।
544. ॐ ह्रीं क्षांताय नमः।
545. ॐ ह्रीं महायोगीश्वराय नमः।
546. ॐ ह्रीं शमिने नमः।
547. ॐ ह्रीं महाध्यानपतये नमः।
548. ॐ ह्रीं ध्यानमहाधर्मणे नमः।
549. ॐ ह्रीं महाव्रताय नमः।
550. ॐ ह्रीं महाकर्मारिघ्ने नमः।
551. ॐ ह्रीं आत्मज्ञाय नमः।
552. ॐ ह्रीं महादेवाय नमः।
553. ॐ ह्रीं महेशित्रे नमः।
554. ॐ ह्रीं सर्वक्लेशापहाय नमः।

555. ॐ ह्रीं साधवे नमः।
556. ॐ ह्रीं सर्वदोषहराय नमः।
557. ॐ ह्रीं हराय नमः।
558. ॐ ह्रीं असंख्येयाय नमः।
559. ॐ ह्रीं अप्रमेयात्मने नमः।
560. ॐ ह्रीं शमात्मने नमः।
561. ॐ ह्रीं प्रशमाकराय नमः।
562. ॐ ह्रीं सर्वयोगीश्वराय नमः।
563. ॐ ह्रीं अचिंत्याय नमः।
564. ॐ ह्रीं श्रुतात्मने नमः।
565. ॐ ह्रीं विष्टरश्रवसे नमः।
566. ॐ ह्रीं दान्तात्मने नमः।
567. ॐ ह्रीं दमतीर्थेशाय नमः।
568. ॐ ह्रीं योगात्मने नमः।
569. ॐ ह्रीं ज्ञानसर्वगाय नमः।
570. ॐ ह्रीं प्रधानाय नमः।
571. ॐ ह्रीं आत्मने नमः।
572. ॐ ह्रीं प्रकृतये नमः।
573. ॐ ह्रीं परमाय नमः।
574. ॐ ह्रीं परमोदयाय नमः।
575. ॐ ह्रीं प्रक्षीणबंधाय नमः।
576. ॐ ह्रीं कामारये नमः।
577. ॐ ह्रीं क्षेमकृते नमः।
578. ॐ ह्रीं क्षेमशासनाय नमः।
579. ॐ ह्रीं प्रणवाय नमः।
580. ॐ ह्रीं प्रणताय नमः।
581. ॐ ह्रीं प्राणाय नमः।
582. ॐ ह्रीं प्राणदाय नमः।
583. ॐ ह्रीं प्रणतेश्वराय नमः।
584. ॐ ह्रीं प्रमाणाय नमः।
585. ॐ ह्रीं प्रणिधये नमः।
586. ॐ ह्रीं दक्षाय नमः।
587. ॐ ह्रीं दक्षिणाय नमः।
588. ॐ ह्रीं अध्वर्यवे नमः।
589. ॐ ह्रीं अध्वराय नमः।
590. ॐ ह्रीं आनंदाय नमः।
591. ॐ ह्रीं नन्दनाय नमः।
592. ॐ ह्रीं नन्दाय नमः।
593. ॐ ह्रीं वंद्याय नमः।
594. ॐ ह्रीं अनिंद्याय नमः।
595. ॐ ह्रीं अभिनन्दनाय नमः।
596. ॐ ह्रीं कामघ्ने नमः।
597. ॐ ह्रीं कामदाय नमः।
598. ॐ ह्रीं काम्याय नमः।
599. ॐ ह्रीं कामधेनवे नमः।
600. ॐ ह्रीं अरिंजयाय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

महामुनि से अंत अरिंजय, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री महामुनि आदि अरिंजय पर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

601. ॐ ह्रीं असंस्कृत सुसंस्काराय नमः।
602. ॐ ह्रीं प्राकृताय नमः।
603. ॐ ह्रीं वैकृतांतकृते नमः।
604. ॐ ह्रीं अंतकृते नमः।
605. ॐ ह्रीं कांतगवे नमः।
606. ॐ ह्रीं कान्ताय नमः।
607. ॐ ह्रीं चिंतामणये नमः।
608. ॐ ह्रीं अभीष्टदाय नमः।
609. ॐ ह्रीं अजिताय नमः।
610. ॐ ह्रीं जितकामारये नमः।
611. ॐ ह्रीं अमिताय नमः।
612. ॐ ह्रीं अमितशासनाय नमः।
613. ॐ ह्रीं जितक्रोधाय नमः।
614. ॐ ह्रीं जितामित्राय नमः।
615. ॐ ह्रीं जितक्लेशाय नमः।
616. ॐ ह्रीं जितांतकाय नमः।
617. ॐ ह्रीं जिनेन्द्राय नमः।
618. ॐ ह्रीं परमानंदाय नमः।
619. ॐ ह्रीं मुनीन्द्राय नमः।
620. ॐ ह्रीं दुन्दुभिस्वनाय नमः।
621. ॐ ह्रीं महेन्द्रवंद्याय नमः।
622. ॐ ह्रीं योगीन्द्राय नमः।
623. ॐ ह्रीं यतीन्द्राय नमः।
624. ॐ ह्रीं नाभिनन्दनाय नमः।
625. ॐ ह्रीं नाभेयाय नमः।
626. ॐ ह्रीं नाभिजाय नमः।
627. ॐ ह्रीं अजाताय नमः।
628. ॐ ह्रीं सुव्रताय नमः।
629. ॐ ह्रीं मनवे नमः।
630. ॐ ह्रीं उत्तमाय नमः।
631. ॐ ह्रीं अभेद्याय नमः।
632. ॐ ह्रीं अनत्ययाय नमः।
633. ॐ ह्रीं अनाश्वसे नमः।
634. ॐ ह्रीं अधिकाय नमः।
635. ॐ ह्रीं अधिगुरवे नमः।
636. ॐ ह्रीं सुधिये नमः।
637. ॐ ह्रीं सुमेधसे नमः।
638. ॐ ह्रीं विक्रमिणे नमः।
639. ॐ ह्रीं स्वामिने नमः।
640. ॐ ह्रीं दुराधर्षय नमः।
641. ॐ ह्रीं निरुत्सुकाय नमः।
642. ॐ ह्रीं विशिष्टाय नमः।
643. ॐ ह्रीं शिष्टभुजे नमः।
644. ॐ ह्रीं शिष्टाय नमः।
645. ॐ ह्रीं प्रत्याय नमः।
646. ॐ ह्रीं कामनाय नमः।
647. ॐ ह्रीं अनघाय नमः।
648. ॐ ह्रीं क्षेमिणे नमः।
649. ॐ ह्रीं क्षेमंकराय नमः।
650. ॐ ह्रीं अक्षय्याय नमः।
651. ॐ ह्रीं क्षेमधर्मपतये नमः।
652. ॐ ह्रीं क्षमिणे नमः।
653. ॐ ह्रीं अग्राह्याय नमः।
654. ॐ ह्रीं ज्ञानानिग्राह्याय नमः।
655. ॐ ह्रीं ध्यानगम्याय नमः।
656. ॐ ह्रीं निरुत्तराय नमः।

657. ॐ ह्रीं सुकृतिने नमः।
658. ॐ ह्रीं धातवे नमः।
659. ॐ ह्रीं इज्यार्हाय नमः।
660. ॐ ह्रीं सुनयाय नमः।
661. ॐ ह्रीं चतुराननाय नमः।
662. ॐ ह्रीं श्रीनिवासाय नमः।
663. ॐ ह्रीं चतुर्वक्त्राय नमः।
664. ॐ ह्रीं चतुरास्याय नमः।
665. ॐ ह्रीं चतुर्मुखाय नमः।
666. ॐ ह्रीं सत्यात्मने नमः।
667. ॐ ह्रीं सत्यविज्ञानाय नमः।
668. ॐ ह्रीं सत्यवाचे नमः।
669. ॐ ह्रीं सत्यशासनाय नमः।
670. ॐ ह्रीं सत्याशिषे नमः।
671. ॐ ह्रीं सत्यसन्धानाय नमः।
672. ॐ ह्रीं सत्याय नमः।
673. ॐ ह्रीं सत्यपरायणाय नमः।
674. ॐ ह्रीं स्थेयसे नमः।
675. ॐ ह्रीं स्थवीयसे नमः।
676. ॐ ह्रीं नेदीयसे नमः।
677. ॐ ह्रीं दवीयसे नमः।
678. ॐ ह्रीं दूरदर्शनाय नमः।
679. ॐ ह्रीं अणोरणीयसे नमः।
680. ॐ ह्रीं अनणवे नमः।
681. ॐ ह्रीं गरीयसामाद्यगुरुवे नमः।
682. ॐ ह्रीं सदायोगाय नमः।
683. ॐ ह्रीं सदाभोगाय नमः।
684. ॐ ह्रीं सदातृप्ताय नमः।
685. ॐ ह्रीं सदाशिवाय नमः।
686. ॐ ह्रीं सदागतये नमः।
687. ॐ ह्रीं सदासौख्याय नमः।
688. ॐ ह्रीं सदाविद्याय नमः।
689. ॐ ह्रीं सदोदयाय नमः।
690. ॐ ह्रीं सुघोषाय नमः।
691. ॐ ह्रीं सुमुखाय नमः।
692. ॐ ह्रीं सौम्याय नमः।
693. ॐ ह्रीं सुखदाय नमः।
694. ॐ ह्रीं सुहिताय नमः।
695. ॐ ह्रीं सुहृदे नमः।
696. ॐ ह्रीं सुगुप्ताय नमः।
697. ॐ ह्रीं गुप्तिभृते नमः।
698. ॐ ह्रीं गोप्त्रे नमः।
699. ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय नमः।
700. ॐ ह्रीं दमेश्वराय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

असंस्कार से अंत दमेश्वर, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री असंस्कृत सुसंस्कार आदि दमेश्वर पर्यन्त शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

701. ॐ ह्रीं बृहत्वृहस्पतये नमः।
702. ॐ ह्रीं वाग्मिने नमः।
703. ॐ ह्रीं वाचस्पतये नमः।
704. ॐ ह्रीं उदारधिये नमः।
705. ॐ ह्रीं मनीषिणे नमः।
706. ॐ ह्रीं धिषणाय नमः।
707. ॐ ह्रीं धीमते नमः।
708. ॐ ह्रीं शेमुशीषाय नमः।
709. ॐ ह्रीं गिरांपतये नमः।
710. ॐ ह्रीं नैकरूपाय नमः।
711. ॐ ह्रीं नयोत्तुंगाय नमः।
712. ॐ ह्रीं नैकात्मने नमः।
713. ॐ ह्रीं नैकधर्मकृतये नमः।
714. ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय नमः।
715. ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने नमः।
716. ॐ ह्रीं कृतज्ञाय नमः।
717. ॐ ह्रीं कृतलक्षणाय नमः।
718. ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भाय नमः।
719. ॐ ह्रीं दयागर्भाय नमः।
720. ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय नमः।
721. ॐ ह्रीं प्रभास्वराय नमः।
722. ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय नमः।
723. ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय नमः।
724. ॐ ह्रीं हेमगर्भाय नमः।
725. ॐ ह्रीं सुदर्शनाय नमः।
726. ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते नमः।
727. ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय नमः।
728. ॐ ह्रीं दृढ़ीयसे नमः।
729. ॐ ह्रीं इनाय नमः।
730. ॐ ह्रीं इशित्रे नमः।
731. ॐ ह्रीं मनोहराय नमः।
732. ॐ ह्रीं मनोज्ञांगाय नमः।
733. ॐ ह्रीं धीराय नमः।
734. ॐ ह्रीं गंभीरशासनाय नमः।
735. ॐ ह्रीं धर्मयूपाय नमः।
736. ॐ ह्रीं दयायागाय नमः।
737. ॐ ह्रीं धर्मनेमये नमः।
738. ॐ ह्रीं मुनीश्वराय नमः।
739. ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय नमः।
740. ॐ ह्रीं देवाय नमः।
741. ॐ ह्रीं कर्मघ्ने नमः।
742. ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय नमः।
743. ॐ ह्रीं अमोघवाचे नमः।
744. ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय नमः।
745. ॐ ह्रीं निर्मलाय नमः।
746. ॐ ह्रीं अमोघशासनाय नमः।
747. ॐ ह्रीं स्वरूपाय नमः।
748. ॐ ह्रीं सुभगाय नमः।
749. ॐ ह्रीं त्यागिने नमः।
750. ॐ ह्रीं समयज्ञाय नमः।
751. ॐ ह्रीं समाहिताय नमः।
752. ॐ ह्रीं सुस्थिताय नमः।
753. ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे नमः।
754. ॐ ह्रीं स्वस्थाय नमः।
755. ॐ ह्रीं नीरजस्काय नमः।
756. ॐ ह्रीं निरुद्धवाय नमः।

757. ॐ ह्रीं अलेपाय नमः।
758. ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने नमः।
759. ॐ ह्रीं वीतरागाय नमः।
760. ॐ ह्रीं गतस्पृहाय नमः।
761. ॐ ह्रीं वश्येन्द्रियाय नमः।
762. ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने नमः।
763. ॐ ह्रीं निःसपत्नाय नमः।
764. ॐ ह्रीं जितेन्द्रियाय नमः।
765. ॐ ह्रीं प्रशान्ताय नमः।
766. ॐ ह्रीं अनंतधामर्षये नमः।
767. ॐ ह्रीं मंगलाय नमः।
768. ॐ ह्रीं मलघ्ने नमः।
769. ॐ ह्रीं अनघाय नमः।
770. ॐ ह्रीं अनीदृशे नमः।
771. ॐ ह्रीं उपमाभूताय नमः।
772. ॐ ह्रीं दिष्टये नमः।
773. ॐ ह्रीं दैवाय नमः।
774. ॐ ह्रीं अगोचराय नमः।
775. ॐ ह्रीं अमूर्ताय नमः।
776. ॐ ह्रीं मूर्तिमते नमः।
777. ॐ ह्रीं एकस्मै नमः।
778. ॐ ह्रीं नैकस्मै नमः।
779. ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे नमः।
780. ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय नमः।
781. ॐ ह्रीं अगम्यात्मने नमः।
782. ॐ ह्रीं योगविदे नमः।
783. ॐ ह्रीं योगिवन्दिताय नमः।
784. ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय नमः।
785. ॐ ह्रीं सदाभाविने नमः।
786. ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः।
787. ॐ ह्रीं शंकराय नमः।
788. ॐ ह्रीं शंवदाय नमः।
789. ॐ ह्रीं दांताय नमः।
790. ॐ ह्रीं दमिने नमः।
791. ॐ ह्रीं क्षान्तिपरायणाय नमः।
792. ॐ ह्रीं अधिपाय नमः।
793. ॐ ह्रीं परमानन्दाय नमः।
794. ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय नमः।
795. ॐ ह्रीं परात्पराय नमः।
796. ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय नमः।
797. ॐ ह्रीं अभ्यर्च्याय नमः।
798. ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः।
799. ॐ ह्रीं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः।
800. ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

बृहत बृहस्पति आदिक् सौ-सौ, नामों का हम ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री बृहद् बृहस्पत्यादि त्रिलोकाग्रशिखामणयेपर्यंत शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

801. ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने नमः।
802. ॐ ह्रीं लोकेशाय नमः।
803. ॐ ह्रीं लोकधात्रे नमः।
804. ॐ ह्रीं दृढ़व्रताय नमः।
805. ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय नमः।
806. ॐ ह्रीं जगत्पूज्याय नमः।
807. ॐ ह्रीं सर्वलोकैकसारथये नमः।
808. ॐ ह्रीं पुराणाय नमः।
809. ॐ ह्रीं पुरुषाय नमः।
810. ॐ ह्रीं पूर्वाय नमः।
811. ॐ ह्रीं कृत पूर्वांगविस्तराय नमः।
812. ॐ ह्रीं आदिदेवाय नमः।
813. ॐ ह्रीं पुराणाद्याय नमः।
814. ॐ ह्रीं पुरुदेवाय नमः।
815. ॐ ह्रीं अधिदेवतायै नमः।
816. ॐ ह्रीं युगमुख्याय नमः।
817. ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय नमः।
818. ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय नमः।
819. ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय नमः।
820. ॐ ह्रीं कल्याणाय नमः।
821. ॐ ह्रीं कल्याय नमः।
822. ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय नमः।
823. ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये नमः।
824. ॐ ह्रीं दीप्तकल्याणात्मने नमः।
825. ॐ ह्रीं विकल्मषाय नमः।
826. ॐ ह्रीं विकलंकाय नमः।
827. ॐ ह्रीं कलातीताय नमः।
828. ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय नमः।
829. ॐ ह्रीं कलाधराय नमः।
830. ॐ ह्रीं देवदेवाय नमः।
831. ॐ ह्रीं जगन्नाथाय नमः।
832. ॐ ह्रीं जगतबंधवे नमः।
833. ॐ ह्रीं जगद्विभवे नमः।
834. ॐ ह्रीं जगत्हितैषिणे नमः।
835. ॐ ह्रीं लोकज्ञाय नमः।
836. ॐ ह्रीं सर्वगाय नमः।
837. ॐ ह्रीं जगदग्रजाय नमः।
838. ॐ ह्रीं चराचरगुरुवे नमः।
839. ॐ ह्रीं गोप्याय नमः।
840. ॐ ह्रीं गूढ़ात्मने नमः।
841. ॐ ह्रीं गूढ़गोचराय नमः।
842. ॐ ह्रीं सद्योजाताय नमः।
843. ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने नमः।
844. ॐ ह्रीं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः।
845. ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय नमः।
846. ॐ ह्रीं भर्माभाय नमः।
847. ॐ ह्रीं सुप्रभाय नमः।
848. ॐ ह्रीं कनकप्रभाय नमः।
849. ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय नमः।
850. ॐ ह्रीं रुक्माभाय नमः।
851. ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः।
852. ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय नमः।
853. ॐ ह्रीं तुंगाय नमः।
854. ॐ ह्रीं बालार्काभाय नमः।
855. ॐ ह्रीं अनलप्रभाय नमः।
856. ॐ ह्रीं संध्याभ्रबभ्रवे नमः।

857. ॐ ह्रीं हेमाभाय नमः।
858. ॐ ह्रीं तप्तचामीकरच्छवये नमः।
859. ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः।
860. ॐ ह्रीं कनत्कांचनसन्निभाय नमः।
861. ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय नमः।
862. ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय नमः।
863. ॐ ह्रीं शांतकुंभनिभप्रभाय नमः।
864. ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय नमः।
865. ॐ ह्रीं जातरूपाभाय नमः।
866. ॐ ह्रीं तप्तजाम्बूनदद्युतये नमः।
867. ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रियै नमः।
868. ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय नमः।
869. ॐ ह्रीं हाटकद्युतये नमः।
870. ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय नमः।
871. ॐ ह्रीं पुष्टिदाय नमः।
872. ॐ ह्रीं पुष्टाय नमः।
873. ॐ ह्रीं स्पष्टाय नमः।
874. ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय नमः।
875. ॐ ह्रीं क्षमाय नमः।
876. ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय नमः।
877. ॐ ह्रीं अप्रतिघाय नमः।
878. ॐ ह्रीं अमोघाय नमः।
879. ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे नमः।
880. ॐ ह्रीं शासित्रे नमः।
881. ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः।
882. ॐ ह्रीं शांतिनिष्ठाय नमः।
883. ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय नमः।
884. ॐ ह्रीं शिवतातये नमः।
885. ॐ ह्रीं शिवप्रदाय नमः।
886. ॐ ह्रीं शांतिदाय नमः।
887. ॐ ह्रीं शान्तिकृते नमः।
888. ॐ ह्रीं शांतये नमः।
889. ॐ ह्रीं कांतिमतये नमः।
890. ॐ ह्रीं कामितप्रदाय नमः।
891. ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये नमः।
892. ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय नमः।
893. ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय नमः।
894. ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय नमः।
895. ॐ ह्रीं सुस्थिराय नमः।
896. ॐ ह्रीं स्थावराय नमः।
897. ॐ ह्रीं स्थाणवे नमः।
898. ॐ ह्रीं पृथीयसे नमः।
899. ॐ ह्रीं प्रथिताय नमः।
900. ॐ ह्रीं पृथवे नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

त्रिकालदर्शी से पृथु जिन तक, शत नामों का ध्यान करें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें।।
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिकालदर्शीतादि पृथु पर्यन्त शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

901. ॐ ह्रीं दिग्वाससे नमः।
902. ॐ ह्रीं वातरशनाय नमः।
903. ॐ ह्रीं निर्ग्रंथेशाय नमः।
904. ॐ ह्रीं निरम्बराय नमः।
905. ॐ ह्रीं निष्किंचनाय नमः।
906. ॐ ह्रीं निराशंसाय नमः।
907. ॐ ह्रीं ज्ञानचक्षुषे नमः।
908. ॐ ह्रीं अमोमुहाय नमः।
909. ॐ ह्रीं तेजोराशये नमः।
910. ॐ ह्रीं अनंतौजसे नमः।
911. ॐ ह्रीं ज्ञानाब्धये नमः।
912. ॐ ह्रीं शीलसागराय नमः।
913. ॐ ह्रीं तेजोमयाय नमः।
914. ॐ ह्रीं अमितज्योतिषे नमः।
915. ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये नमः।
916. ॐ ह्रीं तमोपहाय नमः।
917. ॐ ह्रीं जगच्चूड़ामणये नमः।
918. ॐ ह्रीं दीप्ताय नमः।
919. ॐ ह्रीं शंवते नमः।
920. ॐ ह्रीं विघ्न विनायकाय नमः।
921. ॐ ह्रीं कलिघ्नाय नमः।
922. ॐ ह्रीं कर्मशत्रुघ्नाय नमः।
923. ॐ ह्रीं लोकालोकप्रकाशकाय नमः।
924. ॐ ह्रीं अनिद्रालवे नमः।
925. ॐ ह्रीं अंतद्रालवे नमः।
926. ॐ ह्रीं जागरुकाय नमः।
927. ॐ ह्रीं प्रमामयाय नमः।
928. ॐ ह्रीं लक्ष्मीपतये नमः।
929. ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे नमः।
930. ॐ ह्रीं धर्मराजाय नमः।
931. ॐ ह्रीं प्रजाहिताय नमः।
932. ॐ ह्रीं मुमुक्षवे नमः।
933. ॐ ह्रीं बंधमोक्षज्ञाय नमः।
934. ॐ ह्रीं जिताक्षाय नमः।
935. ॐ ह्रीं जितमन्मथाय नमः।
936. ॐ ह्रीं प्रशांत रस शैलुषाय नमः।
937. ॐ ह्रीं भव्यपैटकनायकाय नमः।
938. ॐ ह्रीं मूलकर्त्रे नमः।
939. ॐ ह्रीं अखिलज्योतिषे नमः।
940. ॐ ह्रीं मलघ्नाय नमः।
941. ॐ ह्रीं मूलकारणाय नमः।
942. ॐ ह्रीं आप्ताय नमः।
943. ॐ ह्रीं वागीश्वराय नमः।
944. ॐ ह्रीं श्रेयसे नमः।
945. ॐ ह्रीं श्रायसोक्तये नमः।
946. ॐ ह्रीं निरुक्तवाचे नमः।
947. ॐ ह्रीं प्रवक्त्रे नमः।
948. ॐ ह्रीं वचसामीशाय नमः।
949. ॐ ह्रीं मार्जिते नमः।
950. ॐ ह्रीं विश्व भावविदे नमः।
951. ॐ ह्रीं सुतनवे नमः।
952. ॐ ह्रीं तनुनिर्मुक्ताय नमः।
953. ॐ ह्रीं सुगताय नमः।
954. ॐ ह्रीं हतदुर्नयाय नमः।
955. ॐ ह्रीं श्रीशाय नमः।
956. ॐ ह्रीं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः।
957. ॐ ह्रीं वीतभिये नमः।
958. ॐ ह्रीं अभयंकराय नमः।
959. ॐ ह्रीं उत्सन्नदोषाय नमः।
960. ॐ ह्रीं निर्विघ्नाय नमः।

961. ॐ ह्रीं निश्चलाय नमः।
962. ॐ ह्रीं लोकवत्सलाय नमः।
963. ॐ ह्रीं लोकोत्तराय नमः।
964. ॐ ह्रीं लोकपतये नमः।
965. ॐ ह्रीं लोकचक्षुषे नमः।
966. ॐ ह्रीं अपारधिये नमः।
967. ॐ ह्रीं धीरधियै नमः।
968. ॐ ह्रीं बुद्धसन्मार्गाय नमः।
969. ॐ ह्रीं शुद्धाय नमः।
970. ॐ ह्रीं सूनृतपूतवाचे नमः।
971. ॐ ह्रीं प्रज्ञापारमिताय नमः।
972. ॐ ह्रीं प्राज्ञाय नमः।
973. ॐ ह्रीं यतये नमः।
974. ॐ ह्रीं नियमितेन्द्रियाय नमः।
975. ॐ ह्रीं भदंताय नमः।
976. ॐ ह्रीं भद्रकृते नमः।
977. ॐ ह्रीं भद्राय नमः।
978. ॐ ह्रीं कल्पवृक्षाय नमः।
979. ॐ ह्रीं वरप्रदाय नमः।
980. ॐ ह्रीं समुन्मूलितकर्मारिये नमः।
981. ॐ ह्रीं कर्मकाष्ठाशुशुक्षण्यै नमः।
982. ॐ ह्रीं कर्मण्याय नमः।
983. ॐ ह्रीं कर्मठाय नमः।
984. ॐ ह्रीं प्रांशवे नमः।
985. ॐ ह्रीं हेयादेयविचक्षणाय नमः।
986. ॐ ह्रीं अनंतशक्तये नमः।
987. ॐ ह्रीं अच्छेद्याय नमः।
988. ॐ ह्रीं त्रिपुरारये नमः।
989. ॐ ह्रीं त्रिलोचनाय नमः।
990. ॐ ह्रीं त्रिनेत्राय नमः।
991. ॐ ह्रीं त्र्यम्बकाय नमः।
992. ॐ ह्रीं त्र्यक्षाय नमः।
993. ॐ ह्रीं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः।
994. ॐ ह्रीं समन्तभद्राय नमः।
995. ॐ ह्रीं शान्तारये नमः।
996. ॐ ह्रीं धर्माचार्याय नमः।
997. ॐ ह्रीं दयानिधये नमः।
998. ॐ ह्रीं सूक्ष्मदर्शिने नमः।
999. ॐ ह्रीं जितानंगाय नमः।
1000. ॐ ह्रीं कृपालवे नमः।
1001. ॐ ह्रीं धर्मदेशकाय नमः।
1002. ॐ ह्रीं शुभंयवे नमः।
1003. ॐ ह्रीं सुखसाद्भूताय नमः।
1004. ॐ ह्रीं पुण्यराशये नमः।
1005. ॐ ह्रीं अनामयाय नमः।
1006. ॐ ह्रीं धर्मपालाय नमः।
1007. ॐ ह्रीं जगत्पालाय नमः।
1008. ॐ ह्रीं धर्मसाम्राज्य नायकाय नमः।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

दिग्वासा से धर्मचक्री तक, अष्टोत्तर शत नाम जपें।
नाम सहस्र नाथ के सुन्दर, उनका महा विधान करें॥
यह विधान हम करे कराये, और निरन्तर पाठ करें।
ध्वजा सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, जिन वैभव का ठाठ वरें॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री दिग्वासा आदि धर्म साम्राज्य नायक पर्यंत अष्टोत्तर शतनाम भूषित श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रशस्ति

दोहा

परमेष्ठी जिन पाँच को, कोटि अनंत प्रणाम।
सिद्ध अनंतानंत का, जपते हम नित नाम॥1॥

चौबीसों तीर्थेश को, वन्दन बारम्बार।
देव–गुरु–जिन शास्त्र को, नमन करें त्रय बार॥2॥

धर्मतीर्थ में राजते, इच्छापूरक नाथ।
सब इच्छा पूरी करें, जिनवर आदिनाथ॥3॥

धर्मतीर्थ साम्राज्य के, नायक शांति जिनेश।
अतिशय नित करते रहें, उनको नमन हमेश॥4॥

आदि शान्ति गुरु को नमन, महावीर कीर्ति मुनीश।
नमन विमल सन्मति गुरु, कुन्थु कनक मुनीश॥5॥

द्वय गुरुओं की पा कृपा, लिखें अनेक विधान।
पार्श्वनाथ श्री साजणी, आ यह लिखा विधान॥6॥

धर्मतीर्थ प्रभु चरण में, पूरा हुआ विधान।
सोलह महीने में हुआ, ग्रन्थ सृजन अभियान॥7॥

जब तक रवि शशि लोक में, तब तक रहे विधान।
'गुप्तिनंदी' के सृजन को, शोध पढ़ें विद्वान॥8॥

॥ इति श्री वृषभाय नमः॥

आरती

(तर्ज– माईन–माईन...)

श्री विधान सहस्रनाम की, आरती करने आयें।
सहस्र अठोत्तर दीपक ले हम, प्रभु की आरती गायें।।
बोलो वृषभनाथ की जय–2 बोलो आदिनाथ की–जय

इक हजार शत आठ नाम ये, सब जिनवर के होते।
सुरपति प्रभु की स्तुति करता, नाम ये मंगल होते।।
जो जन प्रभु के इन नामों को–2, निशदिन जपते जायें।।
सहस्र.. ।।1।।

प्रभु के नाम ये मंत्र–यंत्र हैं, तंत्र रूप हितकारी।
श्रद्धा से नित जाप करें हम, हरे सर्व बीमारी।।
भक्ति से हम प्रभु के दर पे–2, घृत का दीप जलायें।।
सहस्र..।।2।।

अतिशयकारी ये विधान है, सबको मंगलकारी।
गुप्ति गुरुवर कहते सबको, प्रभु भक्ति सुखकारी।।
'आस्था' से हम ये विधान कर–2, सर्वश्रेष्ठ सुख पायें।।
सहस्र..।।3।।

***

सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान

(शंभु छंद)

जिनके वचनामृत जीवों को, सुखकर सब पाप विनाशक हैं।
शरणागत साधक वृन्दों को, उत्तम सुख मोक्ष प्रदायक हैं॥
जो नव पदार्थ व सात तत्त्व, पंचास्तिकाय को बतलायें।
वो त्रिभुवन वन्दित वर्धमान, हम उनकी छवि निशदिन ध्यायें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय नमः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(चौपाई)

मंडल मध्य ओम बैठायें, फिर उसपे व्रत वलय बनायें।
प्रवचन माता अष्ट दलों में, शेष अर्घ फिर बीस दलों में॥
इस विध मंडल वलय बनाये, उसका उत्तम यंत्र बनाये।
पंच प्रभु की पूजा करते, चौबीस जिन का अर्चन करते॥

यंत्रोंपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(शंभु छंद)

अरिहंत सिद्ध सूरि पाठक, साधु का हम आह्वान करें।
त्रयकालिक चौबीस तीर्थंकर, नवजिन का भव्य विधान करें॥
तैंतीस असादना से हमने, हे नाथ ! बहुत से दोष किये।
उन सबका प्रायश्चित्त विधान, करने का मन में भाव लिये॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हं अ सि आ उ सा चतुर्विंशति तीर्थंकर नवदेवता समूह त्रयस्त्रिंदशत्यासादनात्यागायानुष्ठित प्रोषधोद्योतनाः अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छंद)

कनक कुंभ में नदी तीर्थ का, निर्मल जल भर लाये।
सुरत्रित जल की धारा दे हम, श्री जिन भक्ति रचायें॥
सर्वदोष प्रायश्चित्त पूजा, सब दुःख दोष नशाये।
इसमें हम त्रिंशत् चौबीसी, नवदेवों को ध्यायें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक वर्ण हिम शीतल चंदन, कुंकुम संग घिसायें।
श्रेष्ठ कपूर मिलाकर उसमें, प्रभु के चरण लगायें॥ सर्व..॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत धवल रत्न मोती के, अक्षत पुञ्ज बनायें।
भक्ति नृत्य के साथ भक्त हम, प्रभु को नित्य चढ़ायें॥ सर्व..॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल गुलाब मोगरा आदिक, षट् ऋतु सुमन सजायें।
अति सुन्दर पुष्पांजलि ले हम, प्रभु के चरण चढ़ायें॥ सर्व..॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दधि घृत निर्मित षट्रस व्यंजन, छप्पन भोग सजायें।
अति सुन्दर नैवेद्य थाल ले, हम जिन भक्ति रचायें॥ सर्व..॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर रत्नों के सुन्दर, उज्ज्वल दीप जलायें।
दीपों से जिन मन्दिर चमके, मोह तिमिर विनशायें॥ सर्व..॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

महासुंगधित धूप मनोहर, अग्नि पात्र में डालें।
श्री जिन सम्मुख धूप चढ़ा हम, आठों कर्म नशा लें॥ सर्व..॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल आम बिजौरा दाडिम, षट् ऋतु के फल लायें।
मधुर रसीले मोहक फल ले, हम जिन आज चढ़ायें॥
सर्वदोष प्रायश्चित्त पूजा, सब दुःख दोष नशाये।
इसमें हम त्रिंशत् चौबीसी, नवदेवों को ध्यायें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक, आठों द्रव्य सजायें।
उनका उत्तम अर्घ चढ़ा हम, पद अनर्घ को पायें॥ सर्व.. ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा त्रयत्रिंशदत्यासादनात्यागायानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्री जिन वा नवदेव के, पद में शांति धार।
पुष्पांजलि कर जिन चरण, होवे मम उद्धार॥

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मंडल विधान प्रारम्भ

दोहा– कुल तैंतिस आसादना, उससे संचित दोष।
उनको नशने हम करें, यह विधान निर्दोष॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंच महाव्रत के अर्घ (शंभु छंद)

पंचास्तिकाय छह जीव काय, और पंच महाव्रत उत्तम हैं।
वसु प्रवचनमाता नव पदार्थ, उनकी श्रद्धा भी उत्तम है॥
आसादनायें तैंतिस कहीं, इसमें जो पाप कमायें हैं।
उनके क्षय हेतु विधान करें, हम दोष मिटाने आये हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसा महाव्रतस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ! सत्य महाव्रत में हमने, अत्यासादन जो कर डाला।
उसका प्रायश्चित्त प्रभु सन्मुख, हमने कर निज मन धो डाला।।
आसादनायें तैंतिस कहीं, इसमें जो पाप कमायें हैं।
उनके क्षय हेतु विधान करें, हम दोष मिटाने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सत्य महाव्रतस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! अचौर्य महाव्रत में, हमने जो दोष लगाये हैं।
उसकी प्रायश्चित्त पूजा में, हम अर्घ चढ़ाने आये हैं।। आसादनायें.. ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचौर्य महाव्रतस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शील महाव्रत में स्वामी !, नवकोटि से जो दोष लगे।
उसके क्षय हेतु विधान रचा, प्रभु पूजा से सब पाप भगे।। आसादनायें.. ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निःसंग[1] महाव्रत को धरकर, उसकी असादना कर डाली।
उसके प्रायश्चित्त में भगवन्, हम लायें अर्घों की थाली।। आसादनायें.. ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अपरिग्रह महाव्रतस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शंभु छंद)

निज पंच महाव्रत पालन में, हमने जो-जो अपराध करे।
उसका विधान प्रायश्चित्त कर, निज जीवन को निर्बाध करें।।
आसादनायें तैंतिस कहीं, इसमें जो पाप कमायें हैं।
उनके क्षय हेतु विधान करें, हम दोष मिटाने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसादि पंच महाव्रतस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

1. अपरिग्रह

पाँच समिति के अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

चार हाथ धरती शोधन कर, ईर्या समिति पालें।
इसमें दोष लगे जो हमको, इस विधान से टालें।।
सर्व दोष प्रायश्चित्त पूजा, हमने आज रचायी।
तीस चौबीसी नवदेवों की, पूजा है सुखदायी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईर्यासमितेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हितमित प्रिय वचनों के द्वारा, भाषा समिति धारें।
मौन साधना करें सदा हम, वचन दोष परिहारें।। सर्व.. ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाषासमितेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष रहित आहार करें मुनि, समिति ऐषणा पालें।
छियालीस दोष रहित बत्तीसो, अंतराय को टालें।। सर्व.. ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं ऐषणासमितेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि संयम ज्ञानोपकरण वे, जब भी रखें उठायें।
निक्षेपण आदान समिति, तब मुनिवर अपनायें।। सर्व.. ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं आदाननिक्षेपणसमितेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जंतुक निर्दोष भूमि पर, कर मलमूत्र विसर्जन।
मुनि व्युत्सर्ग समिति पालें, करते पाप विसर्जन।। सर्व.. ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्युत्सर्गसमितेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

ईर्या आदि पाँच समितियां, महाव्रतों की रक्षक।
मुनियों को शिवसुख साधक हैं, वसुकर्मों की भक्षक॥
सर्व दोष प्रायश्चित्त पूजा, हमने आज रचायी।
तीस चौबीसी नवदेवों की, पूजा है सुखदायी॥

ॐ ह्रीं अर्हं ईर्यादि पंचसमितेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

तीन गुप्तियों के अर्घ (दोहा)

मनोगुप्ति धारें मुनि, तज रागादिक दोष।
उसके दोष विनाश रहित, पूजें जिन निर्दोष॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मनोगुप्तेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वचनगुप्ति पालन करें, अशुभ वचन परिहार।
मुनि दोषों के नाश हित, भक्ति करें क्षयकार॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं वचनगुप्तेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायगुप्ति मुनि पालते, काय ममत्व निवार।
लग जाये जब दोष वे, भक्ति करें दुःखहार॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं कायगुप्तेः अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (दोहा)

पाँच समितियाँ गुप्ति त्रय, पालें महा मुनीश।
ये वसु प्रवचन मातृका, पहुँचावें जग शीश॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्ट प्रवचन मातृका अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

पंचास्तिकाय के अर्घ (दोहा)

नाथ जीवास्तिकाय की, हुई असादना पाप।
हम पूजें प्रभु आपको, बन जायें निष्पाप॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तिकायस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल अस्तिकाय की, हुई विराधना देव।
वो सब मिथ्या हो प्रभो, हम पूजें जिनदेव॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुद्गलास्तिकायस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मास्तिकाय विशेष की, हुई असादना नाथ !।
उसका प्रायश्चित करें, हम विधान के साथ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मास्तिकायस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधर्मास्तिकाय का, क्या है सच्चा रूप।
जान सकें हम ना कभी, बतलाते जिन रूप॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मास्तिकायस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाश अस्तिकाय का, हमें हुआ न ज्ञान।
की असादना जो सदा, उसका करें विधान॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं आकाशास्तिकायस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (दोहा)

पाँचों अस्तिकाय का, किया नहीं श्रद्धान।
हुई असादना पाप जो, उसका करें विधान॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं पंचास्तिकायस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह जीव निकायों के अर्घ

(चौपाई छन्द)

बहु पृथ्वीकायिक को मारा, इससे बांधा कर्म अपारा।
मिथ्या हो सब दोष हमारे, हम आये जिनवर के द्वारे॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं पृथ्वीकायिकस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकायिक जीवों की हानी, बिन कारण बिखराया पानी।
आगे ये अघ नहीं करेंगे, श्री जिनवर को नित्य भजेंगे॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं अपकायिकस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि काय जीवों को मारा, इससे बाँधा पाप अपारा।
मिथ्या हो यह दोष हमारा, हमने जिनपद को स्वीकारा॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं अग्निकायिकस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुई असादना वायुकाय की, या विराधना वायु जीव की।
हमने दोषों को स्वीकारा, अपनाया जिनवर का द्वारा॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं वायुकायिकस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वनस्पतिकायिक की हानि, कर बैठा जिन ! मैं अज्ञानी।
हुआ पाप से पानी-पानी, इस हेतु जिन पूजा ठानी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं वनस्पतिकायिकस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस कायिक जीवों को मारा, इससे बांधा कर्म अपारा।
जिन सन्मुख सब दोष नशायें, कर जिनेन्द्र अर्चा सुख पायें॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रसकायिकस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (शंभु छंद)

पृथ्वी आदिक षट्काय जीव, उनकी असादना हुई विभो।
हम दोषों की निंदा करते, गर्हा आलोचन सहित प्रभो॥
श्री सर्वदोष प्रायश्चित्तम्, सुविधान जिनेश्वर का सुन्दर।
उसका पूर्णार्घ चढ़ायें हम, सब जिनवर तीर्थंकर अघहर॥

ॐ ह्रीं अर्हं षट् जीवनिकायस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव पदार्थों के अर्घ (गीता छंद)

हे नाथ ! जीव पदार्थ की, मुझसे हुई आसादना।
वह दोष मिथ्या हो प्रभो, इस हित करें आराधना॥
सब दोष प्रायश्चित विधि, सुविधान कर सब दुःख नशें।
हम कर प्रभु पूजा महा, श्री मोक्ष में शाश्वत बसें॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं जीव पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे जिन ! अजीव पदार्थ की, आसादना भी दुःखभरी।
मूर्तिक अचेतन तत्त्व की, आसादना भी दुःखभरी॥ सब... ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं जीव पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव पदार्थ अनेक विध, जाना नहीं परमार्थ से।
हम सब असादन दोष को, काँटे धरम पुरुषार्थ से।।
सब दोष प्रायश्चित विधि, सुविधान कर सब दुःख नशें।
हम कर प्रभु पूजा महा, श्री मोक्ष में शाश्वत बसें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं आस्रव पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव ! बंध पदार्थ भी, बहुविध भयंकर दुःखमयी।
उसकी करी आसादना, बाँधे करम हम निर्दयी।। सब...।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं बंध पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवर पदार्थ अनेक विध, बहु कर्म आस्रव रोकता।
इसका असादन जो करे, वो जीव दुःख को भोगता।। सब...।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं संवर पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु निर्जरा द्वयविध कहें, जो कर्म बेड़ी तोड़ती।
आसादना इसकी हमें, फिर से जगत् में मोड़ती।। सब...।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्जरा पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मोक्षतत्त्व महान् है, वसुकर्म के क्षय से मिले।
इसका असादन जो करें, वो भव भ्रमण में नित रुले।। सब...।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षपदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आत्म को पावन करे, वो पुण्य श्रेष्ठ पदार्थ है।
जिनभक्ति पूजा दान से, मिलता धरम पुरुषार्थ से॥
सब दोष प्रायश्चित विधि, सुविधान कर सब दुःख नशें।
हम कर प्रभु पूजा महा, श्री मोक्ष में शाश्वत बसें॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्य पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादि पाप पदार्थ हैं, रोके जगत् में जीव को।
इसका आसादन भी दुःखद, भटका रहा नित जीव को॥ सब... ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं पाप पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

नव पदार्थ की हमने करी विराधना।
जाने अनजाने होती आसादना॥
प्रभु पूजा से सब दोषों का नाश हो।
दे कर नित पूर्णार्घ मोक्ष में वास हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं जीवादि नव पदार्थस्य अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (अडिल्ल छंद)

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र महान् है।
मोक्ष प्रदाता ये ही सुगुण निधान है॥
सर्वदोष प्रायश्चित्त श्रेष्ठ विधान ये।
इस पूजा से बने भव्य भगवान है॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा। (9, 27 या108 बार जाप करें)।

जयमाला

दोहा– सर्वदोष नाशक यही, प्रायश्चित्त विधान।
नव देवों को हम भजें, तीर्थंकर भगवान।।

(शंभु छंद)

जय अर्हत् सिद्धाचार्य श्रेष्ठ, जय उपाध्याय मुनि संतों की।
जिनधर्म जिनागम चैत्यालय, जय चैत्य सिद्ध अर्हंतों की।।
जय बीस सात सौ तीर्थंकर, त्रिंशत् चौबीसी जिनवर की।
जय–जय पाँचों परमेष्ठी की, ऋषभादि चौबीस जिनवर की।।1।।

जय ढ़ाई द्वीप के सब जिनवर, तीर्थंकर केवली ऋषिवर की।
जय तीन लोक के त्रयकालिक, कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यों की।।
जय–जय त्रिभुवन के चैत्यालय, उनके सब जिनबिम्बों की जय।
जय ढाई द्वीप के सब गणधर, ऋद्धिधारी मुनिवर की जय।।2।।

जिनग्रन्थों में आचार्यों ने, तैंतिस असादना बतलाई।
व्रत समिति गुप्ति पंचास्तिकाय, षट्काय जीव प्रति बतलायी।।
जीवाजीवादिक नव पदार्थ, इनकी असादना दुःखदायी।
श्री जिनवर ने इनमें गर्भित, बहुविध असादना बतलायी।।3।।

जिनदर्शन पूजन सम्बन्धी, बहुविध असादना बतलायी।
गुरुदर्शन भक्ति सेवा की, अविनय असादना दुःखदायी।।
जो ये असादना करता है, वो कष्ट अनेकों पाता है।
व्रत पाकर भी असफल होता, अपना भव भ्रमण बढ़ाता है।।4।।

हम अपने इन सब दोषों का, प्रायश्चित्त करने आये हैं।
सब दोष विनाशक प्रायश्चित्त, पूजा विधान में आये हैं।।

हम दिव्य श्रेष्ठ वसु द्रव्यों से, यह श्रेष्ठ विधान रचाते हैं।
अति उत्तम सुरभित द्रव्य थाल, ध्वज जयमाला संग लाते हैं।।5।।
हम नित्य काल अर्चा पूजा, नित नमन वन्दना करते हैं।
सब दुःख व कर्मों का क्षय हो, नित यही कामना करते हैं।।
कैवल्य लाभ शिव मोक्ष वास, जिनगुण सम्पत हम भी पायें।
है 'गुप्तिनंदी' की आश यही, हम सिद्ध परम पद को पायें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयस्त्रिंशत् अत्यासादनात्यागायनुष्ठित प्रोषधोद्योतनाय श्री त्रिंशत् चौबीसी नवदेवताभ्यो नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भव-भव के सब दोष का, प्रायश्चित्त विधान।
नव कोटी से हम करें, मेंटे कर्म विधान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान प्रशस्ति

दोहा

रत्नत्रय को नित नमूँ, परमेष्ठी भगवान।
देव-शास्त्र-गुरु को नमूँ, चौबीसों भगवान।।1।।
नवदेवों को नित नमूँ, श्री गणधर गुणखान।
पूर्वाचार्यों ने लिखा, प्रायश्चित्त विधान।।2।।
उसके ही आधार से, मिला हमें सद्ज्ञान।
श्री कल्याणालोचना, दोष विनाशक जान।।3।।
कुल तैंतिस आसादना, करवाती अघ बंध।
उनके प्रायश्चित्त का, इसमें किया प्रबंध।।4।।
जब तक रवि शशि लोक में, तब तक रहे विधान।
'गुप्तिनंदी' की भूल को, शोध पढ़ें विद्वान।।5।।

इति अलम्।

विधान की आरती

(तर्ज- माईन-माईन...)

सर्वदोष प्रायश्चित्त विधि का, भव्य विधान रचायें।
तीस चौबीसी नवदेवों की, मंगल आरती गायें॥
बोलो सब जिनवर की जय..2

इस विधान में तीस चौबीसी, नवदेवों की अर्चा।
अपने सर्व पाप क्षय करने, करें निरन्तर अर्चा॥
सब कामों से पहले भविजन-2, सब सिद्धों को ध्यायें॥ तीस.. ॥1॥
बोलो सब जिनवर की जय..

पंच महाव्रत धारण करके, मोक्ष शिखर को पायें।
समिति गुप्तियाँ प्रवचन माता, आठों कर्म नशायें॥
इनका पालन करने वाले-2, निश्चित मुक्ति पायें॥ तीस.. ॥2॥
बोलो सब जिनवर की जय..

सात तत्त्व व नव पदार्थ पर, श्रद्धा उर में धारें।
सम्यक् रत्नत्रय धारी बन, मोह तिमिर परिहारें॥
त्रय गुप्ति से मुक्ति पाने-2, 'आस्था' भक्ति रचाये॥ तीस.. ॥3॥
बोलो सब जिनवर की जय..

***

श्री तीस चौबीसी विधान नामंत्र

(1) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'निर्वाण' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'सागर' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'महासाधु' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'विमलप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'श्रीधर' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'सुदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'अमलप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'उद्धर' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'अंगिर' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'सन्मति' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'सिंधु' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'कुसुमांजलि' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'शिवगण' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'उत्साह' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'ज्ञानेश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'परमेश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'विमलेश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'यशोधर' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'कृष्णमति' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'ज्ञानमति' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'शुद्धमति' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'श्रीभद्र' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'अतिक्रांत' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'शांत' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ निर्वाणादि शांतपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'ऋषभदेव' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'अजितनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'संभवनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'अभिनंदननाथ' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सुमतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'पद्मप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'सुपार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'चंद्रप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सुविधिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'शीतलनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'श्रेयांसनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'वासुपूज्य' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'विमलनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'अनंतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'धर्मनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'शांतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'कुंथुनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'अरहनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'मल्लिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'मुनिसुव्रतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'नमिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'नेमिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'पारसनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'वर्द्धमान' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री ऋषभदेवादि वर्द्धमानपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(3) जम्बूद्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'महापद्म' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'सुरदेव' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सुपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'स्वयंप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सर्वात्मभूत' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'देवपुत्र' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'कुलपुत्र' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'उदंक' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'प्रोष्ठिल' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'जयकीर्ति' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'मुनिसुव्रतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'अर' (अमम) जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'निष्पाप' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'निष्कषाय' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'विपुल' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'निर्मल' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'चित्रगुप्त' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'समाधिगुप्त' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'स्वयंभू' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'अनिवर्तक' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'जय' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'विमल' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'देवपाल' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अनंतवीर्य' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें, यह थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री महापद्म आदि अनंतवीर्यपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(4) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'पंचरुप' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'जिनधर' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सांप्रतिक' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'ऊर्जयंत' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'आधि क्षायिक' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'अभिनंदन' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'रत्नसेन' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'रामेश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'अनंगोज्झित' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'विन्यास' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'अरोष' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'सुविधान' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'प्रदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'कुमार' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'सर्वशैल' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'प्रभंजन' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'सौभाग्य' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'व्रतविंदु' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'सिद्धकर' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'ज्ञानशरीर' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'कल्पद्रुम' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'तीर्थफलेश' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'दिनकर' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'वीरप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें, यह थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री पंचरूपादि वीरप्रभपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(5) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'बालचन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'सुव्रत' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'अग्निसेन' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं अ'नन्दिसेन' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'श्रीदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'व्रतधर' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'सोमचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'धृतिदीर्घ' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'शतायुष्य' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'विवसित' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'श्रेयो' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'विश्रुतजल' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'सिंहसेन' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'उपशांत' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'गुप्तशासन' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'अनंतवीर्य' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'पार्श्व' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'अभिधान' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'मरुदेव' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'श्रीधर' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'शामकण्ठ' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'अग्निप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'अग्निदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'वीरसेन' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री बालचंद्रादि वीरसेनपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6) जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'सिद्धार्थ' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'विमल' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'जयघोष' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'नंदिसेन' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'स्वर्गमंगल' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'वज्राधारी' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'निर्वाण' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'धर्मध्वज' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सिद्धसेन' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'महासेन' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'रविमित्र' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'सत्यसेन' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'चंद्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'महीचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'श्रुतांजन' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'देवसेन' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'सुव्रत' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'जिनेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'सुपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'सुकौशल' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'अनंत' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'विमल' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'अमृतसेन' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अग्निदत्त' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जम्बूद्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री सिद्धार्थादि अग्निदत्तपर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(7) पूर्वधातकी खंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'रत्नप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'अमितनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सम्भवनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'अकलंक' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'चंद्रस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'शुभंकर' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'तत्त्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'सुन्दरस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'पुरन्धर' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'स्वामि देव' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'देवदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'वासवदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'श्रेयोनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'विश्वरूप' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'तपस्तेजो' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'श्रीप्रतिबोध' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'सिद्धार्थदेव' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'संयमजिन' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'विमलनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'देवेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'प्रवरनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'विश्वसेन' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'मेघनंदि' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'त्रिजेतृक' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकी खण्ड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री रत्नप्रभादि त्रिजेतृकनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(8) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'युगादिदेव' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं सिद्धांत' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'महेशनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'परमार्थनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'समुद्धर' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'भूधरनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'उद्योत' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'आर्जव' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'अभयनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'अप्रकंप' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'पद्मनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'पद्मनंदि' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'प्रियंकर' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'सुकृतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'भद्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'मुनिचन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'पंचमुष्टि' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'त्रिमुष्टि' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'गांगिकनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं अर्हं श्री 'गणनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'सर्वांगदेव' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'ब्रह्मेन्द्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'इन्द्रदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'नायकनाथ' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री युगादिदेवादि नायकनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(9) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'सिद्धार्थ' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'सम्यग्गुण' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'श्रीजिनेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'संपन्ननाथ' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सर्वस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'मुनिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'विशिष्टदेव' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'अमरनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'ब्रह्मशांति' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'पर्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं अकामुकदेव' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'ध्याननाथ' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'कल्प' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'संवरनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'स्वास्थ्यनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'आनंदनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'रविप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'चंद्रप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'सुनंद' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'सुकर्णदेव' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'सुकर्मदेव' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'अममदेव' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'पार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'शाश्वतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री सिद्धार्थादि शाश्वतनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(10) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'वज्रस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'उदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सूर्यस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'पुरुषोत्तम' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'शरणस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'अवबोध' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'विक्रम' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'निर्घटिक' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'हरीन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'परित्रेरित' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'निर्वाणसूरि' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'धर्महेतु' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'चतुर्मुख' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'सुकृतेंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'श्रुताम्बु' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'विमलार्क' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'देवप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'धरणेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'सुतीर्थनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'उदयानंद' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'सर्वार्थदेव' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'धार्मिक' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'क्षेत्रस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'हरिचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री वज्रस्वामीआदि हरिचंद्रपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(11) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'अपश्चिम' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'पुष्पदंत' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'अर्हदेव' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'चरित्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सिद्धानंद' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'नंदग' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'पद्मकूप' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'उदयनाभि' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'रुकमेंदु' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'कृपालु' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'प्रौष्ठिल' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'सिद्धेश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'अमृतेंदु' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'स्वामिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'भुवनलिंग' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'सर्वरथ' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'मेघनंद' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'नंदकेश' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'हरिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'अधिष्ठ' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'शांतिकदेव' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'नंदीस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'कुंदपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'विरोचन' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकी खण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री अपश्चिमादि विरोचनपर्यन्त वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(12) पूर्वधातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'प्रवरवीर' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'विजयप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सत्पद' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'महामृगेंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'चिंतामणि' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'अशोकि' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'द्विमृगेंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'उपवासिक' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'पद्मचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'बोधकेन्दु' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'चिंताहिम' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'उत्साहिक' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'अपाशिव' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'देवजल' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'नारिक' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'अनघनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'नागेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'नीलोत्पल' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'अप्रकंप' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'पुरोहित' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'भिंदकनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'पार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'निर्वाच' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'विरोषिक' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्वधातकीखण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री वीरनाथादि विरोषिकनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(13) पश्चिम धातकी खंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'वृषभनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'प्रियमित्र' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'शांतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'सुमतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'आदिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'अतिव्यक्त' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'कलासेन' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'कर्मजित्' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'प्रबुद्ध' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'प्रव्रजित' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'सुधर्म' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'तमोदीप' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'वज्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'बुद्धनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'प्रबंधदेव' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'अतीतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'प्रमुख' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'पल्योपम' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'अकोप' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'निष्ठित' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'मृगनाभि' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'देवेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'पदस्थ' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'शिवनाथ' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपरधातकीखण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री वृषभदेवादि शिवनाथपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(14) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'विश्वचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'कपिल' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'वृषभदेव' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'प्रियतेजो' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'प्रशम' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'विषमांग' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'चारित्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'प्रभादित्य' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'मुंजकेश' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'वीतवास' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'सुराधिप' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'दयानाथ' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'सहस्रभुज' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'जिनसिंह' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'रैवतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'बाहुस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'श्रीमालि' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'अयोगदेव' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'अयोगिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'कामरिपु' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'आरम्भ' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'नेमिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'गर्भज्ञाति' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'एकार्जित' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अपरधातकी खण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री विश्वचंद्रादि एकार्जितपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(15) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'रक्तकेश' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'चक्रहस्त' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'कृतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'परमेश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सुमूर्ति' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'मुक्तिकांत' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'निकेशि' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'प्रशस्त' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'निराहार' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'अमूर्त' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'द्विजनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'श्रेयोगत' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'अरुजनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'देवनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'दयाधिक' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'पुष्पनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'नरनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'प्रतिभूत' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'नागेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'तपोधिक' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'दशानन' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'आरण्यक' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'दशानीक' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'सात्विक' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिमधातकीखण्ड द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री रक्तकेशादि सात्विकपर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(16) पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'सुमेरु' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'जिनकृत' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'कैटभनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'प्रशस्तदायक' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'निर्दमन' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'कुलकर' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'वर्धमान' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'अमृतेंदु' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'संख्यानंद' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'कल्पकृत' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'हरिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।।
12 ॐ ह्रीं 'बहुस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'भार्गव' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'सुभद्रस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'पविपाणि' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'विपोषित' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'ब्रह्मचारि' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'असांक्षिक' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'चारित्रेश' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'पारिणामिक' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'शाश्वतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'निधिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'कौशिक' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'धर्मेश' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी।।
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम धातकीखंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री सुमेरुआदि धर्मेशपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17) पश्चिमधातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'साधित' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'जिनस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'स्तमितेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'अत्यानंद' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'पुष्पोत्फुल्ल' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'मंडित' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'प्रहितदेव' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'मदनसिद्ध' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'हसदिंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'चंद्रपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'अब्जबोध' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'जिनवल्लभ' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'सुविभूतिक' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'कुकुद्भास' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'सुवर्णनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'हरिवासक' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'प्रियमित्र' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'धर्मदेव' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'प्रियरत' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'नंदिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'अश्वानीक' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'पूरबनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'पार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'चित्रहृदय' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिमधातकी खण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री साधितादि चित्रहृदयपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(18) पश्चिम धातकी खंड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'रवीन्दु' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'सौमकुमार' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'पृथ्वीवान्' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'कुलरत्न' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'धर्मनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'सोमजिन' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'वरुणेंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'अभिनंदन' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सर्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'सुदृष्टि' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'शिष्ट' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'धन्य' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'सोमचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'क्षेत्राधीश' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'सदंतिकनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'जयंतदेव' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'तमोरिपु' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'निर्मितदेव' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'कृतपार्श्व' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'बोधिलाभ' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'बहुनंद' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'सुदृष्टि' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'कंकुमनाभ' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'वक्षेश' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ श्री भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम धातकी खण्ड द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री रवीन्दु आदि वक्षेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'दमनेंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'मूर्तस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'विरागस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'प्रलंब' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'पृथ्वीपति' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'चारित्रनिधि' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'अपराजित' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'सुबोधक' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'बुद्धीश' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'वैतालिक' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'त्रिमुष्टि' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'मुनिबोध' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'तीर्थस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'धर्माधीश' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'धरणेश' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'प्रभवदेव' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'अनादिदेव' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'अनादि जिनेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'सर्वतीर्थनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'निरुपमदेव' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'कौमारिक' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'विहारगृह' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'धरणीश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'विकासदेव' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री दमनेंद्रादि विकासदेवपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'जगन्नाथ' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'प्रभासनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं स्वरस्वामी' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'भरतेश' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'दीर्घानन' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'विख्यातकीर्ति' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'अवसानि' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'प्रबोध' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'तपोनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'पावक' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'त्रिपुरेश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'सौगत' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'वासव' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'मनोहर' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'शुभकर्म ईश' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'इष्टसेवित' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'विमलेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'धर्मवास' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'प्रसाद' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'प्रभामृंगाक' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'उज्झितकलंक' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'स्फटिकप्रभा' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'गजेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'ध्यानजय' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री जगन्नाथादि ध्यानजयपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'बसंतध्वज' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'त्रिजयंत' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'त्रिस्तंभ' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'परब्रह्म' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'अबालिश' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'प्रवादी' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'भूमानंद' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'त्रिनयन' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'विद्वान' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'परमात्म प्रसंग' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'भूमीन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'गोस्वामी' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'कल्याणप्रकाशित' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'मंडल' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'महावसू' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'उदयवान' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'दिव्यज्योति' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'प्रबोधेश' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'अभयांक' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'प्रमित' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'दिव्यस्फारक' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'व्रतस्वामी' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'निधान' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'त्रिकर्मा' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्धद्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री वसंतध्वजादि त्रिकर्मापर्यन्त भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'कृतिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'उपविष्ट' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'देवादित्य' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'आस्थानिक' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'प्रचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'वेषिक' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'त्रिभानु' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'ब्रह्म' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'वज्रांग' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'अविरोधी' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'अपाप' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'लोकोत्तर' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'जलधिशेष' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'विद्योत' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'सुमेरु' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'विभावित' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'वत्सल' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'जिनालय' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'तुषार' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'भुवनस्वामी' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'सुकाम' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'देवाधिदेव' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'अकारिम' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'बिम्बित' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्धद्वीपवर्ती ऐरावतक्षेत्रस्थ श्री कृतिनाथादि बिम्बितपर्यन्त भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'शंकर' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'अक्षवास' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'नग्नाधिष' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'नग्नाधिपतीश' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'नष्ट पाखण्ड' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'स्वप्नवेद' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'तपोधन' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'पुष्पकेतु' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'धार्मिक' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'चन्द्रकेतु' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'अनुरक्तज्योति' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'वीतराग' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'उद्योत' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'तमोपेक्ष' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'मधुनाद' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'मरुदेव' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'दमनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'वृषभस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'शिलातन' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'विश्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'महेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'नंद' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'तमोहर' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'ब्रह्मज' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री शंकरादि ब्रह्मजपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(24) पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'यशोधर' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'सुकृतनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'अभयघोष' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'निर्वाण' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'व्रतवास' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'अतिराज' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'अश्वदेव' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'अर्जुन' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'तपश्चन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'शारीरिक' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'महेश' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'सुग्रीव' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'दृढ़प्रहार' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'अंबरीक' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'दयातीत' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'तुम्बर' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'सर्वशील' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'प्रतिजात' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'जितेन्द्रिय' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'तपादित्य' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'रत्नाकर' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'देवेश' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'लांछन' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'सुप्रदेश' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पूर्व पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री यशोधरादि सुप्रदेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(25) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'पद्मचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'रत्नांग' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'अयोगिकेश' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'सर्वार्थि' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'ऋषिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'हरिभद्र' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'गुणाधिप' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'पारत्रिक' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'ब्रह्मनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'मुनीन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'दीपक' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'राजर्षि' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'विशाखदेव' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'अनिन्दित' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'रविस्वामी' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'सोमदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'जयस्वामी' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'मोक्षनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'अग्रभास' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'धनुसंग' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'रोमांचक' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'मुक्तिनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'प्रसिद्धनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'जितेश' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री पद्मचंद्रादि जितेशपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(26) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'सर्वाङ्गस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'पद्माकर' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'प्रभाकर' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'बलनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'योगीश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'सूक्ष्मांग' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'व्रतचलातीत' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'कलंबक' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'परित्याग' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'निषेधिक' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'पापापहारि' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'सुस्वामि' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'मुक्तिचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'अप्राशिक' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'जयचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'मलाधारि' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'सुसंयत' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'मलयसिंधु' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'अक्षधर' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'देवधर' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'देवगण' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'आगमिक' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'विनीत' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'रतानन्द' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरतक्षेत्रस्थ श्री सर्वांगस्वाम्यादि रतानंदपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(27) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'प्रभावक' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'विनतेन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सुभावक' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'दिनकर' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'अगस्त्येजो' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'धनदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'पौरव' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'जिनदत्त' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'पार्श्वनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'मुनिसिंधु' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'आस्तिक' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'भवानीक' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'नृपनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'नारायण' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'प्रशमौक' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'भूपति' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'सुदृष्टि' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'भवभीरू' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'नंदन' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'भार्गव' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'सुवसू' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'परावश' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'वनवासिक' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'भरतेश' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती भरत क्षेत्रस्थ श्री प्रभावकादि भरतेशपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(28) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भूतकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'उपशांत' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'फाल्गुण' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'पूर्वास' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'सौधर्म' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'गौरिक' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'त्रिविक्रम' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'नरसिंह' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'मृगवसु' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सोमेश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'सुधासुर' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'अपापमल्ल' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'विबाध' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'संधिक स्वामी' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'मान्धात्र' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'अश्वतेजो' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'विद्याधर' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'सुलोचन' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'मौन निधि' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'पुण्डरीक' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'चित्रगण' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'मणिरिन्द्र' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'सर्वकाल' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'भूरिश्रवण' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'पुण्यांग' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री उपशांतादि पुण्यांगपर्यंत भूतकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(29) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'गांगेयक' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'नल्लवासव' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'भीमनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'दयाधिक' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सुभद्र' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'स्वामी' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'हनिक' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'नंदिघोष' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'रूपबीज' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'वज्रनाभ' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'संतोष' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'सुधर्म' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'फणीश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'वीरचंद्र' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'मेधानिक' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'स्वच्छनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'कोपक्षय' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'अकाम' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'धर्मधाम' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'सूक्तिसेन' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'क्षेमंकर' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'दयानाथ' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'कीर्तिप' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'शुभंकर' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री गांगेयकादि शुभंकरपर्यंत वर्तमानकालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(30) पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ भविष्यत्कालीन 24 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'अदोषिक' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'वृषभदेव' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'विनयानंद' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'मुनिभारत' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'इन्द्रक' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'चंद्रकेतु' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'ध्वजादित्य' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'वसुबोध' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'मुक्तिगत' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'धर्मबोध' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'देवांग' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'मारीचिक' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'सुजीवन' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'यशोधर' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'गौतम' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'मुनिशुद्धि' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'प्रबोधिक' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'सदानीक' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'चारित्रनाथ' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'शतानंद' जिनेन्द्राय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'वेदार्थ' जिनेन्द्राय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'सुधानीक' जिनेन्द्राय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'ज्योतिर्मुख' जिनेन्द्राय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'सुरार्ध' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (हरिगीता छंद)

तीर्थंकरों के नाम से यह, तीस चौबीसी सजी।
पूर्णार्घ से भजने उन्हें यह, थाल सुन्दर सी सजी॥
यह तीस चौबीसी महामह, हर घड़ी हमको मिले।
संताप पाप विलाप तज हम, सर्व सिद्धों से मिलें॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पश्चिम पुष्करार्द्ध द्वीपवर्ती ऐरावत क्षेत्रस्थ श्री अदोषिकादि सुरार्धनाथपर्यंत भविष्यत्कालीन चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच विदेह में विद्यमान श्री 20 तीर्थंकर पूजा

1 ॐ ह्रीं 'सीमन्धर' जिनेन्द्राय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'युगमंधर' जिनेन्द्राय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'बाहु' जिनेन्द्राय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'सुबाहु' जिनेन्द्राय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सुजात' जिनेन्द्राय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'स्वयंप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'वृषभानन' जिनेन्द्राय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'अनंतवीर्य' जिनेन्द्राय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सूरिप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'विशालकीर्ति' जिनेन्द्राय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'वज्रधर' जिनेन्द्राय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'चंद्रानन' जिनेन्द्राय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'भद्रबाहु' जिनेन्द्राय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'भुजंगम' जिनेन्द्राय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'ईश्वर' जिनेन्द्राय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'नेमिप्रभ' जिनेन्द्राय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'वीरसेन' जिनेन्द्राय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'महाभद्र' जिनेन्द्राय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'देवयश' जिनेन्द्राय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'अजितवीर्य' जिनेन्द्राय नमः।

पूर्णार्घ (जोगीरासा छंद)

ढाई द्वीप में पञ्च मेरु वा, पाँच विदेह बताये।
इन सबमें बत्तीस नगरियाँ, शाश्वत मुक्ति दिलाये।।
वहाँ अधिकतम शत षष्ठोत्तर[1], तीर्थंकर हो सकते।
या कम से कम बीस जिनेश्वर, विद्यमान हो सकते।।
सीमंधर से अजितवीर्य तक, तीर्थंकर सुखकारी।
अर्हत् जिन गणधर आदिक को, ढोक त्रिकाल हमारी।।
शाश्वत पञ्च विदेह क्षेत्र के, बीसों जिन हम ध्यायें।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ा हम, मनहर कीर्त्तन गायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री पंचमहाविदेह सम्बन्धी श्री सीमन्धरादि अजितवीर्यपर्यंत विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***

श्री गणधर वलय विधान नाममंत्र

श्री आदिनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'वृषभसेन' गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'गंग' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'गोयम' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'जिन' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'ईशान' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'स्पृह' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'अनंत' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'अर्हंमन्' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'शेखर' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'सखिर' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'उपदशि' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'नलित' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'लोकेश' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'सिद्ध' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'नेमि' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'पंथा' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'प्रबल' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'मयासि' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'तायासि' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'गुरुदत्ता' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'कुलगति' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'केवल' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'कमल प्रभा' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'सुकेवल' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'कृतमन्य' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'सदेशि' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'विमलप्रभ' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'सकल प्रभ' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'त्रिपुष्टि' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'धरपुष्टि' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'सरोजपुष्टि' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'वत्यमुनि' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'धृतपुष्टि' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'पुष्पकांत' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'हस्तगाम' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'सुरै' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'यस्यो' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'सुरेन्द्र' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'वर्धमान' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'सुधिष्ठिर' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'कंचिद्धर' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'दीक्षित' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'उपागत' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'शृत्वा निर्वेद' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'सुरेन्द्र' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'जिननाथ' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'विभूषण' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'सूरास्तंभ' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'विचित्रकोट' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'चन्द्रप्रभ' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'कृष्ण' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'प्राव्राजी' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'अर्हंमन' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'विजयाखिल' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'संवेग' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'कुलकर' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'सिलाप' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'विशाल' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'बोधत' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'भैरव' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'समकीर्ति' गणधराय नमः।

62 ॐ ह्रीं 'सोमसेन' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'सुवृष्टि' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'रजो' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'अदाउपाद' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'मागधवृंदा' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'महाछेद' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'वज्रतर' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'शीतावृत' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'मारिच्छेद' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'भगवन्' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'शक्ति' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'चिद्रूप' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'निर्मल' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'अरूप' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'त्वांस्तविमि' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'वाल्मीक' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'अनन्तनाथ' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'नंदिता' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'परम पूज्य' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'श्रुत्वाधृत' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'जल्लौ' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'नोमद' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'चामर' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

आदिप्रभू के गणधरों की हम करें शुभ वंदना।
जल-चंदनादि अर्घ से चौरासी गणपति अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्य कारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री वृषभनाथस्य वृषभसेनादिचतुरशीति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'सिंहसेन' गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'चक्री' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'रथनो' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'मंदिरस्थित' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'श्रुत' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'कृतकमल' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'खंगाखेट' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'कच्छि' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'नटसि' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'तत्पुर' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'विक्रम' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'समाधिश' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'उपाद' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'बलधर' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'विवेकसि' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'नामस्थित' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'गौतम' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'गुणग्रण्या' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'राधिप' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'अलोकांत' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'अगम्य' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'विन्दु' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'सर्वज्ञ' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अशोक' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'महर्षि' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'बीज बुद्धि' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'परमावधि' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'गगनगामी' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'सर्वावधि' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'परसि' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'विहाय' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'जीववृंद' गणधराय नमः।

33 ॐ ह्रीं 'अक्षीण' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'ऋजुमति' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'सम्यक्त्व' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'सर्वज्ञपुत्र' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'कृत्प्रदान' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'परोपकार' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'परमोहि' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'लोकवित' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'दयांकुरु' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'चारण' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'पथो' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'गुरु' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'नाथ' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'वर्णभि' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'शुद्धार्थ' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'उपदेसि' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'रतिदान' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'वबंध' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'शत्रव' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'गंग' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'दृष्टिकोटि' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'अयागगन' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'स्थिति' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'जर्जित' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'पूर्णचन्द्र' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'विदारित' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'मत्सदा' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'ख्यांत' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'गंगादत्त' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'द्रौणीन्द्र' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'कालेन्द्र' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'वसालधू' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'निर्घोष' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'सुतंब' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'वेदांग' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'जनकांति' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'शांतयेन' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'उपशांती' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'सुवीर्य' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'सुताजयं' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'चित्र विरीच' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'मृतेश' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'स्वास्ति' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'राजस्थिर' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'भाभृति' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'स्तकथ' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'उदत' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'संजात' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'संयत' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'अपूर्व' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'भास्कर' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'जिनोत्तम' गणधराय नमः।
85 ॐ ह्रीं 'चैत्य पुष्प' गणधराय नमः।
86 ॐ ह्रीं 'मन्यसि' गणधराय नमः।
87 ॐ ह्रीं 'गौरंकिता' गणधराय नमः।
88 ॐ ह्रीं 'प्रसिद्धन्तु' गणधराय नमः।
89 ॐ ह्रीं 'द्रुपद' गणधराय नमः।
90 ॐ ह्रीं 'मृगानत' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री अजित नाथ जिनेश के गणधर गुरु की वंदना।
जल-चंदनादि अर्घ से नवतिगणी की अर्चना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अजितनाथस्य सिंहसेनादि नवति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'चारुदत्त' गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'तत्केश' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'मृगिभूत' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'जघान' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'मनुगति' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'पार्श्व' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'बाण वृष्टि' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'पत उज्वल' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'जिजन' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'संलब्ध' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'चारुषेण' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'किंसूर्य' गणधराय नमः अर्घ्यं।
13 ॐ ह्रीं 'भवनाथ' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'सुभूम' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'दशानन' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'गंगायन' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'उत्पत्ति' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'सर्वमुने' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'सलिल' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'रोहन' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'अरिष्ट नाथ' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'गांगेय' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'द्रोणाचार्य' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अहिन' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'निर्वाण' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'सर्वज्ञ' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'प्रश्नोत्तर' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'श्रोतृ' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'चित्रांग' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'जृंभे' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'सदंत' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'सचक्री' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'तैजस' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'अमूढ़न' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'अमितगति' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'हरिषेण' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'ऋषि' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'तत्पुराण' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'त्रिपुष्टि' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'सदृष्ट' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'पुण्याह' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'अस्मधन' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'श्रृति' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'मन्मथ' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'गुणभद्र' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'प्रश्नोत्तर' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'सदानंद' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'अहमिन्द्र' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'त्रिशेन' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'चित्रघण' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'अवधि' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'संभवन' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'तीर्थनाथ' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'गदाग' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'अधास' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'मदिस' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'गुनग्रणी' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'अगम्य' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'विद्यत' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'पृखिल' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'गुणोज्ञो' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'भूषेण' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'लघु' गणधराय नमः।

64 ॐ ह्रीं 'अभिर' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'श्रेणी' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'गतशोक' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'दिगिस' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'कुलकर' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'इन्द्र' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'योगिनाथ' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'लोकेश' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'अजनन' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'हर्षन्' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'श्री विहार' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'ग्रह' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'दर्शन' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'मुक्तांग' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'मातन्' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'कुसुम' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'दिवाकर' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'पारासुर' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'अतिशय' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'सुलोचन' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'भास्कर' गणधराय नमः।
85 ॐ ह्रीं 'अकुप' गणधराय नमः।
86 ॐ ह्रीं 'कामलता' गणधराय नमः।
87 ॐ ह्रीं 'पुलिन्द' गणधराय नमः।
88 ॐ ह्रीं 'जातस' गणधराय नमः।
89 ॐ ह्रीं 'गतरेष' गणधराय नमः।
90 ॐ ह्रीं 'शील गुप्ति' गणधराय नमः।
91 ॐ ह्रीं 'धर्मस्थित' गणधराय नमः।
92 ॐ ह्रीं 'विष्णु' गणधराय नमः।
93 ॐ ह्रीं 'प्रचण्ड' गणधराय नमः।
94 ॐ ह्रीं 'नागोनाग' गणधराय नमः।
95 ॐ ह्रीं 'अन्यदा' गणधराय नमः।
96 ॐ ह्रीं 'धर्मराज' गणधराय नमः।
97 ॐ ह्रीं 'कोपेश' गणधराय नमः।
98 ॐ ह्रीं 'जिगीश' गणधराय नमः।
99 ॐ ह्रीं 'लौष्ठ' गणधराय नमः।
100 ॐ ह्रीं 'दुश्चरित्र' गणधराय नमः।
101 ॐ ह्रीं 'नागस' गणधराय नमः।
102 ॐ ह्रीं 'कालिति' गणधराय नमः।
103 ॐ ह्रीं 'धर्मनाथ' गणधराय नमः।
104 ॐ ह्रीं 'प्रियभूत' गणधराय नमः।
105 ॐ ह्रीं 'उपीन्द्र' गणधराय नमः।

(गीता छंद)

संभव प्रभू के गणधरों की हम करें शुभ वन्दना।
शत पंच गणधर देव की हम नित करें शुभ अर्चना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री संभवनाथस्य चारुदत्तादि पंचोत्तरशतम् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदन भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'व्रजादि' (परायण) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'श्रीमत्' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'नागत्य' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'कुलगत' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'नानेशा' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'कृतज्ञ' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'गदायण' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'स्मकर्त' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'चक्र' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'संयमी' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'सुकेसि' गणधराय नम: अर्घं।
12 ॐ ह्रीं 'सुकेशि' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'कृतांजलि' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'परीक्षा' गणधराय नमः।

15 ॐ ह्रीं 'गेनाति' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'विक्षात' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'श्रुतसागर' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'आहूत' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'पौरुष' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'पवन' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'तीर्थ सिद्ध' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'यशकीर्ति' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'वचो' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'सबंध' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'सुखावह' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'ककोल' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'हिमांच' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'मायास' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'विचित्रांग' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'सौधर्म' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'तुंग' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'ब्रह्म' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'प्राग्मुख' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'पुष्टर' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'मूदानि' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'भूतकेश' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'मल्लेषणा' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'दयापाल' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'साधु' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'अरधि' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'दानादि' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'पुलाक' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'वलोक' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'मषात' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'यशो' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'समै' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'गंगदत्त' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'गुणसागर' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'धर्मसागर' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'सद्धषेन' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'भूतलेश' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'चक्रेश' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'समारुह्य' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'पुष्पवृक्ष' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'चिन्तागति' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'रस ऋद्धि' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'कलि' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'जगगुरु' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'तटस्थित' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'सुलोचन' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'समाषण' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'वाहिदत्त' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'नागदत्त' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'ज्ञात्वा' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'अवऋद्धि' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'तव ऋद्धि' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'प्रियांग' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'जयस्त' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'प्रीतंदव' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'मनीष' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'सकेत' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'नमस्कार' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'जातनंद' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'निशांत' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'कामांकित' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'कापोत' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'दावान' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'उपागत' गणधराय नमः।

79 ॐ ह्रीं 'भवदेव' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'मार्जार' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'तद्वेश' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'गंधार' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'शशिकर' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'नारद' गणधराय नमः।
85 ॐ ह्रीं 'श्रेणित'गणधराय नमः।
86 ॐ ह्रीं 'प्राज्र्य' गणधराय नमः।
87 ॐ ह्रीं 'वर्मन' गणधराय नमः।
88 ॐ ह्रीं 'श्रीपुर' गणधराय नमः।
89 ॐ ह्रीं 'श्रीपाल' गणधराय नमः।
90 ॐ ह्रीं 'दीक्षांग' गणधराय नमः।
91 ॐ ह्रीं 'तापस' गणधराय नमः।
92 ॐ ह्रीं 'पूरिच'गणधराय नमः।
93 ॐ ह्रीं 'प्रभास' गणधराय नमः।
94 ॐ ह्रीं 'रविषेण' गणधराय नमः।
95 ॐ ह्रीं 'क्रोत्तम'गणधराय नमः।
96 ॐ ह्रीं 'गतोस्ति' गणधराय नमः।
97 ॐ ह्रीं 'प्रियदत्त' गणधराय नमः।
98 ॐ ह्रीं 'दक्षक' गणधराय नमः।
99 ॐ ह्रीं 'हिरण्य' गणधराय नमः।
100 ॐ ह्रीं 'अहानि' गणधराय नमः।
101 ॐ ह्रीं 'तद्यसेन' गणधराय नमः।
102 ॐ ह्रीं 'विभंग' गणधराय नमः।
103 ॐ ह्रीं 'त्वचश' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

चौथे प्रभू के गणधरों की हम करें शुभ वंदना।
जल-चंदनादि से त्रयाधिक शत गुरु की अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री अभिनंदननाथस्य व्रजादि त्रयाधिक शतं गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'तौतक (चमर)' गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'लौकांतिक' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'धर्मासिन' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'संयम' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'मव्रति' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'सोवासू' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'मुलंग' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'फुलिग' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'क्रोधूम' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'महाज्ञान' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'पद्म गणेश' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'रतिवेग' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'भोजनांग' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'विद्युत' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'यक्षान्त' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'अरिष्ट' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'लब्ध कीर्ति' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'मुक्तिनाथ' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'आतमकेश' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'त्रिदिवां' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'वज्रदंत' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'जयकीर्ति' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'अकंपन' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'गुण संयूत' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'प्रीतंकर' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'मुक्तामणि' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'पारावत' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'छिदादत्त' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'कैलास' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'वज्रबाहु' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'गजकुमार' गणधराय नमः।

32 ॐ ह्रीं 'विजय गणेश' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'मल्लिकेत' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'विश्व ध्वज' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'महिपति' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'पुलाक' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'केतभ' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'भवान' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'तीर्थनाथ' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'त्रिपुष' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'ऋद्धि मन' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'सदोदुत' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'जयगुप्ति' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'विभूति' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'कोषांगार' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'मुनिभूषा' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'सिंहजीत' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'हरिवाहन' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'स्वयंभूत' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'वज्रदंत' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'शशिलोच' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'भरत' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'मागध' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'उद्योत' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'प्रभूति' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'नमस्तुभ्य' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'आत्मध्यान' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'स्तुति मुख' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'कोतभंग' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'मेघरथो' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'मयास्ति' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'सरूप' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'विलासे' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'प्रजल्प' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'यथाचल' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'विरतय' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'मन्मथ' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'सिंहासन' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'अप्राग' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'विदांकुरू' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'शक्री' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'गर्भन्वय' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'पर्य' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'उदीरित' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'मतिसागर' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'स्वनाथ' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'मुमुद' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'केशव' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'स्वर्गावतार' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'वर्द्धमान' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'दान' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'मासान्' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'गरिष्ठ' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'मन्दरार्थ' गणधराय नमः।
85 ॐ ह्रीं 'जिनोर्जित' गणधराय नमः।
86 ॐ ह्रीं 'उत्पंक्ति' गणधराय नमः।
87 ॐ ह्रीं 'चलांग' गणधराय नमः।
88 ॐ ह्रीं 'दृढ़कर' गणधराय नमः।
89 ॐ ह्रीं 'विश्वभूति' गणधराय नमः।
90 ॐ ह्रीं 'कुलवंत' गणधराय नमः।
91 ॐ ह्रीं 'यौवन' गणधराय नमः।
92 ॐ ह्रीं 'वितर्क' गणधराय नमः।
93 ॐ ह्रीं 'चक्रेश' गणधराय नमः।
94 ॐ ह्रीं 'क्षेत्रदण्ड' गणधराय नमः।
95 ॐ ह्रीं 'कृत' गणधराय नमः।

96 ॐ ह्रीं 'शिवकांत' गणधराय नमः।
97 ॐ ह्रीं 'शिलास्थित' गणधराय नमः।
98 ॐ ह्रीं 'भुनुन' गणधराय नमः।
99 ॐ ह्रीं 'मनःपर्यय' गणधराय नमः।
100 ॐ ह्रीं 'कोमल' गणधराय नमः।
101 ॐ ह्रीं 'पाप कदाचित्' गणधराय नमः।
102 ॐ ह्रीं 'कष्टोत्तर' गणधराय नमः।
103 ॐ ह्रीं 'छद्मस्थ' गणधराय नमः।
104 ॐ ह्रीं 'धवले' गणधराय नमः।
105 ॐ ह्रीं 'गणपाय' गणधराय नमः।
106 ॐ ह्रीं 'समाध' गणधराय नमः।
107 ॐ ह्रीं 'विजहार' गणधराय नमः।
108 ॐ ह्रीं 'त्रिगुप्ति' गणधराय नमः।
109 ॐ ह्रीं 'मगाजिन' गणधराय नमः।
110 ॐ ह्रीं 'युधाष्ट' गणधराय नमः।
111 ॐ ह्रीं 'गुणी' गणधराय नमः।
112 ॐ ह्रीं 'परमोत्सव' गणधराय नमः।
113 ॐ ह्रीं 'जन्मखग' गणधराय नमः।
114 ॐ ह्रीं 'शत्रुघ्न' गणधराय नमः।
115 ॐ ह्रीं 'सुतीर्थ' गणधराय नमः।
116 ॐ ह्रीं 'निधि' गणधराय नमः।

गीता छन्द

सुमति प्रभु के गणधरों की हम करें शुभ वंदना।
षोडश अधिक शत गणधरों की अर्घ से शुभ अर्चना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री सुमतिनाथस्य चमरादि षोडशाधिक शतं गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

श्री पद्मप्रभ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'वज्र चमर' गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'श्रद' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सत्कोपत' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'धाराधर' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'पुष्पवृष्टि' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'गताधर' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'कन्नक' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'शैल' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'विदृत' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'वृहस्पति' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'विडग' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'कंपन' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'संवाद' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'जगौगन' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'वन्दनार्थ' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'त्रिभुवन' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'वरदत्ता' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'मंत्रीगता' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'दृदश' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'अरुण' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'अरतेय' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'कष्टधकेश' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'संघात' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'कृतमन्य' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'पद्मरथ' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'स्तंभित' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'खड्गाधर' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'पूरतोग' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'समुद्भूगण' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'निक्राशत' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'पदंग' गणधराय नमः।

32 ॐ ह्रीं 'प्रत्यंत' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'सचिऊचत' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'उच्यंत' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'सुकृत पुण्य' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'मोहत' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'स्मदान' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'अकंपन' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'धवलख' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'प्रभास' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'एकांत' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'योगी' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'धूमकेतु' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'पद्मरथ' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'वीरंगद' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'राजेस्थि' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'मंत्री' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'प्राहू' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'ननिवाह' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'अतिर्लाद' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'अचलकीर्ति' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'निखित्सु' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'बलिप्रति' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'दातार' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'सुदर्शन' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'सुखार्णव' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'विष्णु' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'प्रतिसेन' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'उत्कृष्ट' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'गौवर्द्धन' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'वेष्टिप' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'विक्रिया ऋद्धि' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'दीर्घांग' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'द्विपद' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'नायाद' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'सांगि' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'महाघोष' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'रेशि' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'वरेचि' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'चरणनिन्' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'ऋद्धघ्रे' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'उत्साह' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'कुर्वन्' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'पूजत' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'ददाति' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'भयमन्' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'यथांग' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'समास' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'धाम्नि' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'बुद्धिच' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'नीमीन' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'गदतोदित' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'भ्राजिष्णु' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'कटउष्ट' गणधराय नमः।
85 ॐ ह्रीं 'प्रथमादि' गणधराय नमः।
86 ॐ ह्रीं 'गजदंत' गणधराय नमः।
87 ॐ ह्रीं 'गजदत्त' गणधराय नमः।
88 ॐ ह्रीं 'स्तनकुभौ' गणधराय नमः।
89 ॐ ह्रीं 'छद्मस्थ' गणधराय नमः।
90 ॐ ह्रीं 'जल्लो' गणधराय नमः।
91 ॐ ह्रीं 'पद्मोदर' गणधराय नमः।
92 ॐ ह्रीं 'भ्रनान' गणधराय नमः।
93 ॐ ह्रीं 'तप' गणधराय नमः।
94 ॐ ह्रीं 'पुण्योदित' गणधराय नमः।
95 ॐ ह्रीं 'अक्षिन' गणधराय नमः।

96 ॐ ह्रीं 'कुलीच' गणधराय नमः।
97 ॐ ह्रीं 'पटकुल' गणधराय नमः।
98 ॐ ह्रीं 'कोपाग्नि' गणधराय नमः।
99 ॐ ह्रीं 'गान्धर्वा' गणधराय नमः।
100 ॐ ह्रीं 'गोपुर' गणधराय नमः।
101 ॐ ह्रीं 'समाश्रित' गणधराय नमः।
102 ॐ ह्रीं 'गुणसागर' गणधराय नमः।
103 ॐ ह्रीं 'नंदितट' गणधराय नमः।
104 ॐ ह्रीं 'सत्पादय' गणधराय नमः।
105 ॐ ह्रीं 'अशोकित' गणधराय नमः।
106 ॐ ह्रीं 'सुनटि' गणधराय नमः।
107 ॐ ह्रीं 'सफलांग' गणधराय नमः।
108 ॐ ह्रीं 'सुमुन्नत' गणधराय नमः।
109 ॐ ह्रीं 'कुलाविल' गणधराय नमः।
110 ॐ ह्रीं 'विवक्ष' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री पद्मप्रभु के गणधरों की हम करें शुभ वंदना।
अर्घादि ले दश अधिक शत गणधर प्रभू की अर्चना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पद्मनाथस्य वज्रचमरादि दशाधिक शतम् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'बलदत्त' (मार्ग) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'मंडपकोणि' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'लोष्ठकेश' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'जातकेश' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'उज्ज्वलांग' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'सुकेसि' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'सुषेण' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'सुफल' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सुपाक' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'निर्मोहि' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'सीमंधर' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'प्रतिर्यि' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'लोकोत्तर' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'जरदंग' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'क्वयाम' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'वचोमृत' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'स्वनतान' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'क्षमंकर' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'मुद्गत' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'विरचित' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'नाना' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'गुप्ति' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'पालक' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'भोगत' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'क्यस्त' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'क्षपण' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'सुभाक्षत' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'क्षलोक' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'ईक्षित' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'कर्मनाशे' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'ऋषि' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'अक्षेम' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'द्युतिरक्त' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'सुगुप्ति' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'पुष्पेसु' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'चतुर्थि' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'गौतम' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'संयमी' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'धसानन' गणधराय नमः।

40 ॐ ह्रीं 'राजन' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'नलना' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'शतृंघण' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'अनागार' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'सुपार्श्व' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'सत्यस' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'प्राणित' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'वचस्' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'जगत्सुखा' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'अदत' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'यशोधरात' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'देवदत्त' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'चकोरि' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'दशबाह्य' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'निवृत्ति' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'परलोक' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'उत्साह' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'उत्कण्ठ' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'महासाधु' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'सुसाधु' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'क्षिपात' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'सुगति' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'सुमति' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'सुषेनि' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'रुन्नत' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'षट् चत्वारि' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'शेष' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'पधित' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'सुपुष्ट' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'चित्रांग' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'भूति' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'तनाचन' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'उपदेश' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'निर्वाण' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'अवल' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'विधेय' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'विध्रधत' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'विमोही' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'चलात' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'पांडुर' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'जीवन' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'स्वरवांधर' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'स्थैर्य' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'चलाचल' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'सर्वमेव' गणधराय नमः।
85 ॐ ह्रीं 'जलमिन्दु' गणधराय नमः।
86 ॐ ह्रीं 'बुध' गणधराय नमः।
87 ॐ ह्रीं 'समृद्धि' गणधराय नमः।
88 ॐ ह्रीं 'पुंगव' गणधराय नमः।
89 ॐ ह्रीं 'भक्तिभर' गणधराय नमः।
90 ॐ ह्रीं 'अतिरुष्ट' गणधराय नमः।
91 ॐ ह्रीं 'हरख' गणधराय नमः।
92 ॐ ह्रीं 'अशोक' गणधराय नमः।
93 ॐ ह्रीं 'सनृघण' गणधराय नमः।
94 ॐ ह्रीं 'सकलोच' गणधराय नमः।
95 ॐ ह्रीं 'अमूढ्य' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

सुपार्श्व प्रभू के गणधरों की हम करें शुभ वंदना।
जल चंदनादि अर्घ से पंचानवे गुरु अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री सुपार्श्वनाथस्य बलदत्तादि पंचनवति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'दत्तक' (सुवार्द्धि) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'तत्पर' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'मैत्री' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'अरिदमन' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'प्रतिष्ठ' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'सुमान' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'चन्द्रसेन' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'सोपवास' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'व्रतकेश' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'अरिष्ट' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'मुक्तमणि' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'व्यजेष्ट' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'सिद्धान्' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'सुखेन' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'ध्यानात्म' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'अश्रौत' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'निधाय' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'अचिते' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'चन्द्रवेदक' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'लघुभूत' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'गोचर' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'सुभूति' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'दंगि' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अलक्ष' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'मागध' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'गद्भूषण' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'काछ' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'पटकुल' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'दुंदु' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'ववेशि' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'उदोत' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'कुसुंभीन' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'तक्षत' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'कुवित' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'ममोथ' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'मराल' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'उन्नत' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'मणिभूषण' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'नाटक' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'कलिंगा' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'प्रितकर' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'ततंग' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'उनेन्द्र' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'भजोति' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'जिनेन्द्र' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'गणदेव' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'गगणेश' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'विलोक्य' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'दशकुरु' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'चैत्यफल' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'उष्ट' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'संश्रित' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'मद्रि' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'सुमानस' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'स्याम' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'सुदृष्टि' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'खिलेन्द्र' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'दृशीत' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'संस्तेन्द्र' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'धवलात्म' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'प्रथमेश' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'चिन्तागति' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'सगर' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'क्षेमंकर' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'पराय' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'धृतराष्ट्र' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'योगीन्द्र' गणधराय नमः।

68 ॐ ह्रीं 'अगम्य' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'लोकेश' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'विमल' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'मलका' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'ज्ञात्वा' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'लल्लाकित' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'फुल्लत' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'चिन्तातम' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'अरिदत्ता' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'वरोहन' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'सम्पट' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'पूजनाथ' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'कसोद' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'खगेन्द्र' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'मृगेन्द्र' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'दिवनाथ' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'उसम वीर्थ' गणधराय नमः।
85 ॐ ह्रीं 'वेधन' गणधराय नमः।
86 ॐ ह्रीं 'महामुनि' गणधराय नमः।
87 ॐ ह्रीं 'चन्द्रवेधक' गणधराय नमः।
88 ॐ ह्रीं 'लव्वकेश' गणधराय नमः।
89 ॐ ह्रीं 'विद्यावेधि' गणधराय नमः।
90 ॐ ह्रीं 'पार्थिव' गणधराय नमः।
91 ॐ ह्रीं 'अचिमनो' गणधराय नमः।
92 ॐ ह्रीं 'विदांवर' गणधराय नमः।
93 ॐ ह्रीं 'कविन्द्र' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

चन्दाप्रभू के गणधरों की हम करें शुभ अर्चना।
जल चंदनादिक अर्घ से तिरानवें गणी वंदना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री चंद्रप्रभस्य दत्तकादि त्रिनवति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'संघातिक' (वैदर्भादि) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'अस्थि' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'लिलय' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'किरण' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'भास्कर' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'परायण' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'विनयत' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'पुष्पकेतु' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'साश्चर्य' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'गंधमाल' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'चिंतांग' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'चिंतामणि' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'प्रकुट' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'शलोच' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'विदन्त' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'केवलशे' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'गांगये' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'निर्मल' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'गगन गन्तु' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'सूगन्तू' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'दिगाम्बर' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'राजच' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'ललाम केत' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'ऋद्ध केवली' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'केदाच' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'गंगदत्त' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'पवन वेग' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'केश' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'सूस्तंभ' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'जउद' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'दातार' गणधराय नमः।

32 ॐ ह्रीं 'मचक्रुंद' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'वंदित' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'नयनाकित' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'कोकद' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'कटदंत' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'जगीश' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'जगोत' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'वन्दन' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'मधुकिट' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'मधु कैटभ' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'पंकज' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'चैत्य' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'उत्कीर्ण' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'मधुलिंङ्' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'विलोक्य' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'निरोतम' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'घृतकेश' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'प्रश्रृबल' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'गृहदान' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'सहठात्' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'मारुड़' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'जगनेन्द्र' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'दधिवर' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'चेष्टपंजर' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'स्ताचेष्ट' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'भोजनांग' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'मानग' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'गुमान' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'सुनामलांग' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'शुभ शूरान्' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'कोविद' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'पुत्र' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'कोपुत्र' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'सुवर्ण' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'उत्प्रक्ष' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'शांतकुंभ' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'अशोक' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'सुघट' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'सचेतन' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'पवनोदय' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'अत्यून' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'पुष्प' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'पुण्य जीवन' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'उर्द्धलोच' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'गुण गौरव' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'फलौचंत' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'फल उचत' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'परमेश्वर' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'जिनदत्त' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'सुगंध' गणधराय नमः।
82 ॐ ह्रीं 'अक्षत' गणधराय नमः।
83 ॐ ह्रीं 'पुष्पनाभ' गणधराय नमः।
84 ॐ ह्रीं 'उमास्वामी' गणधराय नमः।
85 ॐ ह्रीं 'दिपोदीप्ति' गणधराय नमः।
86 ॐ ह्रीं 'शितजय' गणधराय नमः।
87 ॐ ह्रीं 'निविडांग' गणधराय नमः।
88 ॐ ह्रीं 'मघवान' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री पुष्पदंत जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की अर्चना।
जल चंदनादि अर्घ से अठ्यासी गणधर वंदना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पुष्पदंतस्य संघातिकादि अष्टाशीतिः गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'नरसिंह' (अनगार) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'श्रुतकेश' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'अमर्घ' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'स्पृष्टि' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'रूप केतु' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'चंचलांग' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'सर्वगुण' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'वत्स' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'किरण' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'ब्रह्म' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'निश्चल' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'शुद्धमति' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'स्थिमंधर' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'कदाच' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'अषढ' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'गुणज्ञ' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'द्धूत्यांग' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'शीतलो' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'मुनीश' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'सुंदर' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'पुंगव' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'कोदारक' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'भोगार्थ' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'उत्पल' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'गांभीरो' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'सुपार्णव' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'माद्यायन' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'पुष्ट' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'पथानन' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'अंतरगति' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'रुह्य' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'श्री शांति' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'दिक्षित' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'सनत्' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'सुपुष्ट' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'कनकोदर' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'स्थविष्ट' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'नितब' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'नरेश्वर' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'श्रद्धादि' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'उच्यूत' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'चलाचल' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'नृपाल' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'स्थिमजस' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'चंपायन' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'चंपकेत' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'जिनष्ट' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'सुगुप्ति' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'परिषद्' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'उत्कंठ' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'प्रभ' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'कंकोदर' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'सुकमला' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'पंकेश' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'उग्गतप' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'वरांग' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'केवलतो' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'सुकोमल' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'नभ' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'वरदत्त' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'धनेश्वर' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'मरेचि' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'अरजित' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'कलोच' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'मधुकेट' गणधराय नमः।

66 ॐ ह्रीं 'सुकेत' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'कांतिमणि' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'उष्णोदय' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'उष्णांग' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'मधुकिटभ' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'समलांग' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'इकलाँग' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'भ्रकुट' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'कुरवस' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'मघव' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'मधकेश' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'उर्द्धकेश' गणधराय नमः।
78 ॐ ह्रीं 'षड्केत' गणधराय नमः।
79 ॐ ह्रीं 'श्रेणिक' गणधराय नमः।
80 ॐ ह्रीं 'मयूर' गणधराय नमः।
81 ॐ ह्रीं 'दीपायन' गणधराय नमः।

(गीता -छन्द)

शीतल प्रभु के गणधरों की हम करें शुभ वन्दना।
जल चंदनादि अर्घ से इक्यासी गणधर अर्चना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शीतलनाथस्य अनगारादि एकाशीतिः गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'कौतभ' (सुधर्मादि) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'कायान्' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'कल्प कल्याण' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'सुदर्शन' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'खडानन' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'भूयंग' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'सिंहरथ' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'वंकचूल' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'नील' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'महानील' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'सर्वगुण' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'छापोद' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'मालोक' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'पूरच' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'निष्काल' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'कलिन्द्र' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'विदुर' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'शलाच' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'चन्द्रगति' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'कुंडल' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'कुण्डकेत' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'अनंत' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'अनागत' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अनोपम' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'पूरणभद्र' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'दिक्पाल' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'विस्मोरजत' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'कुभूमि' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'खलोद' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'पुलिंग' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'अर्हनाथ' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'कृष्लोत' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'पिपासात्' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'अंगार' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'रक्तोदय' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'अत्मिक' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'संकल्प' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'पुष्पकेत' गणधराय नमः।

39 ॐ ह्रीं 'परप्रेम' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'निश्चितान' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'चंचकंत' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'विशरीर' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'सुखकर' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'नभकेत' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'कालिंग' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'उपावास' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'कदंबकते' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'महर्द्धिक' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'महामंगल' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'रंगनाथ' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'साकि' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'कोटपाल' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'विलास' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'सुखदास' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'हुच्छगई' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'विषासन' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'वीतशोक' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'क्षेमंकर' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'लंगि' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'इन्द्रकेत' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'नल' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'नललोच' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'भास्कर' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'अवनिपाल' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'स्थिराच' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'स्थिर मंदर' गणधराय नमः।
67 ॐ ह्रीं 'भर' गणधराय नमः।
68 ॐ ह्रीं 'विषमंधरु' गणधराय नमः।
69 ॐ ह्रीं 'दारुद' गणधराय नमः।
70 ॐ ह्रीं 'सूचिपक' गणधराय नमः।
71 ॐ ह्रीं 'पचायन' गणधराय नमः।
72 ॐ ह्रीं 'मिथुलूट' गणधराय नमः।
73 ॐ ह्रीं 'हितकर' गणधराय नमः।
74 ॐ ह्रीं 'हिमाचल' गणधराय नमः।
75 ॐ ह्रीं 'हिमलोच' गणधराय नमः।
76 ॐ ह्रीं 'केशकंध' गणधराय नमः।
77 ॐ ह्रीं 'स्त्याग' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्रेयांस प्रभु के गणधरों की हम करे शुभ वंदना।
जल चंदनादिक से सतत्तर गणधरों की अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं ह्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री श्रेयांसनाथस्य सुधर्मादि सप्तसप्तति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'वरांश' (नदरा) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'योगेश' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सन्मति' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'संभव' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'निर्जित' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'निर्मित' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'निर्विक' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'निष्काल' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सुलोच' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'चित्रकूट' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'सिंह' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'शत्रुघण' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'गणेश' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'अष्टदश' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'अभयकेत' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'विभकर' गणधराय नमः।

17 ॐ ह्रीं 'नरसिंह' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'नृनाथ' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'परमोदय' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'ध्वजाग' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'भदारक' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'केवलोद्भव' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'जवाब्बि' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अवेत' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'भयापह' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'प्रहलाद' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'सर्वज्ञ' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'गणेश' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'नि:कार' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'रजित' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'गरुढ़' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'कमल' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'भिक्षण' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'केशव' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'बलदेव' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'क्लेशानाश' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'विजितान' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'अभिषेण' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'बुधान्' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'बालार्क' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'रति रूप' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'लक्षत' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'भास्वर' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'सुभक्त' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'सातकुंभ' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'केदार' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'खड्ग' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'अगोचर' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'प्रजापति' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'चारण' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'ज्ञानोन' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'उल्लितपो' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'चारूदत्त' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'कम्बकेते' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'चन्द्रदित' गणधराय नमः।
56 ॐ ह्रीं 'उनिम' गणधराय नमः।
57 ॐ ह्रीं 'श्रीगत' गणधराय नमः।
58 ॐ ह्रीं 'भुगत' गणधराय नमः।
59 ॐ ह्रीं 'अष्टामणि' गणधराय नमः।
60 ॐ ह्रीं 'तत्त्वकेवली' गणधराय नमः।
61 ॐ ह्रीं 'जिनोम' गणधराय नमः।
62 ॐ ह्रीं 'गदतो' गणधराय नमः।
63 ॐ ह्रीं 'त्रायश' गणधराय नमः।
64 ॐ ह्रीं 'कृतांत' गणधराय नमः।
65 ॐ ह्रीं 'सिंहरथ' गणधराय नमः।
66 ॐ ह्रीं 'मर्द्दकेलि' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री वासुपूज्य जिनेश के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादि अर्घ से छयासठ गणेश सुअर्चना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री वासुपूज्यस्य नदरादि षट्षष्टि: गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'जय' (आकालोच) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'संयमगार' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'देवगण' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'विसर्जन' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'भवदेव' गणधराय नमः।

6 ॐ ह्रीं 'गोवांग' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'नियास्थि' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'निर्मल' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सिद्धार्थ' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'अमर' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'चिंतागति' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'निरंजन' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'गतारग' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'विपुलाचल' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'सुकबोध' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'सुकमाल' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'अश्रुत पारधी' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'आत्मेन' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'भूषगम' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'वंकटश' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'पांचाल' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'केदार' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'बभान' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'मगध' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'ररांग' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'क्षदर' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'पान्ति पावन' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'भूतनाथ' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'गामिनी' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'क्रोधाकुल' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'शताकुल' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'मन्ये' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'कोलेव' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'कंपन' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'विचक्षण' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'मिश्रीवेग' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'माघनंदी' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'वृद्धिका' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'निरंकुश' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'ध्यषना' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'चात्राग' गणधराय नमः।.
42 ॐ ह्रीं 'अधीशना' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'अतिशय' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'सोमदत्त' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'भवमाभव' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'पार्श्व' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'सद्वज' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'ब्राह्मदत्त' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'पद्म' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'धर्मासन' गणधराय नमः।
51 ॐ ह्रीं 'उग्रतपो' गणधराय नमः।
52 ॐ ह्रीं 'समुन्नत' गणधराय नमः।
53 ॐ ह्रीं 'नकेश' गणधराय नमः।
54 ॐ ह्रीं 'चिरंतिस' गणधराय नमः।
55 ॐ ह्रीं 'उर्जति' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री विमल नाथ जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादि अर्घ ले पचपन गणेश की अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरूवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री विमलनाथस्य जयादि पंच पंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं (सकोदर) 'अरिष्ट' गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'उच्यत' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'सर्वोत्तम' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'उदय' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'कपोल' गणधराय नमः।

6 ॐ ह्रीं 'वेदित' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'अशोक' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'नाना' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'अनंगत नाम' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'अहारिका' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'परम उस्वा' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'उर्जित' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'सत्यंधर' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'दशरथ' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'तत्त्वसार' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'वीरसेन' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'तथोगत' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'अलोल' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'कोष्ठरथ' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'जिनदत्त' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'गुढ़ांग' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'आत्मिक' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'अक्षीण' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अभिकेता' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'योगेश' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'उनोन्नत' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'खगानन' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'वज्रनाभि' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'धर्म केश' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'अनभ' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'जम्म' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'पद्मकोल' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'दिव्यांग' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'वक्र' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'तपनि' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'उच्यत' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'श्रृकांती' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'श्रीषेन' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'सौंदर्य' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'स्वयंवर' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'हरिषेण' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'सुव्रति' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'उगातव' गणधराय नमः।
44 ॐ ह्रीं 'जल्लो' गणधराय नमः।
45 ॐ ह्रीं 'स्थिभुक्ति' गणधराय नमः।
46 ॐ ह्रीं 'मुक्ति मुनि' गणधराय नमः।
47 ॐ ह्रीं 'महात्म' गणधराय नमः।
48 ॐ ह्रीं 'कामवृष्टि' गणधराय नमः।
49 ॐ ह्रीं 'तपोधन' गणधराय नमः।
50 ॐ ह्रीं 'सगौरव' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

अनंत प्रभु के गणधरों की हम करें शुभ वंदना।
जल चंदनादि अर्घ ले पचास गणधर अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री अनन्तनाथस्य अरिष्टादि पंचाशत गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'गुणगुप्ति' (अरिष्टसेन) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'कृत्य' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'विकटि' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'क्षपण' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'निरोत्तम' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'क्षेमंधरा' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'उदाहक' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'तिलोत्तम' गणधराय नमः।

9 ॐ ह्रीं 'सोव्रति' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'कांजिकांत' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'कुंथू' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'मरीच' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'निर्जित' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'सिंहकेत' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'विवेति' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'वकायन' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'कल्याण' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'धृव' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'काकोदर' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'आलोच' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'व्रत शुद्धयथ' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'अगोचर' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'उभखेट' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'अष्ट भुज' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'धर्मासन' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'धर्मातन' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'व्युत्सर्ग' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'सुदेशन' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'दधिति' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'विचयाक्षे' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'स्नातक' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'बुधुतम' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'अभ्यंतर' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'गरुड़' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'शुभकर' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'अपि' गणधराय नमः।
37 ॐ ह्रीं 'धर्मधार' गणधराय नमः।
38 ॐ ह्रीं 'ध्रुव' गणधराय नमः।
39 ॐ ह्रीं 'कृष्टतप' गणधराय नमः।
40 ॐ ह्रीं 'विर्जित' गणधराय नमः।
41 ॐ ह्रीं 'बुद्धनाथ' गणधराय नमः।
42 ॐ ह्रीं 'स्थिरआशय' गणधराय नमः।
43 ॐ ह्रीं 'रजायते' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री धर्मनाथ जिनेश के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादिक अर्घ से तियालिस गणधर अर्चना॥
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा॥

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री धर्मनाथस्य अरिष्टसेनादि त्रिचत्वारिंशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं (मोहनाश) 'चक्रायुध' गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'श्रृंगनाथ' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'श्री सिद्धनाथ' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'अदिते गुरु' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'अक्षत' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'दुर्योधन' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'तपोधन' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'निर्मलोत' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'पांडु' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'शांति' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'भरत' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'नवाक्ष' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'सिंह' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'कंठ' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'सुकंठ' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'प्रह्लाद' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'दयोखिल' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'भुवन' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'पलायन' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'विस्वाभर' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'विश्वलोक' गणधराय नमः।

22 ॐ ह्रीं 'खिन्नत' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'क्षतकाल' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'लिगन' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'बलिभद्र' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'हम्गत' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'वकानन' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'उत्पन्न' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'अनंत केवल' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'संश्रृत' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'संबल' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'कालिद' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'उग्गतवा' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'मुक्तामणि' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'सम्यग्राथ' गणधराय नमः।
36 ॐ ह्रीं 'जिनेन्द्र केवल' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की वन्दना।
जल चन्दनादिक अर्घ से छत्तीस गणधर अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री शांतिनाथस्य चक्रायुधादि षट्त्रिंशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'अमृतसेन' (स्वयंभू) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'रत्नप्रभा' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'अमितनाग' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं अर्हं 'श्री संभव' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'अमलनाम' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'शुभकर' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'तत्त्वनाथ' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'रज्यासि' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'पुरन्दर' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'देवदत्त' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'वासपदत' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'विश्वरुप' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'तपस्तेज' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'प्रतिबोध' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'सिद्धार्थ' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'संयम' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'अमलगण' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'देवेन्द्र' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'प्रवरकल' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'समभूप' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'मज्ञि' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'कुवेर' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'नित्तुंग' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'मिवनंदि' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'निर्मोही' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'श्रवण' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'समोद्धर' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'अरण्य' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'महेश' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'पयाकुत' गणधराय नमः।
31 ॐ ह्रीं 'नरोपम' गणधराय नमः।
32 ॐ ह्रीं 'निर्मित' गणधराय नमः।
33 ॐ ह्रीं 'अग्निदत्त' गणधराय नमः।
34 ॐ ह्रीं 'उद्धलांग' गणधराय नमः।
35 ॐ ह्रीं 'अर्जवजीन' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादिक अर्घ ले पैंतीस गणधर अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री कुन्थुनाथस्य स्वयंभ्वादि पंचत्रिंशत् गणधरेभ्यों पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'कुंथु' (सुषेण) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'जलोद' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'दुर्लभ' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'मतिच' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'तानचेत्' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'योगेन्द्र' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'लब्धकांति' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'आगोचर' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'वृषकेत' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'नवरंग' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'संभ' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'परोपदेशी' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'करोत' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'जिनदेव' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'अर्हनाथ' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'तपनी' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'मुक्तिदा' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'शिवगंधर्व' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'परमोजत' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'चलन' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'चिद्रूप' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'हितकर' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'अत्रुद्ध' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'हितकर' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'स्थिर भूत' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'रक्तगण' गणधराय नमः।
27 ॐ ह्रीं 'प्रतंग' गणधराय नमः।
28 ॐ ह्रीं 'तिलोक' गणधराय नमः।
29 ॐ ह्रीं 'भूयंग' गणधराय नमः।
30 ॐ ह्रीं 'शुद्धांग' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री अरहनाथ जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादिक अर्घ से त्रिंशत गणेन्द्र सुअर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं झ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री अरहनाथस्य कुंथ्वादि त्रिंशत् गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'विशाखाचार्य' (काकादर) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'प्रबोध' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'नंदन' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'अधंक' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'करनातिच' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'चित्रकुवार' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'सद्भट' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'नवत' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'रत्नसार' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'प्रमत्त' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'मानकेत' गणधराय नमः।
12 ॐ ह्रीं 'उत्पात' गणधराय नमः।
13 ॐ ह्रीं 'भुजबल' गणधराय नमः।
14 ॐ ह्रीं 'युद्धकेत' गणधराय नमः।
15 ॐ ह्रीं 'मघवान' गणधराय नमः।
16 ॐ ह्रीं 'मोहि' गणधराय नमः।
17 ॐ ह्रीं 'शिवसंग' गणधराय नमः।
18 ॐ ह्रीं 'बुभुक्षा' गणधराय नमः।
19 ॐ ह्रीं 'भव के' गणधराय नमः।
20 ॐ ह्रीं 'भोगता' गणधराय नमः।
21 ॐ ह्रीं 'मनोरथ' गणधराय नमः।
22 ॐ ह्रीं 'अखिल' गणधराय नमः।
23 ॐ ह्रीं 'निष्कषाय' गणधराय नमः।
24 ॐ ह्रीं 'केत' गणधराय नमः।
25 ॐ ह्रीं 'सन्मुख' गणधराय नमः।
26 ॐ ह्रीं 'महार्णव' गणधराय नमः।

27 ॐ ह्रीं 'अहमिन्द्र' गणधराय नमः।

28 ॐ ह्रीं 'उच्यत' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादिक अर्घ से अठबीस गणधर अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मल्लिनाथस्य विशाखाचार्यादि अष्टाविंशति गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'मल्लि' (धारिण) गणधराय नमः।

2 ॐ ह्रीं 'जगतवंद्य' गणधराय नमः।

3 ॐ ह्रीं 'प्रभेस' गणधराय नमः।

4 ॐ ह्रीं 'श्रुक्रोध' गणधराय नमः।

5 ॐ ह्रीं 'अनंतगति' गणधराय नमः।

6 ॐ ह्रीं 'सालक' गणधराय नमः।

7 ॐ ह्रीं 'द्रोपद' गणधराय नमः।

8 ॐ ह्रीं 'बुध' गणधराय नमः।

9 ॐ ह्रीं 'तथांगिना' गणधराय नमः।

10 ॐ ह्रीं 'पोद' गणधराय नमः।

11 ॐ ह्रीं 'रविषेण' गणधराय नमः।

12 ॐ ह्रीं 'कुलकेशे' गणधराय नमः।

13 ॐ ह्रीं 'अमर' गणधराय नमः।

14 ॐ ह्रीं 'निष्पाप' गणधराय नमः।

15 ॐ ह्रीं 'मतिश्रुति' गणधराय नमः।

16 ॐ ह्रीं 'द्वितीयकर' गणधराय नमः।

17 ॐ ह्रीं 'धारण' गणधराय नमः।

18 ॐ ह्रीं 'सूरज' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

जिनदेव मुनिसुव्रत प्रभू के गणधरों की वंदना।
गणधर अठारह की करूँ पूर्णार्घ से मैं अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री मुनि सुव्रतनाथस्य मल्लि आदि अष्टादश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'सौम'(धर्म्मार्क) गणधराय नमः।

2 ॐ ह्रीं 'जम्बुक्ष' गणधराय नमः।

3 ॐ ह्रीं 'केवली' गणधराय नमः।

4 ॐ ह्रीं 'श्रुत केवली' गणधराय नमः।

5 ॐ ह्रीं 'नोविण्णु' गणधराय नमः।

6 ॐ ह्रीं 'गजानन' गणधराय नमः।

7 ॐ ह्रीं 'आरोधक' गणधराय नमः।

8 ॐ ह्रीं 'जगत्पती' गणधराय नमः।

9 ॐ ह्रीं 'चिंतागति' गणधराय नमः।

10 ॐ ह्रीं 'अनेन' गणधराय नमः।

11 ॐ ह्रीं 'नरलोक' गणधराय नमः।

12 ॐ ह्रीं 'श्रेणी' गणधराय नमः।

13 ॐ ह्रीं 'मुक्तांग' गणधराय नमः।

14 ॐ ह्रीं 'अनुभूत' गणधराय नमः।

15 ॐ ह्रीं 'चारुषन' गणधराय नमः।

16 ॐ ह्रीं 'ऋजम्बू' गणधराय नमः।

17 ॐ ह्रीं 'जरतू' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

जिनदेव श्री नमिनाथ के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादिक अर्घ से सतरह गुरु की अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नमिनाथस्य सोमादि सप्तदश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमीनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'वरदत्त' (पूर्वहंस) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'खड्गानन' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'मनगत' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'दंत' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सकोमल' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'मणिदीप' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'मदुर्य' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'मेघनाथ' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'सुंदरतल' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'कदम्बक' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'ज्येष्ठ' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादिक अर्घ से ग्यारह गुरु की अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री नेमिनाथस्य वरदत्तादि एकादश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'स्वयंभू' (पृथुकेथु) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'हलि' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'नतबल' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'नीलंगन' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'महानील' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'पुरुषोत्तम' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'भृनान' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'सम्यक' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'देवगने' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'ज्ञान गोचर' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादिक अर्घ से दस गणधरों की अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री पार्श्वनाथस्य स्वयंभवादि दश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान के गणधर

1 ॐ ह्रीं 'गौतम' (इन्द्रभूति) गणधराय नमः।
2 ॐ ह्रीं 'नागोत्तम' गणधराय नमः।
3 ॐ ह्रीं 'महादत्त' गणधराय नमः।
4 ॐ ह्रीं 'सुदत्तकेश' गणधराय नमः।
5 ॐ ह्रीं 'सकोमल' गणधराय नमः।
6 ॐ ह्रीं 'बहुदत्त' गणधराय नमः।
7 ॐ ह्रीं 'उर्ध्वलांग' गणधराय नमः।
8 ॐ ह्रीं 'मददत्त' गणधराय नमः।
9 ॐ ह्रीं 'गौतम' गणधराय नमः।
10 ॐ ह्रीं 'सरोत्तम' गणधराय नमः।
11 ॐ ह्रीं 'निरोत्तम' गणधराय नमः।

(गीता छन्द)

श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र के गणधर प्रभू की वंदना।
जल चंदनादिक अर्घ से ग्यारह गुरू की अर्चना।।
ऋद्धि वरें सिद्धि प्रदाता सौख्यकारी गुरुवरा।
'राजश्री' को मुक्ति का आशीष दे दो ऋषीवरा।।

ॐ ह्रीं इवीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः श्री महावीर नाथस्य इन्द्रभूत्यादि एकादश गणधरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***

श्री विद्याप्राप्ति विधान मंत्र

1 ॐ ह्रीं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोज प्रभवायै नमः।
2 ॐ ह्रीं द्वादशांगिन्यै नमः। 3 ॐ ह्रीं सर्वभाषायै नमः।
4 ॐ ह्रीं वाण्यै नम: नमः। 5 ॐ ह्रीं शारदायै नमः।
6 ॐ ह्रीं गिरे नमः। 7 ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः।
8 ॐ ह्रीं ब्राह्मयै नमः। 9 ॐ ह्रीं वाग्देवतायै नमः।
10 ॐ ह्रीं देव्यै नमः। 11 ॐ ह्रीं भारत्यै नमः।
12 ॐ ह्रीं श्रीनिवासिन्यै नमः। 13 ॐ ह्रीं आचार सूत्र कृतपादायै नमः।
14 ॐ ह्रीं स्थान समवायांगजंघायै नमः।
15 ॐ ह्रीं व्याख्या प्रज्ञप्ति-ज्ञातृ-धर्मकथांग चारूरूभासुरायै नमः।
16 ॐ ह्रीं उपासकांग सन्मध्यायै नमः। 17 ॐ ह्रीं अंतकृद्दशांग नाभिकायै नमः।
18 ॐ ह्रीं अनुत्तरोपत्तिदशप्रश्नव्याकरण-स्तन्यै नमः।
19 ॐ ह्रीं विपाकसूत्र सद्वक्षसे नमः। 20 ॐ ह्रीं दृष्विादांग अंकधरायै नमः।
21 ॐ ह्रीं परिकर्म महासूत्रविपुलांस विराजितायै नमः।
22 ॐ ह्रीं चन्द्रमार्तंड प्रज्ञप्ति भास्वद्बाहुसुबल्लयै नमः।
23 ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसागर प्रज्ञप्ति सत्करायै नमः।
24 ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्ति विभ्राजत्पंचशाखा मनोहरायै नमः।
25 ॐ ह्रीं पूर्वानुयोगवदनायै नमः। 26 ॐ ह्रीं पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नमः।
27 ॐ ह्रीं उत्पादपूर्व सन्नासायै नमः। 28 ॐ ह्रीं अग्रायणीयदंतायै नमः।
29 ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवाद-अस्तिनास्ति प्रवादोष्ठायै नमः।
30 ॐ ह्रीं ज्ञान प्रवाद कपोलायै नमः। 31 ॐ ह्रीं सत्यप्रवादरसनायै नमः।
32 ॐ ह्रीं आत्मप्रवाद महाहनवे नमः। 33 ॐ ह्रीं कर्मप्रवाद सत्तालवे नमः।
34 ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानललाट्यै नमः।
35 ॐ ह्रीं विद्यानुवाद-कल्याण नाम धेय सुलोचनायै नमः।
36 ॐ ह्रीं प्राणावाय क्रिया विशाल पूर्व भ्रूधनुर्लतायै नमः।
37 ॐ ह्रीं लोकबिंदु महासार चूलिका श्रवणद्वयायै नमः।
38 ॐ ह्रीं स्थलगाख्यलसच्छीर्षायै नमः।
39 ॐ ह्रीं जलगाख्यमहाकचायै नमः। 40 ॐ ह्रीं मायागतसुलावण्यायै नमः।
41 ॐ ह्रीं रूपगाख्यसुरूपिण्यै नमः। 42 ॐ ह्रीं आकाशगत सौंदर्यायै नमः।
43 ॐ ह्रीं कलापि सुवाहनायै नमः। 44 ॐ ह्रीं निश्चयव्यहारदृड्नूपुरायै नमः।
45 ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः। 46 ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः।
47 ॐ ह्रीं महोज्ज्वलायै नमः। 48 ॐ ह्रीं नैगमामोघकेयूरायै नमः।
49 ॐ ह्रीं संग्रहानघचोलकायै नमः। 50 ॐ ह्रीं व्यवहारोदघकटकायै नमः।
51 ॐ ह्रीं ऋजुसूत्रसुकंकणायै नमः। 52 ॐ ह्रीं शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नमः।
53 ॐ ह्रीं समभिरूढ़ महांकुशायै नमः। 54 ॐ ह्रीं एवंभूतसन्मुद्रायै नमः।

55 ॐ ह्रीं दशधर्ममहाम्बरायै नमः। 56 ॐ ह्रीं जपमालालसद्हस्तायै नमः।
57 ॐ ह्रीं पुस्तकांकितसत्करायै नमः। 58 ॐ ह्रीं नयप्रमाणताटंकायै नमः।
59 ॐ ह्रीं प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः। 60 ॐ ह्रीं केवलज्ञानमुकुटायै नमः।
61 ॐ ह्रीं शुक्लध्यान विशेषकायै नमः। 62 ॐ ह्रीं स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नमः।
63 ॐ ह्रीं चिदुपादेयभाषिण्यै नमः।
64 ॐ ह्रीं अनेकांतात्मकानंदपद्मासन निवासिन्यै नमः।
65 ॐ ह्रीं सप्तभंगीसितच्छत्रायै नमः। 66 ॐ ह्रीं नयषट्कप्रदीपिकायै नमः।
67 ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिक नयानूनपर्यायार्थिक चामरायै नमः।
68 ॐ ह्रीं कैवल्यकामिन्यै नमः। 69 ॐ ह्रीं ज्योतिर्मय्यै नमः।
70 ॐ ह्रीं वाङ्मयरूपिण्यै नमः। 71 ॐ ह्रीं पूर्वापराविरुद्धायै नमः।
72 ॐ ह्रीं गवे नमः। 73 ॐ ह्रीं श्रुत्यै नमः।
74 ॐ ह्रीं देवाधिदेवतायै नमः। 75 ॐ ह्रीं त्रिलोकमंगलायै नमः।
76 ॐ ह्रीं भवशरण्यायै नमः। 77 ॐ ह्रीं सर्ववंदितायै नमः।
78 ॐ ह्रीं बोधमूर्तये नमः। 79 ॐ ह्रीं शब्दमूर्तये नमः।
80 ॐ ह्रीं चिदानंदैक रूपिण्यै नमः। 81 ॐ ह्रीं जिनवाण्यै नमः।
82 ॐ ह्रीं वरदायै नमः। 83 ॐ ह्रीं नित्यायै नमः।
84 ॐ ह्रीं भुक्तिमुक्ति फलप्रदायै नमः। 85 ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः।
86 ॐ ह्रीं विश्वरूपायै नमः। 87 ॐ ह्रीं शब्दब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः।
88 ॐ ह्रीं शुभंकर्यै नमः। 89 ॐ ह्रीं हितंकर्यै नमः।
90 ॐ ह्रीं श्रीकर्यै नमः। 91 ॐ ह्रीं शंकर्यै नमः।
92 ॐ ह्रीं सत्यै नमः। 93 ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयंकर्यै नमः।
94 ॐ ह्रीं शिवंकर्यै नमः। 95 ॐ ह्रीं महेश्वर्यै नमः।
96 ॐ ह्रीं विद्यायै नमः। 97 ॐ ह्रीं दिव्यध्वन्यै नमः।
98 ॐ ह्रीं मात्रे नमः। 99 ॐ ह्रीं विद्वदाल्हाददायिन्यै नमः।
100 ॐ ह्रीं कलायै नमः। 101 ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः।
102 ॐ ह्रीं दीप्तायै नमः। 103 ॐ ह्रीं सर्वशोक प्रणाशिन्यै नमः।
104 ॐ ह्रीं महर्षिधारिण्यै नमः। 105 ॐ ह्रीं पूतायै नमः।
106 ॐ ह्रीं गणाधीशावतारितायै नमः। 107 ॐ ह्रीं ब्रह्मलोक स्थिरावासायै नमः।
108 ॐ ह्रीं द्वादशम्नाय देवतायै नमः।

पूर्णार्घ *(शंभु छन्द)*

जो अष्टोत्तर शत नाम तेरे, भक्ति से प्रतिदिन गाता है।
वो शास्त्र विशारद महाकवि, प्रवचन में पटुता पाता है।।
पूर्णायु यश उत्तम वैभव, धन-धान्य संपदायें पाये।
श्री ब्रह्म सूरि मुनि कहते हैं, वो मुनि श्रुत केवलि बन जाये।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरमुखकमलविनिर्गत द्वादशांगमयी सरस्वतीदेव्यै पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता (चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया॥
दिव्य देशना महान् है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणधर भगवान का अर्घ (नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया॥
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनसेनाचार्य (गीता छंद)

आजन्म नग्न महाश्रमण, सिद्धांतविद् आचार्य हैं।
आचार्य श्री जिनसेन वे, वे ही महा आचार्य हैं॥
'श्री धवल' पर 'जयधवल' रच, गुरु[1] की कृति को पूर्ण कर।
'आदिपुराण' सुग्रन्थ रच, जग को दिया श्रुत सौख्यकर॥
'जिनसहस्रनाम' सुपाठ भी, उनकी अनोखी है कृति।
हम अर्घ दे गुरुराज को, पा जायेंगे जिन आकृति॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री जयधवल, आदिपुराण–पार्श्वभ्युदय श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्रकर्त्ता आजन्म दिगम्बर सिद्धांतविद् श्री जिनसेनाचार्य गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. श्री वीरसेनाचार्य, 2. सागर।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर॥
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्॥

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखायें॥
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलायें।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

***

आचार्यश्री गुप्तिनंदी पूजा

स्थापना (गीता छंद)

छत्तीस गुणधारी गुरु, पालन करें त्रय गुप्तियाँ।
गुरु गुप्तिनंदी धर्म की, नित बाँटते हैं सूक्तियाँ॥
ऐसे गुरु की अर्चना, सौभाग्य से हमको मिले।
आह्वान करने आपका, हम पुष्प ले आये खिले॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अडिल्ल छंद (तर्ज- धीरे-धीरे बोल..)

पत्र युक्त जल कुंभ सजाकर ला रहे।
गुरु के चरण धुलाकर सब हर्षा रहे॥
गुरु की अर्चा जन्म-जरा-मृत क्षय करें।
गुरुवर के चरणों में हम वंदन करें॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

गुरु चरणों में चंदन से लेपन करें।
गुरु चरणों की रज ही सब मंगल करें॥
झूम-झूम कर गुरु को गंध चढ़ा रहे।
मंगल वाद्य बजाकर पुण्य बढ़ा रहे॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

क्षायिक पदवी पाने जो मुनिव्रत धरें।
अक्षत पुंज चढ़ा हम अक्षय पद वरें॥
मन-वच-तन से करते हैं आराधना।
गुरु पूजा से पायेंगे सुख साधना॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

निर्गुंडी उत्पल गुलाब जूही सजा।
गुरु चरणों में पुष्पवृष्टि बाजे बजा।।
जिनवाणी घर-घर गुरुवर पहुँचा रहे।
सच्चे सुख की राह हमें बतला रहे।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

गुरु गुण गायें भक्ति रस में डूबकर।
अर्पित गुरु को आज मिठाई थाल भर।।
गुरु के दर पे आनंदामृत मिल रहा।
मुरझाया उपवन गुरुवर से खिल रहा।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

रत्नमयी दीपों से गुरु की आरती।
गुरु की वाणी भव सागर से तारती।।
आर्षमार्ग की रक्षा करने गुरु चले।
गुरु भक्ति से आगम का दीपक जले।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

धूप सुगंधित अग्नि पात्र में खे रहे।
कर्म नशाने नाम गुरु का ले रहे।।
तीर्थ बने गुरुवर के चरण जहाँ पड़े।
गुरु भक्ति में सदा रहेंगे हम खड़े।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

केला चीकू श्रीफल दाड़िम ला रहे।
फल के गुच्छ चढ़ाने चरणन् आ रहे।।
हरे-भरे फल से करते हैं अर्चना।
कवि हृदय गुरुवर की करते वंदना।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

श्री गुरुवर छत्तीस मूलगुण को धरें।
अर्घ चढ़ा हम भी उनके सद्गुण वरें॥
प्रज्ञायोगी गुरुवर की पूजा करें।
गुप्तिनंदी त्रय गुप्ति पालन करें॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

दोहा- **शांति पथ पर चल रहे, गुप्तिनंदी गुरुराज।**
त्रय धारा जल से करें, पाने सुख का राज॥ शांतये शांतिधारा.....

दोहा- **निर्गुंडी उत्पल जुही, कमल केवड़ा फूल।**
अर्पित श्री गुरु चरण में, पाने चरणन् धूल॥ दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

सखी छंद

गुरु की जयमाला गायें, सुन्दर सी थाल सजायें।
नाना द्रव्यों की थाली, ध्वज श्रीफल नेवज वाली॥

(शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी का जयकार कीजिये।
गुरु नाम मंत्र का सदैव जाप कीजिये॥
कुंथु गुरु के लाल का सुंदर सा प्यारा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥1॥

है जन्म भूमि आपकी भोपाल नगरिया।
नगरी को छोड़ आप चले मोक्ष डगरिया॥
माता-पिता ने आपका राजेन्द्र रखा नाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥2॥

कुंथु गुरु के पास में ली आपने दीक्षा।
गुरु कनकनन्दी जी से ली है ज्ञान की शिक्षा॥
मुनि से बने आचार्य आप गोम्मटेश[1] धाम।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥3॥

पूजन भजन विधान कवितायें बनायें।
जिनभक्त को जिनभक्ति में गुरुदेव लगायें॥
हर एक विषय का विशेष आपको है ज्ञान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥4॥

सब कर्म–कष्ट–रोग हरे रत्नत्रय विधान।
धन–धान्य से पूरण करें गणधर वलय विधान॥
सुख–शांति विद्या ऋद्धि देवें चालीसा प्रधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥5॥

श्री विजय पताका त्रिकाल चौबीसी विधान।
श्री तीस चौबीसी नवग्रह शांति का विधान।
जिन पंचकल्याणक व विद्या प्राप्ति का विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥6॥

है सर्वकार्य सिद्धी व श्रुतदेवि का विधान।
विधान सहस्रनाम है कविता में सावधान॥
इत्यादि गुरुदेव ने लिखे सरल विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥7॥

धन धान्य से पूरण करें गुरुदेव का विधान।
हर भक्त के दुःख कष्ट हरे आपका विधान॥
सद्ज्ञान ऋद्धि–सिद्धि देवें आपका विधान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥8॥

गुरुवर जहाँ चरण धरें वो भूमि तीर्थ है।
गुरुवर की प्रेरणा से बना धर्म तीर्थ है॥

1. गोम्मटगिरी, इन्दौर।

भक्ति से 'आस्था' करें गुरुदेव का गुणगान।
गुरुदेव गुप्तिनंदी को प्रणाम है प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, महाकवि, ज्ञान दिवाकर, वात्सल्य सिंधु, व्याख्यान वाचस्पति, धर्मक्रांति सूर्य, अंजनगिरी तीर्थ उद्धारक, श्रावक संस्कार उन्नायक, धर्मतीर्थ प्रणेता, जैनधर्म संरक्षक, विधान मार्तण्ड, ज्ञानविद् आचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रद्धा से 'आस्था' नमे, जोड़े दोनों हाथ।
गुरु चरणों में विनय से, सदा झुकायें माथ॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आरती (तर्ज - एके मोक्ष दरवाजे तंबु...)

कंचन थाल में घृत के जगमग दीप जले।
गुप्तिनंदी गुरु की आरती करने चले॥

हो ज्ञान दिवाकर, गुरु धर्म प्रभाकर-2
प्रज्ञायोगी से प्रज्ञा ज्योति पाने चले॥ गुप्तिनंदी...॥1॥
गुरुवर तेरी वाणी, जैसे हो माँ जिनवाणी-2
गुरुवाणी का अमृत दिन-रात मिले॥ गुप्तिनंदी...॥2॥
आरती करके गुरु की, हम अपना ज्ञान बढ़ाये-2
हर भक्त को गुरुवर तुमसे ज्ञान मिले॥ गुप्तिनंदी...॥3॥
ज्ञानी ध्यानी गुरुवर, सन्मार्ग बतायें-2
सर्व विषयों की शिक्षा गुरुवर तुमसे मिले॥ गुप्तिनंदी...॥4॥
अति सुन्दर धर्म तीरथ, गुरुदेव बनायें-2
गुरु धर्म का दीप जलाते चलें॥ गुप्तिनंदी...॥5॥
गुरुवर तेरी सेवा, देती है सच्ची मेवा-2
करें 'आस्था' गुरु पे सुख-शांति मिले॥
गुप्तिनंदी गुरु की आरती करने चले॥ गुप्तिनंदी...॥6॥

***

हवन विधि

हवन के लिये किसी काफी लम्बे चौड़े स्थान में तीन कुण्ड बनावे वे कुण्ड इस प्रकार हों– प्रथम तीर्थकर कुण्ड एक अरत्नि (मुष्टि बंधे हाथ को अरत्नि कहते हैं) लम्बा इतना ही चौड़ा चौकोर हो और इतना ही गहरा हो इसकी तीन कटनी हों पहली 5 अंगुली की ऊंची, चौड़ी, दूसरी 4 अंगुल की, तीसरी 3 अंगुल की हो। इस कुण्ड के दक्षिण की ओर त्रिकोण कुण्ड उसी प्रमाण से लम्बा चौड़ा गहरा हो तथा उत्तर की ओर गोल कुण्ड उतनी ही लम्बाई चौड़ाई गहराई वाला हो प्रत्येक कुण्ड का एक दूसरे से अन्तर चार–चार अंगुल का होना चाहिये। इन कुण्डों के चारों ओर कटनियों पर ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं लिखना चाहिये।

ये कुण्ड कच्ची ईंटों से एक दिन पहले तैयार करा लेना चाहिये और इन्हें अच्छे सुन्दर रंग से रंग देना चाहिये भीतर का भाग पीली या सफेद मिट्टी से पोत देना चाहिये– कुण्डों की तीन कटनियों पर चार–चार पतली खूंटी गाढ़े जिनमें कलावा लपेटा जा सके। कलावा लपेटते समय यह मन्त्र बोलना चाहिये।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचवर्णसूत्रेण त्रीन् वारान् वेष्टयामि।

इस प्रकार एक खूंटी से दूसरी खूंटी और दूसरी से तीसरी चौथी खूंटी तक कलावा लपेटे।

कुण्डों के पास दक्षिण या पश्चिम में एक वेदी लगावे जैसे पाठ के मांडले के पास लगाई थी उसमें जिन प्रतिमा विराजमान करे। वेदी के पास एक चौकी रक्खे जिस पर मङ्गल कलश रक्खा जाय। तथा एक बड़ी मंडली पर एक बड़ा और कुछ छोटे कलश (गिलास) जल से भरे रखकर मंत्र द्वारा जल शुद्ध करें।

जल शुद्धि मंत्र

हाथ में चंदन लेकर कलशो पर छिड़के।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्ममहापद्मतिगिञ्छ-केसरिपुण्डरीकमहापुण्डरीकगंगा-सिन्धुरोहिद्रोहितास्याहरिद्धरिकान्ता-सीतासीतोदानारीनरकान्तासुवणरूप्यकूलारक्तारक्तोदापयोधिशुद्धजल-सुवर्णघटप्रक्षालितन-वरत्नगंधाक्षतपुष्पार्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

इस मंत्र से जल शुद्धि करें।

वेदी के पास जो चौकी है उस पर अक्षत बिछाकर बड़ा मंगल कलश स्थापन करें तब यह लोक और मंत्र पढ़ें।

वेद्या मूले पंचरत्नोपोभं, कंठे लंबान् माल्यमादर्शयुक्त।
माणिक्याभं कांचनं पूगदर्भस्रक्वासोभं सद्घटं स्थापयेद् वै॥

ॐ ह्रीं अर्हं मंगल कलशज्ञथापनं करोमि स्वाहा।

अब चार छोटे कलश कुण्डों पर स्थापन करें तब यह मंत्र पढ़ें-

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकलशान् संस्थापयामि स्वाहा।

फिर कुण्डों पर चार-चार दीपक जलाकर धरें तब यह मंत्र पढ़ें-

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपक संस्थापयामि।

फिर पूजा की सामग्री तथा सामग्री शुद्ध करें तब यह मंत्र पढ़ें-

ॐ ह्रीं पवित्रतरजलेन शुद्धिं करोमि स्वाहा।

फिर डाभ के पूले से हवन की भूमि को झाड़े तब यह मंत्र पढ़ें-

ॐ ह्रीं वायुकुमाराय सर्वविघ्नविनाशाय महीं पूतां कुरु कुरु फट् स्वाहा।

फिर डाभ का पूला जल में भिगोकर पृथ्वी पर छिड़के तब यह मंत्र पढ़ें-

ॐ ह्रीं मेघकुमाराय धरां प्रक्षालय प्रक्षालय अं हं तं पं स्वं झं झं यं क्षः फट् स्वाहा।

फिर यन्त्र का प्रक्षाल करें तब यह मंत्र पढ़ें-

ॐ भूभुर्वः स्वरिह एतद्विघ्नौघवारं यन्त्रमहं परिषिंचयामि।

फिर यन्त्र की पूजा करें। इसके बाद अग्निकुण्ड में संथिये बनावे या ॐ लिखे। पीछे कुण्ड में कपूर और डाभ के पूले से अग्नि स्थापित करें तब यह मन्त्र पढ़ें–

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि सस्थापयामि स्वाहा।

फिर कुण्डों में एक–एक अघ दे। प्रथम चतुष्कोण की पूजा

श्रीतीर्थनाथपरिनिर्वृतिपूज्यकाले, आकत्य वह्निसुरपा मुकुटोल्लसद्धिः।
वह्निव्रजैर्जिनपदेऽहमुदारभक्त्या, देहुस्तदग्निमहमर्चयितुं दधामि॥

ॐ ह्रीं प्रथमें चतुरेस्र तीर्थकरकुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाधिपानां शिवयातिकालेऽ, ग्रीन्द्रोत्तमाङ्गस्फुरदग्रिरेषः।
संस्थाप्य पूज्यः स मयाह्ननीयो, विधानशान्तौ विधिना हुताशः॥

ॐ ह्रीं द्वितीयवृत्ते गणधरकुण्डे आह्वनीयाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री दक्षिणाग्नि परकेवलिस्व शरीरनिर्वाण नुलाग्निदेव।
किरीट सस्फुर्यदसौ मयापि, सस्थाप्य पूज्योहि विधानशान्तयै॥

ॐ ह्रीं त्रिकोणे सामान्यकेवलिकुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
इसके पश्चात् निम्नलिखित मंत्रों की आहूति देनी चाहिये।

(दोहा)

तीर्थंकर निर्वाण में आते अग्निकुमार।
हवन कुण्ड चौकोण का, अर्घ दिया त्रय बार॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुरस्त्रे तीर्थंकर कुण्डे गार्हपत्याग्नये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर प्रभु के मोक्ष में, आते अनल कुमार।
गणधर कुण्ड रचाय वो, सुन्दर वृत्ताकार॥2॥

ॐ ह्रीं श्री वृत्तेद्वितीये गणधर कुण्डे आह्वनीयाग्नये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवली के निर्वाण में, आते पावन देव।
हवन कुण्ड त्रय कोण में, अर्घ चढ़ाय सदैव॥3॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकोणे तृतीय सामान्य केवलि कुण्डे दक्षिणाग्नये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पीठिका मंत्र

(1) ॐ सत्यजाताय नमः (2) ॐ अर्हज्जाताय नमः (3) ॐ परमजाताय नमः (4) ॐ अनुपमजाताय नमः (5) ॐ स्वप्रधानाय नमः (6) ॐ अचलाय नमः (7) ॐ अक्षयाय नमः (8) ॐ अव्याबाधाय नमः (9) ॐ अनंतज्ञानाय नमः (10) ॐ अनंतदर्शनाय नमः (11) ॐ अनंतवीर्याय नमः (12) ॐ अनंतसुखाय नमः (13) ॐ नीरजसे नमः (14) ॐ निर्मलाय नमः (15) ॐ अच्छेद्याय नमः (16) ॐ अमेद्याय नमः(17) ॐ अजराय नमः (18) ॐ अमराय नमः (19) ॐ अप्रमेयाय नमः (20) ॐ अगर्भवासाय नमः (21) ॐ अक्षोभाय नमः (22) ॐ अविलीनाय नमः (23) ॐ परमधनाय नमः (24) ॐ परमकाष्ठायोगरूपाय नमः (25) ॐ लोकाग्रवासिने नमो नमः (26) ॐ परमसिद्धेभ्यो नमो नमः (27) ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमः (28) ॐ केवलिसिद्धेभ्यो नमो नमः (29) ॐ अंतकृत्सिद्धेभ्यो नमो नमः (30) ॐ परंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः (31) ॐ अनादिपरंपरासिद्धेभ्यो नमो नमः (32) ॐ अनाद्यनुपमसिद्धेभ्यो नमो नमः (33) ॐ सम्यग्दृष्टे-2 आसन्न भव्य-2 निर्वाणपूजार्ह अग्नीन्द्राय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

अथ जाति मंत्र

(1) ॐ सत्यजन्मनः शरणं प्रपद्ये (2) ॐ अर्हज्जन्मनः शरणं प्रपद्ये (3) ॐ अर्हन्मातुःशरणं प्रपद्ये (4) ॐ अर्हत्सुतस्य शरणं प्रपद्ये (5) ॐ अनादिगमनस्य शरणं प्रपद्ये (6) ॐ रत्नत्रयस्य शरणं प्रपद्ये (7) ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

निस्तारक मंत्र

(1) ॐ सत्यजाताय स्वाहा (2) ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा (3) ॐ षट्कर्मणे स्वाहा (4) ॐ ग्रामपतये स्वाहा (5) ॐ अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा (6) ॐ स्नातकाय स्वाहा (7) ॐ श्रावकाय स्वाहा (8) ॐ देवब्राह्मणाय स्वाहा (9) ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा (10) ॐ अनुपमाय स्वाहा (11) ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते-निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

ऋषि मंत्र

(1) ॐ सत्यजाताय नमः (2) ॐ अर्हज्जाताय नमः (3) ॐ निर्ग्रन्थाय नमः (4) ॐ वीतरागाय नमः (5) ॐ महाव्रताय नमः (6) ॐ त्रिगुप्ताय नमः (7) ॐ महायोगाय नमः (8) ॐ विविधयोगाय नमः (9) ॐ विविधर्द्धये नमः (10) ॐ अंगधराय नमः (11) ॐ पूर्वधराय नमः (12) ॐ गणधराय नमः (13) ॐ परमर्षिभ्यो नमो नमः (14) ॐ अनुपमजाताय नमो नमः (15) ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

सुरेन्द्र मंत्र

(1) ॐ सत्यजाताय स्वाहा (2) ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा (3) ॐ दिव्यजाताय स्वाहा (4) ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा (5) ॐ नेमिनाथाय स्वाहा (6) ॐ सौधर्माय स्वाहा (7) ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा (8) ॐ अनचराय स्वाहा (9) ॐ परंपरेन्द्राय स्वाहा (10) ॐ अर्हमिन्द्राय स्वाहा (11) परमार्हताय स्वाहा (12) ॐ अनुपमाय स्वाहा (13) ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रनामन् वज्रनामन स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

परम राजादि मंत्र

(1) ॐ सत्यजाताय स्वाहा। (2) ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा (3) ॐ अनुपमेन्द्राय स्वाहा (4) ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा (5) नेमिनाथाय स्वाहा (6) ॐ परमजाताय स्वाहा (7) ॐ परमार्हताय स्वाहा (8) ॐ अनुपमाय स्वाहा (9) ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेजः अग्रतेजः दिशांजन दिशांजन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

अथ परमेष्ठि मंत्र

(1) ॐ सत्यजाताय नमः (2) ॐ अर्हज्जाताय नमः (3) ॐ परमजाताय नमः (4) ॐ परमाहताय नमः (5) ॐ परमरूपाय नमः (6) ॐ परमतेजसे नमः (7) ॐ परमगुणाय नमः (8) ॐ परमस्थानाय नमः (9) ॐ परमयोगिने नमः (10) ॐ परमभाग्याय नमः (11) ॐ परमर्द्धये नमः (12) ॐ परमप्रसादाय नमः (13) ॐ परमकांक्षिताय नमः (14) ॐ परमविजयाय नमः (15) ॐ परमविज्ञानाय नमः (16) ॐ परमदर्शनाय नमः (17) ॐ परमवीर्याय नमः (18) ॐ परमसुखाय नमः (19) ॐ परम सर्वज्ञाय नमः (20) ॐ अर्हते नमः (21) ॐ परमेष्ठिने नमः (22) ॐ परमनेत्रे नमो नमः (23) ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रलोक्यविजय त्रलोक्यविजय धर्ममूर्ते धर्ममूर्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा।

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु। अपमृत्युविनाशनं भवतु। समाधिमरणं भवतु स्वाहा।

धपेः सन्धूपितानेक–कर्मभिर्धू पदायिनः।
अचयामि जिनाधीश–सदागमगुरून गुरून्॥1॥

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनश्रुतगुरूभ्यो नमः धूपम्।

सुरभीकृतदिग्व्रानैं धूपघूमैर्जगतप्रियैः।
याजिम जिनसिद्धेश-सूर्य्युपाध्यायसद्गुरून॥2॥
ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः धूपम्।

मृद्वग्निसंगमसमुज्वलितोरुधूमैः कृष्णागुरुप्रभृतसुन्दरवस्तूधूपैः।
प्रीत्या नटद्रिरिव ताण्डवनृत्यमुच्चैः, कर्मारिदारुदहनं जिनमर्चयामि॥3॥
ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने नमः धूपम्।

गोत्रक्षयसंभवसततसंभव-सद्गुरुलघुतारूपपरम्।
सर्गमसर्गमपीतमनुक्षण-मुज्झितसर्गासर्गभरम्॥
कृष्णागुरुधूपैः सुरभितभूपैर्धूमैः स्पष्टहरिद्र पै-र्यायज्मः
सिद्धं सर्वविशुद्धं बुद्धमरुद्धं गुणरुद्धम्॥4॥
ॐ ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने नमः धूपम्।

हुत्वास्वप्यगुरुभिः सुरभीकृताशै-रग्नौ समुच्छलितसंभृतवृन्दधूपैः।
संधूपयामि चरणं शरणं शरणयं, पुणयं भवभ्रमहरै र्गणिनां मुनीनाम्॥5॥
ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिने नमः धूपम्।

संधूपिताखिलदिशो धनशङ्कयेह, वहिंव्रजं स्वनटनादिव नर्तयद्रिः।
मृद्वब्निसंगतितितागुरुधूपधूमैः, श्रीपाठकं क्रमयुगं वयमाह्वयामः॥6॥
ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिने नमः धूपम्।

स्वमग्नौ विविक्षिप्य दौर्गध्यबंधम् दशाशास्यमुच्चैः करोति त्रिसंध्यम्।
तदुद्दामकृशणगुरुद्रव्यधूपैः, यजे साधुसंघं नटद्रव्यक्तरूपैः॥7॥
ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने नमः धूपम्।

धूपैः संधूपितानेककर्मभिर्धू पदायिनः।
वृषभादिजिनाधीशान्, वर्द्धमानान्तकान्जये॥8॥
ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति जिनेभ्यो नमः धूपम्।

इसके पश्चात् जिस मन्त्र की जितनी जाप की है उसके दशमांश उस मन्त्र की आहुति देनी चाहिये।

शान्तिधारा

आचार्य हाथ में कलश लेकर जल की धारा देता हुआ नीचे लिख पुण्याहवाचन पढ़ें।

ॐ पुण्याहं पुण्यहं। लोकोद्योतनकरा अतीतकालसंजाता निर्वाणसागर-महासाधूविमलप्रभशुद्धामश्रीधरसुदतामलप्रमोद्धराग्निसन्मतिशिव-कुसुमांजलिशिवगणोत्साहज्ञानेश्वरपरमेश्वरविमलेश्वरयशोधरकपष्णमति-ज्ञानमतिशुद्धमतिश्रीद्रकांताश्चेति चतुर्विंशतिभूत-परमदवेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥1॥

ॐ संप्रतिकालश्रेयस्करस्वर्गावतरणजन्माभिषकपरिनिष्क्रमणकेवल-ज्ञाननिर्वाणकल्याणविभूषितमहाभ्युदयाः श्रीवृषमा-तितशंभवाभिनंदन-सुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचंद्रप्रभपुष्पदंतशीतलश्रेयोवासुपूज्यविमलानंतधर्म-शांतिकुथ्वरमल्लि-मुनिसुव्रतनमिने-मिपार्श्ववर्द्धमानाश्चेति वर्तमानचतुर्विंशतिपरदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥2॥

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवाः महापद्मसुरदेवसुप्रभस्वयंप्रभसर्वायुध-जयदेवोदयदेवप्रमारदेवोदङ्कदेवप्रश्न-कीर्तिजयकीर्तिपूर्णष्यत्परम-देवाश्चबुद्धनिःकषायविमलप्रभवहलनिर्मलचित्तगुप्तसमाधिगुप्त-स्वयंभूकंदपप्तियनाथविमलादिव्यागनंत वीर्यश्चेति चतुर्विंशातिभवि वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥3॥

ॐ त्रिकालवतिपरमधर्माभ्युदयाः सीमंधरयुग्मंधरबाहुसुबाहुसंजातक-स्वयंप्रभऋषीश्वरानंवीर्यसूरप्रभ-विशालकीर्तिवज्रधरचंद्राननचंद्रवाहु-भुजंगेश्वरनेमिप्रभवीरसेनममहाभद्रजयदेवाजितवीर्याश्चेति पंचविदेहक्षेत्र-विहरमाणा विंशातिपरमदेवाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥4॥

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवाः वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥5॥

ॐ कोष्ठबीजपादानुसाररिबुद्धिसंभन्नश्रोतृप्रज्ञाश्रवणाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥6॥

ॐ आमर्पक्ष्वेडजल्लविड्डुत्सर्गसर्वौषधिऋद्धयश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥7॥

ॐ जलफलजंघतन्तुपुष्पश्रेणिपत्राग्निशिखाकाशचारणाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥8॥

ॐ आहाररसवदक्षीणमहानसालयसाश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥9॥

ॐ उग्रदीप्ततप्तमहाधोरानुपमतपसश्च वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥10॥

ॐ मनोवौकायबलिनच्श्र वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥11॥

ॐ क्रियाविक्रियाधारिणच्श्र वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥12॥

ॐ मतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनच्श्र वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥13॥

ॐ अंगांगबाह्याज्ञानदिवाकराः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगंबरदेवाच्श्र वः प्रीयन्तां प्रीयन्तां॥ धारा॥14॥

इह वाऽन्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ताः जिनधर्मपरायणा भवंतु॥ धारा॥15॥

दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु॥ धारा॥16॥

मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्रसुहृत्सव जनसंबंधिसहितस्य अमुकस्य... ते धनधान्यैश्वर्यवलद्युतियःप्रमोदोत्सवाः... प्रवर्द्धताम्॥ धारा॥17॥

तुष्टिरस्त। पुष्टिरस्तु। वृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्टसंपत्तिरस्मतु। काममांगल्योत्सवाः सन्तु। पापानि शाम्यंतु। घोराणि शाम्यंतु। पूण्यं वर्द्धतां। धर्मो वर्द्धतां। श्रीर्वर्द्धतां। कुलगोत्रं चाभिवर्धेतां। स्वस्ति भद्रं चास्तु भवीं क्ष्वीं हं संः स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणारविंदेष्वानन्दभक्तिः सदास्तु॥

॥ इति हवन विधान समाप्त॥

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर,

गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे....... प्रान्ते–नगरे...... मासानांमासे......मासे....... पक्षे....... तिथौ........ वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छ्वास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ।।5।।
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये।।6।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक।।1।।
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान।।2।।
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द।।3।।
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान।।4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् पूजा विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय।।

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

धर्मतीर्थ मार्ग, कचनेर अतिशय क्षेत्र के पास, जिला-औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

आर्ष मार्ष संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य
श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति सरिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्रनाम विधान

39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान
40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्ठी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनकनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनकनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)

सी.डी.

1. श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पूजा (सी.डी.)
2. श्री रत्नत्रय आराधना व महाशांति धारा (डी.वी.डी.)
3. श्री नवग्रह शांति चालीसा (सी.डी.)
4. श्री बाहुबली पूजा (सी.डी.)
5. ये नवग्रह शांति विधान है (सी.डी.)
6. गुप्तिनंदी गुणगान (सी.डी.)
7. वात्सल्यमूर्ति माँ राजश्री (डी.वी.डी.)
8. मेरे पारस बाबा (डी.वी.डी,)
9. देहरे के चन्दा बाबा (एम.पी. 3)
10. श्री कुन्थु महिमा (डी.वी.डी.)
11. कनकनंदी गुरुदेव तुम्हारी जय हो (एम.पी.3)
12. गुप्तिनंदी अभिवन्दना (डी.वी.डी.)
13. जयति गुप्तिनंदी डाक्यूमेन्ट्री (डी.वी.डी.) I,II
14. श्री गुप्तिनंदी संघ हिट्स
15. श्री रत्नत्रय जिनार्चना

* * *